"उत्तर भारतीय संगीत में महिला संगीतकारों का योगदान"

(गायन के संदर्भ में,)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय को संगीत में
'डी०फिल०' की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशिका :

डॉ० स्वतन्त्र शर्मा
एम०ए०, डी०लिट०, पी०एच०डी० (संगीत)
अध्यक्षा, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

शोधकर्त्री :

रश्मि मालवीय
एम०ए०, संगीत गायन
संगीत व प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

अक्टूबर २००२

डा0 स्वतंत्र शर्मा
एम0ए0, पी0एच0डी0, डी0 लिट (संगीत)
अध्यक्षा, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रमाण–पत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबंध, 'उत्तर भारतीय संगीत में महिला संगीतकारों का योगदान (गायन के संदर्भ में)' सुश्री रश्मि मालवीय का मौलिक शोध कार्य है जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संगीत में डी0 फिल0 की उपाधि हेतु प्रेषित किया जा रहा है । सम्पूर्ण कार्य मेरे निर्देशन में सम्पादित हुआ है तथा सुश्री रश्मि मालवीय ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार निर्धारित उपस्थिति भी पूर्ण की है ।

Sharma 2.10.2002

02.10.2002

डॉ0 स्वतंत्र शर्मा

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्राक्कथन

आधुनिक युग में उत्तर भारतीय संगीत का क्षेत्र विकास के चरमोत्कर्ष पर है जिसकी पृष्ठ भूमि में पिछली कई शताब्दियों में उत्तर भारतीय संगीत द्वारा अर्जित उपलब्धियों का योगदान है । भारतीय शास्त्रकारों एवं संगीतज्ञों ने क्रियात्मक संगीत के साथ–साथ उसके सैद्धान्तिक पक्ष का विशेष अध्ययन किया है । संगीत की शैलियों में नित्य नये प्रयोग एवं प्राचीन काल से लेकर अब तक लिखी गयी इनकी कृतियाँ भारतीय शास्त्रकारों एवं संगीतज्ञों की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिफल है, जिनकी सम्मुख हम स्वतः ही नतमस्तक हो जाते हैं । निश्चय ही इन शास्त्रकारों एवं संगीतज्ञों में भी महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में अपने विशिष्ट और अहम् भूमिका निभायी है जिसका प्रबल उदाहरण मध्य युग में मीरा के गीत, वाद्य तथा नृत्यमयी रूप में परिलक्षित होता है तो उनके बाद पूर्वाद्ध आधुनिक काल से आज तक भी नारी संगीतज्ञों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है । अनगिनत महिलाओं ने अपना सर्वस्व संगीत को समर्पित करके उसकी साधना की और उसे विकसित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है जिसकी विस्तृत चर्चा मैंने अपने शोध प्रबध में की है । अपने शोध प्रबध को पूर्ण करने के लिए मैंने इलाहाबाद, बनारस, मुम्बई, पूना, दिल्ली तथा कोलकता आदि अनेक स्थानों पर विभिन्न महिला कलाकारों से सम्पर्क स्थापित कर उनसे वार्तालाप करने की चेष्टा की तथा कुछ साधिकाओं का साक्षात्कार किया, कुछ ने अपना विस्तृत विवरण (Bio-Data) मुझे दिया, कुछ कलाकारों के कार्यक्रम में उनसे मुलकात करके उनके विषय में जानकारियाँ प्राप्त की तथा कुछ मासिक संगीत पत्रिकाओं और पुस्तकों से मुझे महिला संगीतज्ञों के योगदानों के विषय में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । तथापि वर्तमान समय की कुछ प्रसिद्ध तथा स्थापित कलाकारों से भेट वार्ता करने की तीव्र इच्छा होते हुए भी मैं नहीं कर सकी क्योंकि शोध प्रबंध लिखते समय आकस्मात् ही मैं परिणय सूत्र में बँध गयी । मैं उन सभी महान एवं उदारचित्त महिला संगीतकारों से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनके योगदानों की चर्चा मैं प्रस्तुत शोध प्रबंध में नहीं कर सकी ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उत्तर भारतीय संगीत में महिला संगीतकारों के योगदानों की विस्तृत विवेचना मैंनें छः अध्यायों के अंतर्गत की है—

प्रथम अध्यायः 'विषय प्रवेश' के अन्तर्गत मैंने, 'नारी संगीत के प्रारम्भ से लेकर आज तक उसकी प्रेरणा स्रोत तथा साधिका बनकर अपना अमूल्य योगदान संगीत को देती आयी है,' यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है । इस परिप्रेक्ष्य में मैंने शिव के क्रोधित होकर ताण्डव करने तथा पार्वती को अपने पति को मनाने के उद्देश्य से लास्य नृत्य करने का विवरण देते हुए 'संगीत में माधुर्य की स्थापना नारी द्वारा हुयी है', यह सिद्ध करने का प्रयास किया है । नारी संगीत की प्रेरणा स्रोत है यह बताते हुए मैंने संगीत में साहित्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जिसमें प्राचीन काल से आज तक की अनगिनत बंदिशों की केन्द्र बिन्दु अथवा नायिका, नारी ही रही है । उन बंदिशों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनके रचनाकारों ने नारी की भावनाओं से प्रभावित होकर या नारी के रूप से प्रभावित होकर रचना की है । इस प्रकार उसकी प्रेरणा स्रोत नारी ही रही है । इसके अतिरिक्त नारी स्वयं अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा एवं साधना के द्वारा सदैव से ही संगीत को समृद्ध करती आ रही है , इस तथ्य को प्रगट करते हुए मैंने प्राचीन काल की अनेक महिला संगीतज्ञों यथा बुद्ध कालीन वासवदत्ता, रानी रूपमती, आम्रपाली से लेकर मीराबाई, तानसेन पुत्री सरस्वती, धन्नाबाई, नूरबाई, नस्तानी, चुन्नाबाई, गोरखीबाई, रहीमनबाई, रसूलनबाई, विद्याधरी, सिद्धेश्वरी देवी, अंजनीबाई मालपेकर, मोघूबाई कुर्डीकर, केसरबाई केरकर, गिरिजा देवी, सविता देवी, किशोरी अमोनकर, प्रभाआत्रे आदि अनेक श्रेष्ठ गायिकाओं का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया है । वर्तमान युग की नवोदित गायिकाओं का जैसे मंजरी असनारे, श्वेता झावेरी, मीता पण्डित, कौशिकी चक्रवर्ती आदि का भी उल्लेख किया है । महिला संगीतज्ञों ने लेखन के क्षेत्र में भी अपनी अमूल्य धरोहरें संगीत समाज को दी है। इस क्षेत्र की संगीतज्ञों का भी संक्षिप्त उल्लेख मैंने विषय प्रवेश के अन्तर्गत करते हुए अपने शोध प्रबंध की उपयोगिता बताने का प्रयास किया है ।

द्वितीय अध्यायः 'उत्तर भारतीय संगीत का प्रादुर्भाव एवं उसकी पृष्ठभूमि' के अन्तर्गत मैंने भारत देश में प्राचीन काल से चली आ रही एक गायन शैली किस प्रकार और किन कारणों से दो भागों में विभाजित हुई तथा उत्तर भारत का संगीत स्वरूप किस प्रकार स्पष्ट हुआ, यह बताने की चेष्टा की है । जब हमारे देश पर यवनों, मुगलों के आक्रमण होने लगे तब से हमारा समाज, उसकी संस्कृति अस्त–व्यस्त होने लगा । लम्बे युद्ध काल का

दुष्प्रभाव तथा विदेशी साम्राज्य स्थापित होने पर उनकी संस्कृति का प्रभाव उन क्षेत्रों पर पड़ा जहाँ विदेशियों का साम्राज्य स्थापित हुआ। दक्षिण भारत इनसे काफी हद तक बचा रहा अतः वहाँ की संस्कृति अपने मूल रूप में ही बनी रही जबकि उत्तर भारत पर विदेशियों का जबरजस्त प्रभाव पड़ा। संगीत पर तो इसका इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के नाम से एक अलग गायन पद्धति का प्रादुर्भाव हो गया। इस संगीत में जहाँ प्राचीन मौलिकता है वहीं विदेशियों के संगीत का मिश्रण भी समाया है। विदेशियों की गायन शैली तथा अपनी गायन शैली का सम्मिश्रण करते हुए धीरे–धीरे इसका विकास होता गया और आज उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का वृहद, स्वतंत्र स्वरूप पूर्णतः स्थापित हो चुका है।

तृतीय अध्याय : 'मीराबाई' श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त मीराबाई जिन्होने सम्पूर्ण जीवन अपने रचित कृष्ण भक्ति के पदों को गाकर तथा नृत्य कर अपने प्रिय श्रीकृष्ण को रिझाते हुए, उन्हीं को समर्पित कर दिया, के उल्लेख एवं उनके सांगीतिक योगदानों की चर्चा के बिना तो मेरा शोध प्रबन्ध अर्थहीन हो जाता। मीराबाई, जिनका गायन सुनने स्वयं सम्राट अकबर और संगीत सम्राट तानसेन गये हों उनके गायन की उत्कृष्टता के विषय में कुछ और कहने को शेष नहीं रह जाता। सारे जीवन व कृष्ण के प्रेम में अपने गीत समर्पित करती रहीं। निश्चय ही उनके गायन में उस युग के लोगों कों संगीत के प्रति श्रद्धान्वत किया होगा। गायिका होने के अतिरिक्त उन्होंने असंख्य गेय पदों की रचना कर संगीत जगत को जो अमूल्य योगदान दिया है उससे समाज कभी भी उरिण नहीं हो सकता। मीरा के भाव पूर्ण पद आज भी सुगीत महफिलों में श्रोताओं के अंर्तआत्मा को प्रभावित करते हैं और आने वाले वर्षों तथा युगों तक करते रहेंगें। मीरा बाई का संगीत पूर्णतः अध्यात्मिक था। उनका संगीत ईश्वर भक्ति का माध्यम था, पवित्र था। वह कला प्रदर्शन की दृष्टि से नहीं, भक्ति भाव से गाती थी। मीराबाई का संगीत, संगीत के किसी वर्ग विशेष यथा ध्रुवपद, ख्याल आदि की कोटि में नहीं आता था। वह तो भक्ति में डूबकर गाती थीं, शास्त्रीयता के बन्धनों में बँधकर नहीं। स्वयं इतना भावों में डूबकर गाती थीं कि प्रत्येक स्वर सुनने वालों को तथष्ट कर देते थे। मीराबाई जैसी दूसरी नहीं यही वजह है कि मैंने 'मीराबाई' का वर्णन स्वतंत्र रूप से किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'उत्तर भारत में प्रचलित प्रमुख गायन शैलियों में विशिष्ट महिला कलाकारों का परिचय एवं सांगीतिक योगदान', इस अध्याय के अन्तर्गत मैनें महिला कलाकरों का परिचय एवं उनके सांगीतिक योगदानों का उल्लेख निम्नलिखित तीन वर्गों में किया है –

(क) **ध्रुवपद गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार** – ध्रुवपद गायन शैली पुरूष प्रधान कही जाती है , कारण है कि यह शैली अत्यधिक श्रम साध्य है । नारी तो स्वभाव से ही कोमल, नाजुक होती है अतः इस क्षेत्र में पुरूषों की ही प्रधानता रही है तथापि इस दुष्कर गायन शैली में भी कुछ महिला कलाकारों ने अपनी प्रतिभा, लगन, आत्मविश्वास तथा कठोर साधना के माध्यम से अपनी विलक्षणता सिद्ध की है और साथ ही यह भी सिद्ध किया है कि यदि नारी कोई संकल्प ले तो लक्ष्य कितना कठिन क्यों न हो, वह उसे प्राप्त करके ही नानती है । इस अध्याय को भी मैंने दो उपवर्गों में विभाजित किया है–

(अ) गायन शैली का परिचय – इसके अन्तर्गत मैंने ध्रुवपद तथा धमार गायन शैलियों का परिचय वर्णित किया है ।

(ब) ध्रुवपद शैली की गायिकाएँ – इस वर्ग में मैंनें असगरी बाई, बाई नार्वेकर तथा डा0 सुमति मुटातकर सरीखी दृढ़ निश्चय तथा लगन शील गायिकाओं का परिचय एवं उनके योगदानों का उल्लेख किया है ।

(ख) ख्याल गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार – इस अध्याय में मैंने सर्वाधिक लोकप्रिय ख्याल गायन शैली के क्षेत्र में महिला गायिकाओं का विवरण तीन उप वर्गों में दिया है –

(अ) गायन शैली का परिचय – ख्याल गायन शैली का उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डाला है ।

(ब) पूर्वाद्ध आधुनिक काल की ख्याल गायिकाएं – इस वर्ग में मैंने सन् 1950–60 से पूर्व की ख्याल गायिकाओं यथा अंजनीबाई मालपेकर, केसरबाई केरकर, मोघूबाई कुर्डीकर आदि के सांगीतिक जीवन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है ।

(स) वर्तमान काल की ख्याल गायिकाएँ – इस वर्ग में मैंने वर्तमान युग की वरिष्ठ गायिकाओं जैसे गंगूबाई हंगल, सुशीला पोहनकर, किशोरी अमोनकर,

आदि के अतिरिक्त युवा गायिकाओं शुभा मुद्‌गल, शान्ति शर्मा, श्रुति सादोलिकर, सुभ्रा गुहा, मीता पण्डित, कौशिकी चक्रवर्ती आदि का भी विवरण प्रस्तुत किया है ।

(ग) उपशास्त्रीय गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार – यह शैली तो पूर्णतः नारी कंठ के उपयुक्त है अतः इस क्षे.त्र में अपने गायन के द्वारा श्रोताओं की हार्दिक सराहना प्राप्त गायिकाओं की सूची सर्वाधिक लम्बी है । इस अध्याय को भी मैंने चार उपवर्गो में बॉटा है –

(अ) गायन शैली का परिचय – ध्रुवपद एवं ख्याल के समान ही उपशास्त्रीय गायन शैलियों जैसे ठुमरी, दादरा, टप्पा आदि का परिचय इस वर्ग में प्रस्तुत किया है ।

(ब) मध्य काल की उपशास्.त्रीय गायिकाएँ – नवाबों की प्रिय 'ठुमरी' गायन शैली के प्रारम्भिक समय की गायिकाओं बड़ी मोती, छोटी मोती, राजेश्वरी देवी, जद्‌दनबाई आदि का परिचय एवं सांगीतिक योगदानों की चर्चा इस वर्ग में की है ।

(स) पूर्वाद्ध आधुनिक काल की उपशास्त्रीय गायिकाएँ – जानकीबाई, हुस्नाबाई, रसूलन देवी, विद्याधरी, बेगम अख्तर आदि गायिकाओं की चर्चा इस वर्ग में की है ।

(द) वर्तमान काल की उपशास्त्रीय गायिकाएँ – इस वर्ग में मैंने वर्तमान युग में सुप्रतिष्ठित एवं वरिष्ठ उपशास्त्रीय गायिकाओं गिरिजा देवी, सविता देवी, शोभागुर्टू, बागेश्वरी देवी, निर्मला अरूण, पूर्णिमा चौधरी के साथ ही नवोदित उपशास्त्रीय गायिकाओं के सांगीतिक जीवन एवं योगदानों की विस्त्त चर्चा की है ।

पंचम अध्यायः 'लेखन के क्षेत्र में महिला संगीतकारों का योगदान', इस अध्याय के अन्तर्गत मैंने उन महिला संगीतज्ञों का परिचय उल्लिखित किया है जिन्होंने अपने तथ्य परक तथा प्रमाणिक लेखन द्वारा शास्त्रीय संगीत को समृद्धशाली बनाने में अपना अक्क्षुण योगदान प्रदान किया है । इस क्षेत्र में डा0 प्रभाअत्रे, डा0 प्रेम लता शर्मा, डा0 मधुबाला सक्सेना,

डा0 स्वतंत्र बाला शर्मा ने अपने ठोस शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर अन्वेषणात्मक ढंग से संगीत क्षेत्र को समृद्ध शली बनाया है ।

षष्टम् अध्यायः 'महिला कलाकारों का संगीत संघर्ष एवं समस्याएँ', इस अध्याय में मैंने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि यूँ तो संगीत साधना किसी के लिए भी सहज नहीं हैं किन्तु नारी के संदर्भ में तो यह और भी अधिक कठिन हो जाती है । नारी जीवन स्वतः ही अनेक समस्याओं से जूझने का नाम है, उस पर यदि संगीत साधना भी जुड़ जाये तो उसके संघर्षों का अन्त ही नहीं होता । इस अध्याय के अन्तर्गत मैंने एक महिला संगीत साधिका के सम्मुख आने वाली विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला है । समाज नें समय–समय पर नारी को अनेक बन्धनों से जकड़ा है जैसे कभी पर्दा प्रथा का प्रचलन तो कभी नारी को मात्र गृहस्थ बनकर संतुष्ट रहने का आदर्श बताकर । स्त्री की सबसे बड़ी समस्या उसका स्त्री होना ही है जिसके चलते उसे हर समय सतर्क रहना पड़ता है । जहाँ पुरूष साधक किसी भी समय या किसी भी स्थान पर गुरू से शिक्षा प्राप्त कर सकने में सक्षम है वहीं नारी के लिए यह असम्भव है । इसके अतिरिक्त स्त्री पर गृहस्थी की तमाम जिम्मेदारियाँ रहती हैं क्योंकि वह किसी की पुत्री, बहन, पत्नि तथा माँ है अतः उसका हर रूप जिम्मेदारियों से भरा है । अपनी सभी जिम्मेदारियों को निभाते हुए, बाधाओं का समाना करते हुए एक महिला के लिए संगीत साधना करना और इस क्षेत्र में कुछ कर दिखाना वास्तव में दुष्कर कार्य है तथापि अनगिनत महिला संगीतकारों ने अपने–अपने अमूल्य योगदानों से संगीत जगत को सदैव से ही समृद्धिशाली बनाया है । इस अध्याय के अन्तर्गत महिला संगीतज्ञों का संघर्ष और समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए मेरा यही उद्देश्य है कि समाज उनके योयगदानों का मूल्य समझे तथा साथ ही वह युवा साधिकाएँ जो इन समस्याओं से घबराकर संगीत साधना अधूरी छोड़ देती हैं, वे इनसे प्रेरणा प्राप्त करें ।

'निष्कर्ष एवं समालोचना', के अन्तर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के विषय –चयन का लक्ष्य एवं शोध प्रबन्ध की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को लिखने की प्रेरणा मुझे अपनी शोध निर्देशिका विदुषी डा0 स्वतन्त्र शर्मा से प्राप्त हुई है । शोध प्रबन्ध का सूक्ष्म मार्ग निर्देशन कर इसे पूर्ण करने में अपना अथक सहायोग देने के साथ ही उन्होंने मुझे अनेक दुर्लभ सांगीतिक पुस्तकें भी

उपलब्ध करायी है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध उनके कुशल मार्ग निर्देशन का परिणाम है जिसके लिए मैं सदैव उनकी हृदय से आभारी हूँ एवं उनके प्रति नतमस्तक हूँ ।

यह भी परम सत्य है कि बिना पारिवारिक सहयोग के यह शोध प्रबन्ध पूर्ण कर पाना असम्भव था जिसके लिए मैं अपने माता–पिता तथा भाइयों के प्रति हमेशा ऋणी रहूँगी ।

मैं उन सभी महिला कलाकारों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय प्रदान कर अपने विषय में मुझे विस्तृत जानकारी प्रदान की जो मेरे शोध प्रबन्ध की केन्द्र बिन्दु है ।

इलाहाबाद के आदरणीय संगीत प्रेमी श्री राजीव दवे जी के प्रति भी मैं हार्दिक आभारी हूँ जिनके सहयोग से मैं कई कलाकारों से मिल सकी तथा अनेक कलाकारों के विषय में उन्होनें मुझे जानकारी प्रदान की । इसके अतिरिक्त मैं अपने सभी गुरूजनों, मित्रों एवं परिजनों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होनें प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मेरा शोध प्रबन्ध पूर्ण करने में अपना सहयोग प्रदान किया । शोध प्रबन्ध की संरचना में मैंने कुछ संगीत की मासिक पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का भी सहयोग लिया है, जिसके लिए मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रगट करती हूँ ।

रश्मि मालवीय

सुश्री रश्मि मालवीय

शोधकर्त्री

संगीत व प्रदर्शन कला विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

अध्याय – प्रथम

विषय–प्रवेश

विषय प्रवेश

सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक जीवन के प्रत्येक पहलुओं के विकास मे स्त्री तथा पुरूष दोनों का समान योगदान रहा है । वह चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, आर्थिक हो अथवा सांस्कृतिक । सभी क्षेत्रों के विकास में नारी और पुरूष दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है । यही स्थिति हमारे संगीत में भी है । आध यात्मिक परिवेश में जब शिव ने क्रोधित होकर प्रलयकारी 'ताण्डव नृत्य' किया, तो उन्हें शान्त करने के उद्देश्य से पार्वती ने 'लास्य–नृत्य' किया था । संगीत में माधुर्य की स्थापना नारी ने ही की। उत्तर भरतीय संगीत के विकास में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है । संगीत में गायन प्रमुख है और गायन में स्वर तथा लय के साथ शब्दों का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। जब हम शब्दों पर ध्यान देते हैं तो देखते हैं कि अधिकांश गीतों नें नारी को केन्द्र बिन्दु मान कर उसकी भावनाएँ या उसे लक्ष्य करके ही गीत लिखे जाते हैं जैसे राग गुर्जरी तोड़ी की ही इस प्रसिद्ध बंदिश को देखिये–

स्थाई– चलो सखी सौतन के घर जइहै
मान घटे तो का घटि जइहै
पी के दरशन पइहै
सखी सौतन————————।

अन्तरा– ये जोबन अंजुली को पानी
समय गये पछतइहै
सदारंग' प्रभु को जाय मनाये
मन की तपन बुझैइहै
सखी सौतन———————।

इसमें नारी अपने हृदय की बात सखी से कहती हुई दर्शाई गई है । इसी प्रकार बिहाग की अत्यन्त लोकप्रिय बंदिश–

'लट उलझी सुलझा जा बालम
हॉथन मेंहदी लगी मोरे बालम',

में भी नारी ही अपने पति से आग्रह करती हुई वर्णित की गई है । तात्पर्य यह है कि गायन के महत्वपूर्ण पक्ष 'शब्द' के क्षेत्र में महिला ही प्रबल दिखती है । अधिकतर गीत के प्रकारों में श्रृंगार रस में नारी की भावनाओं का ही चित्रण होता है । ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, ग़ज़ल, कजरी, चैती आदि अनेक लोकगीतों में नारी की ही भावनाओं का चित्रण हुआ है जबकि इन गीत प्रकारों के रचयिता अधिकांशतः पुरूष ही रहे हैं । इस प्रकार संगीत के क्षेत्र में इस तथ्य को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि पुरूष की प्रेरणा स्रोत नारी ही रही है । नारी सुर, नर, मुनि को स्त्री, माता, पत्नि, प्रेयसी, गुरू, शिष्या आदि के रूप में सदैव से ही प्रेरित करती आई है । माँ सरस्वती ज्ञान की आदि स्रोत हैं जिनका स्मरण देवता भी करते हैं । संगीत की अधिष्ठात्री वीणावादिनी सरस्वती देवी ने मुनि, नारद द्वारा तीनों लोकों में संगीत के ज्ञान का प्रसार, करवाया । संगीत से सम्बन्धित कार्यक्रम का प्रारम्भ माँ सरस्वती के स्मरण एवं स्तुति के द्वारा किया जाता है यह तथ्य भी 'संगीत के क्षेत्र में नारी प्रेरक शक्ति है,' को ही सिद्ध करता है ।

गायन में ' स्वर पक्ष ' पर विचार करें तो भी नारी कंठ से निकला मधुर भावुक स्वर गायन को अलग ही सौन्दर्य प्रदान करता है । सुप्रसिद्ध गायिका किशोरी अमोनकर, सविता देवी और अन्य अनेक गायिकाएँ अपने मर्मस्पर्शी स्वर लगाव से विश्व प्रसिद्ध हुई हैं ।

लय और ताल के विषय में माना जाता है कि यह लड़न्त के विषय हैं जिसमें पुरूष अधिक कुशल होते हैं किन्तु नाजुक और कोमल नारियों ने इस पक्ष में भी पूर्ण नियन्त्रण सिद्ध किया है । ध्रुपद–धमार जैसी लय–ताल प्रधान गायन शैली में सुमति मुटाटकर, मधुभट्ट तैलंग आदि गायिकाएं जिस कुशलता से गायन करती हैं वह सिद्ध करता है कि इस पक्ष में भी महिला संगीतज्ञ किसी से कम नहीं हैं ।

रस नौ मानें गये हैं संगीत में सभी रसों का समावेश मुख्यतः तीन रसों में ही कर लिया गया है– करूण, वीर तथा श्रृंगार । यूँ तो सभी रसों में नारी अपना अस्तित्व रखती है किन्तु रसराज ' श्रृंगार ' की तो आधारशिला ही नारी है । संगीत में भक्ति रस और श्रृंगार रस ही अधिक उभर कर आते हैं । भक्ति संगीत

में ' मीरा ' से बड़ा और दूसरा उदाहरण भला क्या हो सकता है । वात्सल्य रस में ' लोरी ' के रूप में माता अपने बच्चे को संगीत से प्रारम्भिक परिचय कराती है । सूफी परम्परा के संगीत में भी प्रेरक शक्ति नारी ही रही है, क्योंकि सूफी अपनी ईश्वरीय कल्पना नारी के रूप में ही करते हैं । मध्य काल से आज तक शास्त्रीय संगीत की बंदिशों की रचना घरानेदार उस्तादों ने अथवा पण्डितों ने की है किन्तु उसके पीछे भी प्रेरक शक्ति नारी ही रही है– जिससे उस्ताद और पण्डितों ने नारी की भावनाओं को प्रगट करतें हुए रचनाओं में अपना तखल्लुस अर्थात् उपनाम ' प्रेम –प्रिया ', ' प्राण–प्रिया ', ' मनहर ' आदि जोड़ दिया ।

साधारणतयः व्यवहार में भी नारी के स्वाभाविक गुण में भी संगीत का अपना महत्व है । माँ बच्चे को खिलाते , सुलाते समय लोरी या अन्य तरह की संगीत ध्वनियाँ करती रहती है । सामाजिक कार्यकलापों में अधिकांश क्षेत्रों में नारी संगीत का अपना महत्व है । विवाह के गीत, विदाई गीत, देवी गीत, या विभिन्न संस्कार गीत, आदि अधिकांश लोकगीतों में नारी का महत्वपूर्ण सहयोग है ।

प्राचीन काल से नारियाँ संगीत से आबद्ध रही हैं । बुद्धकालीन उज्जैनी के महाराजा चन्द्रप्रद्योत महासेन की सुपुत्री ' वासवदत्ता ' ने उदयन से वीणा वादन सीखकर संगीत को समृद्धि प्रदान की थी । मालवा के सुल्तान बाजबहादुर (सन् 1555) की प्रेमिका ' रानी रूपमती ' संगीत में निष्णात् थी । तुरमती उर्फ ' नूरमुनि ख़ातून ' ईरानी एवं भारतीय गायकों की समिति की अध्यक्षा थी । मगध राज की ' कामिनी ' विद्याव्यसिनी तथा कलापारखी थी और वीणा वादन में कुशल थी । ऐसा वर्णन मिलता है कि उन्होंने विदग्धमति से देवराज इन्द्र के गुरू बृहस्पति और संगीत निपुण तुंबरू एवं नारद को भी लजा दिया था । वैशाली की नगर वधू ' आम्रपाली ' तो संगीत की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी । कोशल राजकुमारी के विवाह में सोलह हजार नर्तकियों के द्वारा विभिन्न लयकारियों पर नृत्य आयोजित किया गया था । बुद्धकालीन गणिकाएं संगीत शिक्षा में प्रवीण थी । प्राचीन सामगान में ऋषि–पत्नियाँ वीणा बजाती थीं और ' पिच्छोंरा ' के नाम से प्रसिद्ध थी । तानसेन की पुत्री वीणावादन में सिद्धस्थ थीं । कृष्ण भक्त मीरा

ने तो संगीत जगत को अपने गेय काव्य के रूप में अक्ष्क्षुण भंडार प्रदान किया है । वह एक कुशल गायिका एवं नर्तकी भी थी । उन्होंने गायन वादन और नृत्य के माध्यम से कृष्ण की अनन्य भक्ति की और उन्हीं में विलीन हो गई । तानसेन पुत्री सरस्वती ने अपने पुत्र तथा शिष्यों को संगीत शिक्षा प्रदान कर उच्च स्तरीय संगीतज्ञ बनाया । मीरा भक्त थी और उनकी भक्ति का माध्यम काव्य रचना, गान और गाते–गातें झूमते हुए उठकर नृत्य करना था । मीरा के रचित गेय पदों को आज भी कलाकार आनन्द विभोर होकर गाते हैं । जिस समय पण्डित ओंकार नाथ ठाकुर' जोगी मत जा ' गाते थे तो श्रोताओं के ऑखों में ऑसू उमड़ पडते थे । डी0 वी0 पलुस्कर के गाये गीत ' चलो मन गंगा यमुना तीर ' और ' पायो जी मैंने राम रतन धन पायों ', आज भी अमर हैं । वास्तव में संगीत जगत को मीराबाई का अतुलनीय योगदान हैं । वह एक कुशल संगीतज्ञ थीं,इस तथ्य का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इतिहास में, तानसेन एवं अकबर इनका गायन सुनने गये थे, इस कथा का उल्लेख प्राप्त होता है । मीरा के अनेक पद रागों एवं तालों में निबद्ध मिलते हैं ।

महिला संगीतज्ञों का उत्तर भारतीय संगीत जगत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है इस तथ्य का प्रमाण इस बात से मिलता है कि अनेक महिला कलाकार वर्षो पूर्व स्वर्गीय हो चुकी तथापि आज भी उनके अलौकिक गायन की स्मृति श्रोताओं को झकझोरती रहती है यथा– सदा रंग के काल के संगीत के विस्तृत चर्चा हमें दरगाह कुली की लिखी पुस्तक में मिलती है । इस पुस्तक में नवाब साहब के सुने और देखे हुए दृश्यों का वर्णन है, अतः यह विश्वसनीय है । उस काल की तवायफों में सर्वश्रेष्ठ उन्होनें ' धन्नाबाई ' को बताया है । वह सर्वश्रेष्ठ गायिका ही नहीं अपितु शास्त्रज्ञा भी थी । वह नयें–नये रागों की रचना करती थी । उनका स्वर अत्यन्त मधुर तथा गायन की प्रस्तुति मनोहारी थी । नवाब दरगाह कुली खॉ ने उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है । धन्ना बाई सदारंग की शिष्या थी । ' पन्ना बाई ' भी सदारंग की शिष्या एवं अत्तयन्त कुशल गायिका थी । इनका बढ़त व तानों पर समान अधिकार था और गायन सुरीला तथा अत्यन्त प्रभावशाली था ।

' नूरबाई ' तीसरी श्रेष्ठ गायिका थी जिनकी चर्चा नवाब दरगाह कुली खॉ ने की है और प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने भी उन्हें अपने उपन्यास में नायिका के रूप में वर्णित किया है । नूरबाई उस काल के मुगल दरबार की सर्वश्रेष्ठ रूपसी थी । यह भी सदारंग की शिष्या थी तथा अपना अंतिम समय इन्होने वृन्दावन में कीर्तन करके व्यतीत किया । उसी काल में ' सुजान ' नामक गायिका भी अत्यधिक प्रसिद्ध थी । घनानन्द के काव्य–सृजन की प्रेरणा स्रोत सुजान ही थी । 'मस्तानी' महाराज छत्रसाल की पोषिता मुस्लिम महिला की पुत्री थी जिन्हे माता से रूप और सांगीतिक प्रवृत्ति तथा छत्रसाल रूपी पिता से स्वाभिमान और वीरत्व प्राप्त था । उनके रूप और गुण की प्रसिद्ध थी । एक अवसर पर मस्तानी को प्रथम बार पुरूषों के सम्मुख अपनी कला प्रदर्शन का अवसर मिला । अपनी कला से मस्तानी ने सभी को आत्मविभोर कर दिया । पेशवा के महल में अपनी संगीत कला से और युद्ध क्षेत्र में तलवार के जोर से मस्तानी ने इतिहास में अपना स्थान बनाया । ' चुन्ना ' भी एक श्रेष्ठ गायिका थी जिन्होने अल्पायु होने पर भी संगीत जगत में अपना नाम स्थापित किया ।

उ0 बहराम खॉ की शिष्या ' गोरखी बाई ' संगीत –जगत की विलक्षण गायिका रही हैं । पंजाब में अन्होने दो लड़कों को संगीत शिक्षा दी तथा बरसों तक अपने सामने उनसे कठोर साधना करवाई । वे दानों कालान्तर में भारत के श्रेष्ठ कलाकार ' उ0 अलीबख्श ' और ' उ0 फतहअली खॉ ' के नाम से प्रसिद्ध हुए और संगीत जगत में गायन की एक विशिष्ट शैली प्रस्तुत की जो 'पंजाब घराने' की शैली कहलाई । बनारस की एक संगीत साधिका पहलवान महिला ने भी बड़ी लगने से अपने संगीत कोष समृद्ध किया था । उनका मिजाज व रहन–सहन अटपटा अवश्य था किन्तु वह एक श्रेष्ठ गायिका थीं । सन् 1860 के लगभग रीवॉ के महाराजा विश्वनाथ सिंह उन्हे पहलवानी और संगीत साधना का प्रचुर अवसर मिला । महाराज की कृपा से सेनिए के उ0 प्यार खॉ व मृदंग–केशरी कुदऊ जी जैसे संगीत महारथियों का सनिध्य और उनकी श्रेष्ठ कला को सुनकर मनन करने का अवसर मिला । रीवॉ में ही बड़े मुहम्मद खॉ से गंडा बंधवाकर, उनकी तथा

रीवॉ महाराज की मृत्यु तक वहीं उन साधिका ने संगीत–साधना की । बाद में बनारस वापस आ गई । किन्तु खेद है कि उन महान गायिका की सनक अथवा कठोरता के कारण कोई भी उनका शियत्व ग्रहण नहीं कर सका । और वह अपना सांगीतिक भण्डार अपने साथ लिये हुए ही दिवंगत हो गई ।

उन्नसवीं शताब्दी के मध्य में एक और श्रेष्ठ गायिका 'रहीमन बाई' हुई । उन्होनें संगीत की शिक्षा श्रेष्ठ उस्तादों से ग्रहण की थी । उनके संगीत की देश में प्रसिद्धि थी । वह इलाहाबाद के रईस रामसहाय जी के यहॉ नौकर थीं । रामसहाय जी नें उन्हें शिक्षा भी दी थी । 'मआदनुल मौसीकी' में रहीमनबाई की प्रशंसा मुक्त कंठ से की गइ है । उनकी उत्कृष्ट गायन शैली का अनुमान मुहम्मद करमइमामू की लिखी इस बात से लगाया जा सकता है कि (बनारस के कोई सारंगी–वादक रहीमन बाई के साथ संगत करते थे), "रहीमन बाई की संगति करने से ही वे सारंगी–वादक श्रेष्ठ संगीतकार बन गये और उनके प्रभाव से ही बनारस में श्रेष्ठ सारंगीवादक पैदा होते गये ।" उन्नीसवीं शताब्दी तक अधिकांश महिला गायिकाऍ ध्रुपद गायन से ही अपना कार्यक्रम प्रारम्भ करती थीं । शाहआलम के काल की पोथी 'नादिरातेशाही' में कवित्त (ध्रुपद) गाकर नृत्य करनें का वर्णन मिलता है । गायिकाऍ ध्रुपद गायकी में कुशल होती थीं । यह ख्याल गायकी का प्रारम्भिक युग था । गायिकाऍ धीरे–धीरे उसे भी अपना रहीं थी । उपरोक्त वर्णित सभी गायिकाएं ध्रुपद तथा ख्याल दोनो ही शैलियों में पारंगत थीं । उत्तरभारत ठुमरी भी गाती थीं ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक जो श्रेष्ठ गायिकाएं हुई उनमें सर्वप्रथम नाम 'सरस्वती बाई' का आता है । सरस्वती बाई बनारस की निवासिनी थी । बचपन से ही बनारस के श्रेष्ठ कलाकारों से शिक्षा प्राप्त की थीं । बाद में हस्सू खॉ के शिष्य पं0 सखाराम से भी संगीत शिक्षा प्राप्त की थी । जानकी प्रसाद के वंशजों से नृत्य की तालीम ली । स्वर, लय, ताल पर उनकी असाधारण पकड़ थी । सरस्वती बाई अपने समय में बिहार और उत्तर

प्रदेश में बहुत ख्याति प्राप्त की । उन्होनें संगीत के उद्‌भट विद्वान पं0 भोला नाथ पाठक से धमार गायिकी का प्रशिक्षण भी लिया था । काशी की ही 'बडी मैनी' की गायिकी से प्रभावित होकर महाराज बनारस ने उन्हें राज गायिका नियुक्त किया था । आजमगढ़ जिले के किसी ग्राम के संगीतोंपजीवी परिवार में जन्मी 'गौहर बाई' ने भी विशिष ख्याति अर्जित की थी । बनारस घराने के कत्थक गुणियों की एक शाखा आजमगढ में रहती थीं । जन्म जात प्रतिभा के धनी गौहर की प्रारम्भिक शिक्षा उन्हीं से हुई । किशोरावस्था लांघते ही वह बनारस आ गई और बनारस के श्रेष्ठ विद्वानों से तालीम प्राप्त करने लगी । रूप और कला दोनों से ही उन्होनें प्रसिद्ध पायी । वह अपने समय की सर्वाधिक पारिश्रमिक लेनी वाली गायिका थीं । बाद में वह कलकत्ता चली गयीं । वह भारत की बारह बोलियों में शुद्ध उच्चारण के साथ गाती थीं । कलाकार होने के साथ-साथ वह वाग्येकार भी थीं । कई बंदिशों की रचना भी की थीं- 'गौहर प्यरी तेरी पइयॉ परत हूँ', आजा सवरिया तोहे गरवा लगा लूँ', कहती हुई वो कलकत्ते में ही दिवंगत हुई ।

बनारसी बोल-बनाव की ठुमरी के जन्मदाताओं ने दो नाम आते हैं - जगदीप मिश्र और भइया जी गणपतराव । भइया जी के शिष्य मौजुद्‌दीन खॉ बनारसी ठुमरी के बादशाह तथा कठोर शिक्षक थे । 'बड़ी मोती बाई' इन्हीं की श्रेष्ठतम् शिष्या थी । ठुमरी के बोल-बनाव का काम इनकी गायिकी की प्रमुख विशेषता थी जिसके लिए देश भर के रईस-रजवाड़ों में बड़ी मोती बाई की धूम थीं । मौजुद्‌दीन खॉ की ही शिष्या और पं0 मोतीलाल नेहरू की पोषिता 'जददन बाई' भी अपने समय की कुशल तथा लोकप्रिय गायिका थी ।

'रसूलन बाई' बनारस की प्रसिद्ध गायिका थीं जो ठुमरी, टप्पा तथा दादरा गायन में दक्ष थीं । उनकी आवाज मर्दानी थी और वह कठिन से कठिन 'हरकत' गले से निकालने में सक्षम थी । सुप्रसिद्ध गायिका 'विद्याधरी' का जन्म बनारस के भदोई नामक स्थान पर हुआ था । इनका कण्ठ अत्यन्त सुरीला तथा लय-

ताल पर समान अधिकार था । इनका गायन सुनकर लोग मुग्ध हो जाते थे । तीन सप्तक की तान इतनी सहजता से लेती थीं कि जिसकी याद कर श्रोता अभी भी रोमांचित हो जाते हैं । इनकी शिक्षा पं0 दरगाही मिश्र और पं0 मिठाई लाल से हुई थी । यह आठ भाषाओं में गाती थीं । जयदेव की अष्टपदी के छन्दों को विभिन्न रागों में बॉधकर जब वह सहज भाव से गाती थीं, तब प्राचीन काल की गायिकी की कल्पना स्पष्ट हो आती थी । 104 वर्ष की आयु में विद्याधरी दिल्ली में स्वर्गवासी हो गयीं । बनारस की श्रीमती 'सिद्धेश्वरी देवी' जहॉ ख्याल गायन में कुशल थीं वहीं टप्पा, ठुमरी, पूर्वी, चैती आदि उपशास्त्रीय गायन में निष्णॉत थीं । उन्होनें प्रथम गुरूमंत्र अपनी मौसी राजेश्वरी देवी से लिया । तदोपरान्त प्रसिद्ध सारंगी वादक पं0 सियाजी से संगीत की बारीकियो की शिक्षा ग्रहण की । बाद में संगीत की महान गायक पं0 बडे रामदास जी ने भी इनकी कला को परवान चढ़ाया ।

गोवा में उत्पन्न बम्बई की प्रसिद्ध गायिका थीं, 'श्रीमती केसरबाई केरकर' । इन्होनें कई संगीत विद्वानों से शिक्षा ग्रहण की किन्तु संतुष्टि नहीं मिली । इनकी जिद्द थी, उ0 अल्लादिया खॉ साहब की गायिकी आत्मसात करने की । किन्तु वह उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिए राजी न थे । बडी मिन्नतों तथा प्रयत्नों के बाद उन्होनें केसरबाई को अपनी शिष्या स्वीकार किया और फिर प्रतिदिन नौ घण्टे की कड़ी तालीम का सिलसिला वर्षों तक चला । केसरबाई सम्पूर्ण भारत की प्रिय तथा सम्मानित कलाकार हुई । उ0 अल्लादिया खॉ की ही दूसरी श्रेष्ठ शिष्या 'मोघूबाई कुर्डीकर' भी न सिर्फ दक्ष गायिका थीं अपितु शास्त्र पक्ष में भी गहरी पैठ रखने के कारण संगीत जगत में बहुनाम अर्जित किया । विश्व प्रसिद्ध गायिका श्रीमती किशोरी अमोनकर की माता मोहूबाई ने अनेक शिष्य–शिष्याओं को तालीम प्रदान करके श्रेष्ठ कलाकार बनाया ।

किराना घराने की श्रेष्ठ गायिका 'हीराबाई बड़ौदकर' की तो प्रत्येक संगीत श्रोता तारीफ करते हैं । उनके गायन में स्वरों का अनोखा प्रवाह, बुनाव–सुन्दर

बेलबूटेदार जाल के सदृश्य मन मोह लेता था । गीत के शब्दों का शुद्ध उच्चारण लयकारी और तैयारी ऐसे सहज भाव से प्रदर्शित करतीं थीं कि श्रोता मुग्ध हो जाते थे । वर्तमान समय की सुप्रसिद्ध एवं वरिष्ठ संगीतज्ञ प्रभा अत्रे उनकी प्रमुख शिष्या हैं ।

पं0 भातखण्डे जी की 'सोनचिरैया' – 'श्रीमती अंजनीबाई मालपेकर' भी एक उत्कृष्ट कलाकार थीं इनकी शिक्षा पं0 भातखण्डे जी की देखरेख में मुरादाबाद वाले नज़ीर खॉ साहब से हुई । सरगम, लक्षण गीत फिर बंदिश, भातखण्डे जी की शिक्षा शैली की प्रथम नमूना थीं – अंजनीबाई । राग के स्वर विस्तार का जो स्वरूप अंजनीबाई का था, वह अनोखा था ।

'ताराबाई शिरोडकर ' ने भी संगीत क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पं0 रामकृष्ण बुआ वझे से शुरू हुई तत्पश्चात् भास्कर बुआ बखले तथा कलावन्त नत्थन खॉ से तालीम हासिल की । रियाज और मेहनत से ताराबाई ने संगीत का श्रेष्ठ ज्ञान अर्जित की । वह इन्दौर नरेश के दरबार में गायिका रहीं थीं ।

सन् 1905 में जन्मी सुब्बराव नाडकर्णी की पुत्री बाई नार्वेकर भी ध्रुवपद–धमार आदि की प्रसिद्ध गायिका थी । माता सुभद्रादेवी के अलावा बाई नार्वेकर ने स्व0 बालकृष्ण बुआ, मोहम्मद खॉ, नत्थन खॉ, शालिगरीाम बुआ तथा श्रीविलायत खॉ से भी संगीत ग्रहण किया । भारत के प्रमुख शहरों में अपने सफल कार्यक्रम प्रस्तुत करके वे अपनी लोकप्रियता बनाने में सफल रहीं ।

मराठा कुल की लक्ष्मीबाई बड़ौदकर ख्याल और ठुमरी गायन की अद्वितीय गायिका थीं । संगीत की शिक्षा खॉ साहब हैदर खॉ से प्राप्त की । बडौदा दरबार की प्रसिद्ध गायिका थीं । एच0 एम0 वी0 तथा अन्य कम्पनियों से उनके गायन के पचासों रिकार्ड प्रकाशित हऐ । श्रीमती बड़ौदकर की तानें दानेंदार, आवाज अत्यन्त ही सुरीली एवं मधुर तथा एक विशेष प्रकार के कंपन से युक्त थी ।

महिला गायिकाओं में 'बेगम अख्तर' का नाम अमर है । प्रथम

गुरू–ज्ञान उ0 अतामुहम्मद खाँ ने प्रदान किया बाद में उ0 वहीद खाँ ने भी इन्हें तालीम प्रदान की । ग़ज़ल –साम्राज्ञी बेगम अख्तर के गाने का अंदाज अनूठा था । इनके कई रिकार्ड बने जो आज भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं । मरणोपरान्त इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित भी किया गया ।

इस युग की उपर्युक्त महिला संगीतज्ञों के अतिरिक्त अनेक ऐसी भी गायिकाएँ हुई जो परिस्थिति विशेष के कारण प्रकाश में नहीं आ पाई ।

प्राचीन काल से आज तक संगीत में अनेक ऐसी कलाकार गायिकाएँ हुई हैं, जिन्होंने संगीत जगत् में ऐसे मानदण्ड स्थापित किये हैं, जो अविस्मरणीय रहेंगें । वर्तमान समय की प्रतिष्ठित गायिकाओं में, 'गंगूबाई हंगल', जो कि किराना घराने की स्थापित गायिका है, को स्थान अग्रणी है । इनकी आवाज में गूँज है, गमकदार तानों की यह लाजवाब गायिका हैं । महिला होने के बावजूद प्रतिदिपन ग्यारह मील यात्रा कर कुँदगोल-जाकर आप संगीत सीखती थीं तभी तो 'स्वर–शिरोमणि', 'पद्मभूषण' और 'संगीत–नाटक अकादमी' पुरस्कार एवं सम्मान से नवाज़ी गई ।

काशी की 'गिरिजा देवी' वर्तमान समय में उपशास्त्रीय संगीत के साम्राज्ञी मानी जाती हैं । यह ख्याल, ठुमरी के साथ–साथ कजरी, चैती होरी आदि लोक गीतों को भी पूरी भावप्रवणता से गानें में सिद्धहस्त हैं ।

सुप्रसिद्ध ख्याल गायिका 'किशोरी अमोणकर' से आज कौन अपरिचित है । यह घरानों के बंधनों को पसंद नहीं करतीं तथा प्रगतिशील धाराओं को अपनाती है। । संगीत में नए –नए प्रयोग इनकी विशेषता है।

'श्रीमती लक्ष्मीशंकर' नृत्य एवं गायन दोनों ही विधाओं की ज्ञाता एवं लोकप्रिय गायिका हैं । इसी प्रकार किराना शैली की गायिका 'प्रभाअत्रे' का नाम भी संगीत जगत में पर्याप्त लोकप्रिय है। यह संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्र दोनों ही पक्षों में अपनी कुशलता, बुद्धिमत्ता एवं प्रतिभा का परिचय देती है ।

बेलगाँव की 'शोभागुर्टू' की गायन शैली भी लाजवाब है । इनके पास ठुमरी–दादरा का प्राचीन तथा प्रचुर भंडार है । ग़ज़ल गायन में निपुण है । पूर्वी शैली में बनारसी रंग की ठुमरी पिरोने में इन्हें महारथ हॉसिल है ।

सिद्धेश्वरी देवी की सुपुत्री 'सविता देवी' ने उपशास्त्रीय गायन में अपना विलक्षण स्थान बनाया है । यह सितार वादन मे भी कुशल हैं किन्तु कलाकार के तौर पर इन्होंने गायन को ही प्रमुखता दी तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है ।

बनारस निवासी 'श्रीमती निर्मला अरूण' अपने अनोखे गायन–प्रस्तुतिकरण तथा सम्यक भाव–सम्प्रेषण के लिये संगीत जगत में विख्यात हैं । ख्याल–ठुमरी ,दादर गजल तथा भजन गायकी में 'श्रीमती निर्मला अरूण' विशिष्ट स्थान रखती हैं ।

उपरोक्त के परिप्रेक्ष्य में मैनें यही स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि संगीत में महिलाओं का योगदान एवं स्थान महत्वपूर्ण रहा है और अनन्त काल से आज तक संगीत में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनेक महिलाओं के नाम सामने आते है । विशेष रूप से आज , वर्तमान युग में, संगीत जगज में महिलाओं की सशक्त भागीदारी बढ़ी हैं । नारी सुलभ कोमलता जो संगीत की पहली आवश्यकता है, नारी कंठ से ही पुष्ट होती है । इतिहास साक्षी है कि प्राचीन ग्रन्थकारों नें भी रागों की कल्पना नारी सुलभ रूप में करके रागिनी और पुत्रवधुएँ जैसे वर्गीकरणों को मान्यता दी है । शास्त्रात्मक नियम के साथ–साथ सच्चा संगीत वहीं है जो कर्ण प्रिय हो और हृदय को छूने की शक्ति के साथ मन को सुख भी दे । निश्चित रूप से नारी कंठ की मधुरता एवं सरसता में यह सभी गुण विद्यमान होते हैं । जिनको उदाहरण के रूप में हम किशोरी अमोनकर, परवीन सुल्ताना, निर्मला देवी, शोभा गुर्टू, अश्विनी देशपांडे, शुभ्रा गुहा, श्रुति सादोलिकर, शान्तिशर्मा आदि अनेक गयिकाओं की मधुर गायकी से सिद्ध कर दिया है । महिला संगीतज्ञों ने अपने मधुर गायन से समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है । इसी परम्परा में युवा उभरती हुई महिला कलाकरों में श्वेता झावेरी, मीता पण्डित, मंजीर असनारे, सुनन्दा शर्मा, कौशिकी चक्रवर्ती इत्यादि अनेक युवा गायिकाएँ अपनी सशक्त उपस्थिति संगीत जगत में दर्ज करा रही है । मंच हो, आकाशवांणी अथवा दूरदर्शन हो या कैसेट/सी0डी0 हो, हर जगह महिला गायिकाएँ अधिक से अधिक संख्या में सामने आ रही है । गायन की सभी शैलियों में इन्होनें महारथ

हॉसिल की है । ध्रुपद जैसी कठिन, गम्भीर और दमदार गायकी में सुमति मुटाटकर नें अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है और आज भी जयपुर की मधुभट्ट तैलंग तथा अन्य भी कई गायिकाएँ ध्रुपद गायकी को सँवारने में संलग्न है । ख्याल व ठुमरी गायकी की महिला कलाकारों का वर्णन तो मैं इसी अध्याय में कर चुकी हूँ । अभी कुछ दिनों पूर्व ही मुझे इलाहाबाद प्रयाग संगीत समिति (साउथ मलाका शाखा) के प्रेक्षागृह में सुप्रसिद्ध गिरिजादेवी की सुयोग्य शिष्या सुनन्दा शर्मा का गायन सुनने का अवसर मिला । अपने कार्यक्रम का समापन उन्होंने टप्पा गायन से किया, जिसे सुनकर प्रेक्षागृह में अनन्त तालियों की गडगड़ाहट से गूँज उठा । इन तालियों ने यह सिद्ध कर दिया कि टप्पा जैसी क्लिष्ट गायन शैली में भी गायिकाएँ पूर्ण दक्ष हैं । इसी प्रकार आई0टी0सी0 संगीत सम्मेलन में कौशिकी चक्रवर्ती का गायन सुना । सत्रह वर्षाय इस बालिका ने अपना गायन राग बिहाग से प्रारम्भ किया तथा डेढ़ घन्टा तक उसका गायन प्रस्तुत किया । मंच प्रस्तुति में उनके डेढ़ घन्टे लम्बे गायन में स्वर, आलाप, सरगम, बोल–बॉट, तान–बोलतान, बंदिश का कहन, आदि गायन का प्रत्येक पक्ष इतनी दक्षता के साथ और सुन्दरता से प्रस्तुत किया गया कि श्रोता मंत्र मुग्ध हो गये । कहने का तात्पर्य यही है प्रत्येक गायन शैली में महिलाओं ने बढ़–चढ़कर योगदान दिया है । कला पक्ष के साथ ही महिलाओं ने संगीत के शास्त्र पक्ष में भी गहन अभिरूचि दिखाते हुए अपनी कुशाग्र बुद्धि के द्वारा अनेक महत्वपूर्ण सांगीतिक मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए पुस्तकें लिखीं हैं । लेखन के क्षेत्र में डा0 प्रभाअत्रे, डा0 प्रेम लता शर्मा, डा0 मधुबाला सक्सेना एवं डा0 स्वतन्त्र बाला शर्मा आदि अनेक संगीतज्ञों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

अपने शोध–प्रबन्ध में मैंने कुछ इन्हीं कलाकारों से बात–चीत करके तथा अन्य उपलब्ध साधनों के सहयोग से, उनके वक्तव्य को लिखने का प्रयास किया है । जो सामग्री मैं संकलित करके इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत कर रहीं हूँ उसमें अनेक त्रुटियां हो सकती हैं क्योंकि मैं तो संगीत की एक तुच्छ विद्यार्थिनी मात्र हूँ तथापि मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि इस शोध प्रबन्ध को एक पुस्तक का रूप दे सकूँ और तब इन त्रुटियों को दूर करके एक अच्छा संकलन संगीत समाज को दे सकूँ ।

अध्याय – द्वितीय

उत्तर भारतीय संगीत का प्रार्दुभाव एवं उसकी पृष्ठभूमि

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति पर प्रादुर्भाव एवं उसकी पृष्ठभूमि

मैंने अपने शोध–प्रबन्ध में विशेष रूप से उत्तर भारतीय संगीत पद्धति से सम्बन्धित महिला कलाकारों का ही परिचय दिया है । इसका कारण है कि मैंने जो भी संगीत बाल्यकाल से अब तक सीखा है और जिन गुरुओं ने भी मुझे सिखाया है वह उत्तर भारतीय गायन शैलियों के ही परिप्रेक्ष्य में रहा है जैसे– ध्रुपद–धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना, दादरा, सादरा, चतुरंग, होरी, कजरी आदि । स्वाभाविक रूप से इन्हीं की विशेषज्ञ महिला कलाकारों के प्रति मेरी रुचि उत्पन्न हुई । अतः शोध–प्रबन्ध में भी मैंने उत्तर भारतीय संगीत पद्धति की महिला कलाकारों को ही विशेष रूप से चयनित किया है । आज हम जिसे उत्तर भारतीय संगीत पद्धाति कह रहे हैं वह केवल ग्यारहवीं शताब्दी के बाद की देन है । उसके पूर्व भारत में केवल एकही संगीत पद्धति थी, भारतीय संगीत पद्धति । राजपूत काल के बाद मुस्लिम युग के समय से भारतीय संगीत उत्तर और दक्षिण संगीत पद्धतियों में विभक्त हो गया और प्रादेशिक भिन्नताओं के कारण दोनों संगीत पद्धतियों का विकास अलग–अलग हुआ । ग्यारहवीं शताब्दी में पठानों के आगमन से भारतीय संगीत में विशेष परिवर्तन हुआ । विभिन्न विदेशी आक्रमण एवं उनके शासन ने उन विदेशियों की संस्कृति एवं संगीत का प्रभाव उत्तर भारत पर गहराता गया । किन्तु दक्षिण भारत इनसे अछूता रहा । वहां अपनी प्राचीन संस्कृति एवं संगीत का मूल रूप ही पोषित होता रहा । उत्तर भारत पर जल्दी–जल्दी अनेक आक्रमण होते रहे जिसने जन–सामान्य को मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही रूप से थका दिया । उनमें संगीत की गहराई तक पहुंचने की रुचि कम होती गयी । फिर विदेशी संगीत का प्रभाव भी हमारे संगीत पर धीरे–धीरे बढता ही गया । अपने संगीत में ईरानी, फारसी तथा मुस्लिम संगीत का प्रभाव स्पष्ट होने लगा और इस प्रकार देशी और विदेशी संगीत के मिश्रण से एक नयी संगीत पद्धति, उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का प्रादुर्भाव एवं विकास हुआ ।

तेरहवीं शताब्दी तक उत्तर भारत में मुसलमानों का सुदृढ साम्राज्य स्थापित हो चुका था और हमारा संगीत भी उनकी संस्कृति और संगीत के प्रभाव के घेरे में आने लगा था । इसके पूर्व तक ग्रामराग तथा जातियां प्रचलित थीं परन्तु इसके बाद राग गायन का प्रचलन हो गया जिसके अन्तर्गत ध्रुपद तदोपरान्त ख्याल और ठुमरी भी क्रमशः प्रचलित होते गये । जहां एक ओर विदेशियों ने हमारे संगीत को नया स्वरूप प्रदान किया वही हमारे पवित्र संगीत को हानि भी बहुत पहुंचायी । आक्रमणकारियों के श्रृंगारिक और भोग-विलास पूर्ण वातावरण का समावेश उत्तर भारतीय संगीत में होने लगा । कट्टर मुस्लिम शासकों ने भारतीय संस्कृत ग्रन्थों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया तथा हमारे विद्वानों को डरा-धमका कर अथवा बडे-बडे प्रलोभन देकर उनसे अपनी सभ्यता की प्रशंसा के ग्रन्थों की रचना करवायी । जो भारतीय संगीत कभी पूर्णतः आध्यात्मिक था, जो ईश्वर आराधना का सर्वोपयुक्त माध्यम माना जाता था, उसमें श्रृंगारिकता एवं विलासता का प्रचुर मात्रा में समावेश हो गया और संगीत मात्र मनोरंजन का साधन बन गया । बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक आते-जाते दिल्ली मुसलमानों का केन्द्र बन गया । देश में सर्वत्र इस्लाम धर्म का प्रचार होने लगा । मुस्लिम संस्कृति ने पूरे उत्तर भारत पर अधिकार जमा लिया । यह वह स्थिति थी जबकि उत्तर भारतवासी दो संस्कृतियों के मध्य होकर गुजर रहे थे । अनेक व्यक्ति मुसलमान शासकों के दबाव एवं प्रलोभनों में आकर नैतिक चरित्र से गिरने लगे । जाहिर है संगीत भी ऐसी स्थिति में पतन की ओर जा रहा था । अज्ञानतावश अथवा मजबूरी वश भारतीय संगीतज्ञ भी इस स्थिति से बचे न रह सके । भारतीय संगीत अपनी भारतीयता को अक्ष्क्षुण्य न रख सका । फारसी सभ्यता, कला एवं संगीत का प्रभाव उत्तरी संगीत पर पड़ा ।

आक्रमणकारियों का प्रभाव उत्तरी भारत पर ही रहा जबकि दक्षिण भारत में यह हलचल न के बराबर रही । उत्तर भारत में जहां संगीत की स्थिति दयनीय होती गयी वहीं दक्षिण भारत में इसका विकास पूर्व की ही भांति होता रहा । प्रारम्भ में मुस्लिम शासक भारतीय संगीत और साहित्य के प्रति बहुत ही संकीर्ण

विचार रखते थे । अतः उस समय उत्तरी भारत में भारतीय विद्याओं तथा कलाओं का पूर्णतः पतन हुआ । इस प्रकार मुस्लिम प्रवेश युग भारतीय संगीत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण रहा । भारतीय लोगों की अभिरुचि मुस्लिम संस्कृति और सभ्यता की ओर बढ़ने लगी । अनेक हिन्दुओं ने मुस्लिम धर्म अपनाकर उनकी संस्कृति, कला एवं संगीत की प्रशंसा करने लगे । उत्तर भारत में भारतीय संस्कृति की पवित्रता और उसका गरिमामयी सौन्दर्य तो एकदम ही नष्ट हो गया और शुद्ध रूप से हिन्दू कहलाने वाली सभी भारतीय कलाओं पर यवन संस्कृति का प्रभाव पडना शुरू हो गया ।

मुसलमानों के साथ–साथ मुसलमान सन्तों ने, जिन्हें सूफी कहते हैं, इस्लाम धर्म के प्रचार में बहुत योगदान दिया । सूफी सन्तों ने, उनकी विचार–धाराओं ने तथा चिश्ती–परम्परा ने भारत के दीन–हीन, दलित और उपेक्षित हिन्दू समाज पर गहरा प्रभाव डाला । सूफी लोग संगीत के अत्यन्त प्रेमी थी । इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर भारतीय संगीत पर मुस्लिम संगीत का प्रभाव तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से दृढ़ रूप से फैलता चला गया ।

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का प्रादुर्भाव एवं उसकी पृष्ठभूमि समझने के लिये उत्तर भारत में समय–समय पर स्थापित विभिन्न शासकों के काल के परिप्रेक्ष्य में संगीत के विकास का अध्ययन करना उपयुक्त प्रतीत होता है । अतः मैं उसी के अनुसार उत्तर भारतीय संगीत का प्रादुर्भाव एवं पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर रही हूँ ।

तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में **'अलाउद्दीन खिलजी'** के शासन काल में संगीत का उत्कर्ष हुआ । वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी बादशाह था और संगीत का प्रेमी भी था । उसने संगीत की स्थिति सुधारने एवं उसके प्रचार–प्रसार में बहुत योगदान दिया । इसके दरबार में 'अमीर खुसरो' नामक संगीतज्ञ ने उच्च स्थान प्राप्त किया था । खुसरो ने उत्तर भारतीय संगीत के क्षेत्र में क्रान्ति मचा दी । अमीर खुसरो ने ही सर्वप्रथम भारतीय संगीत में कौव्वाली रीति को अपनाया । कई प्रकार के आधुनिक राग, 'लिलफ' 'साजगिरि', 'सरपरदा' आदि को प्रचलित किया । उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अनेक अमूल्य निधियाँ प्रदान कीं जो इस प्रकार हैं ––

1. गायन शैलियाँ -- तराना, त्रिवट तथा चतुरंग ।
2. ताल -- झूमरा, सूल, आडा चौताल आदि ।
3. वाद्य -- तबला तथा सितार ।

इस युग में संगीत के अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'संगीत–रत्नाकर' की रचना हुई ।

तुगलक युग में संगीत
(सन् 1320 से 1412 तक)

गयासुद्दीन तुगलक, तुगलक वंश का प्रथम सुल्तान था । इनका अधिकांश समय साम्राज्य व्यवस्थित करने में बीता । संगीत में इन्हें रुचि नहीं थी । अतः इनके शासनकाल में संगीत का उतना विकास नहीं हुआ । इनके बाद इनके बेटा मुहम्मद तुगलक गद्दी पर बैठा । वह बहुत विद्वान और संगीत प्रेमी था । इसने संगीत के विकास में बहुत योगदान दिया । यह दरबार में संगीतज्ञों को राज्याश्रय देता था और उनका मान–सम्मान भी करता था । इसके काल में अनेक संगीत समारोहों का भी आयोजन होता था, जिसमें संगीत विषयों पर परिचर्चा भी होती थी । इन संगीत–जलसों में हिन्दू–मुस्लिम का कोई भेद नहीं था । सब एक ही मंच पर उपस्थित होकर संगीत के विकास की ओर उन्मुख होते थे ।

लोदी काल में संगीत
(सन् 1414 से 1526 ई0 तक)

इस काल में संगीत की स्थिति में और भी सुधार हुआ । अनेक मुस्लिम कलाकार पैदा हुये जिन्होंने जनता में संगीत के प्रति रुचि जागृत की और संगीत के उत्थान के लिए विशेष प्रयास किया । विशेष रूप में लोदी वंश में तीन सुल्तान हुए, बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी तथा इब्राहिम लोदी । ये तीनों ही संगीत के

प्रेमी थे । इस काल में तो एक ओर हिन्दू कलाकारों का यह प्रयास रहा कि भारतीय संगीत के प्राचीन सौन्दर्य को विकृत न किया जाय, उसका धार्मिक रूप बना रहे, दूसरी ओर मुसलमान संगीतज्ञ अरबी संगीत का भारतीय संगीत में मिश्रण करते रहे । वे भारतीय संगीत पद्धति को अपने रंग में ढालना चाहते थे । इस काल तक देश भर में नई गायन शैलियों जैसे– कौव्वाली, गजल, ख्याल तथा ठुमरी आदि का प्रचलन होने लगा था । अनेक नये–नये संगीतज्ञ हुये और कई संगीत पुस्तकों की रचना भी हुयी ।

मुगल साम्राज्य का प्रारम्भ
(सन् 1526 ई0 से 1556 ई0 तक)

मुगल साम्राज्य का प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था । इसके पूर्व में संगीत विकास के चरम स्तर तक पहुंच चुका था । नये सिद्धान्तों के मिश्रण से भारतीय संगीत में नवीन मोड़ आ चुका था । सबसे पहला मुगल सम्राट 'बाबर' था जो स्वयं बड़ा संगीतज्ञ था । उसका हृदय बहुत भावुक था । वह अच्छे–अच्छे संगीतज्ञों को दरबार में रखता था और सम्मानित करता था । वह संगीत को एक महान शक्ति मानता था और मानव को परिवर्तन करने के लिए संगीत को सशक्त माध्यम मानता था । उसके दरबार में शाह कुली और गुलाम शदी कलाकार थे जिन्होंने नये–नये रागों और धुनों की रचना की । बाबर स्वयं कई संगीत गोष्ठियों में गया और अनेक कलाकारों को अपने यहां आमंत्रित भी किया । इसके समय में ख्याल तथा कौव्वाली आदि का प्रचलन रहा । श्रृंगारिक रचनायें तो इन्के काल में हुईं पर साथ–साथ ही भारतीय संगीत के प्राचीन स्वरूप को विकृत नहीं किया गया ।

इस समय जौनपुर के सुल्तान हुसैन शरकी '1458–1499' ने ख्याल गायकी तथा अनेक नवीन रागों की रचना की जैसे– जौनपुरी, सिन्धु, रसूल तोड़ी, बारह प्रकार के श्याम, सिन्दूरी इत्यादि । वे संगीत के अत्यन्त प्रेमी थे । कुछ विद्वानों के अनुसार सुल्तान हुसैन शरकी ने ख्याल का आविष्कार नहीं किया, बल्कि ख्याल

के समान गाना पहले से समाज में प्रचलित था, उन्होंने तो केवल उस गायकी को पसन्दकर गायकों को प्रोत्साहित किया इससे ख्याल गायन का प्रचार हुआ ।

इसी समय उत्तरी भारत में भजन–कीर्तन के रूप में संगीत का स्थान–स्थान पर उपयोग होने लगा था । उसका प्रभाव यह पडा कि भारतीय संगीत की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पुनः सुदृढ़ होने लगी ।

हुमायूँ
(1550–1556)

बाबर की मृत्यु के बाद उसका बेटा नसीरुद्दीन हुमायूँ गद्दी पर बैठा । हुमायूँ भी संगीत प्रेमी था । उसने संगीतज्ञों के गायन सुनने के लिए हफ्ते में कुछ दिन निश्चित कर रखे थे । उसके दरबार में अनेक संगीतज्ञ थे, जिनका वह आदर करता था । हुमायूँ सूफी विचार धारा से प्रभावित था जिसका परिणाम यह हुआ कि वह संगीत को ईश्वर प्राप्ति का आवश्यक माध्यम समझने लगा । इस काल में अनेक सूफी भक्त हुये । ये सूफी सन्त भारतीय संगीत का भी विकास करते रहे और इससे भारतीय संगीत की दार्शनिक भूमि सुदृढ़ होती गयी । सर्व–साधारण के सामने भी सूफी भक्त संगीत का प्रदर्शन करते थे जिससे जनता में संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न होना स्वाभाविक हो गया ।

अकबर का काल
(1556–1605)

हुमायूँ पुत्र अकबर अत्यन्त कुशल शासक, समाज–सुधारक तथा अत्यन्त संगीत–प्रेमी था । उन्होंने भारत की सभी कलाओं के उत्कर्ष के लिए प्रयास किया । कलाकारों एवं विद्वानों को दरबार में उच्च पद व सम्मान प्रदान किया । उनके दरबार में नव–रत्न थे, जिनमें संगीत सम्राट तानसेन सर्वश्रेष्ठ थे । यह प्रमाणित करता है कि अकबर कितने संगीत प्रेमी थे । उनके दरबार में अन्य कलाकारों में

रामदास, शुबहन खान, मियाँ चाँद, वीर मण्डल खाँ, सरोद खाँ, मियाँ लाल तथा शहाब खाँ इत्यादि थे । उनके दरबार में दक्षिण के संगीत ग्रन्थकार भी थे । पुण्डरीक विट्ठल इसी वर्ग के पंडित थे । अकबर के दरबार में मेल पद्धति की व्याख्या करने वाला एक 'राग–सागर' नामक ग्रन्थ भी रचा गया जिसमें राग–रागनियों के ध्यान भी दिये हैं । अकबर चूंकि स्वयं कला–प्रेमी थे तथा उन्होंने विद्वानों एवं संगीतज्ञों को उचित सम्मान देकर उन्हें क्रियात्मक व शास्त्रीय दोनों पक्षों में निपुणता प्राप्त करने का अवसर दिया । अकबर के काल को संगीत की दृष्टि से स्वर्ण युग कहा गया है । इस युग में भारतीय संगीत की लगभग सभी प्रवृत्तियाँ सुचारु ढंग से विकसित हुईं । उसके दरबार में 36 संगीतज्ञ थे । उन्होंने राजा मानसिंह को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया था ।

मानसिंह तोमर –– मानसिंह तोमर संगीतज्ञों का बहुत सम्मान करते थे और उनके अपने दरबार में अनेक संगीतज्ञ रहा करते थे । बैजू बावरा भी उनक राज्य काल में हुऐ । कहा जाता है कि बैजू के सहयोग से ही मानसिंह ने ध्रुपद शैली का परिष्कार कर उसका प्रचार–प्रसार किया । मानसिंह की पत्नी मृगनयनी थीं, जिनको बैजू ने प्रशिक्षण दिया । मानसिंह और मृगनयनी ने मिलकर संगीत के क्षेत्र में जो भी सुप्रयास किये वह आज भी प्रमाणित रूप में ग्वालियर में है । ग्वालियर के किले के अन्दर 'मान–मन्दिर' और 'गुर्जरी' हिन्दू वास्तु–कला के अत्यन्त सुन्दर प्रतीक हैं । ग्वालियर की ध्रुपद गायकी तथा ग्वालियर का विद्यापीठ आज भी प्रसिद्ध है । मानसिंह सार्वजनिक रूप से संगीत का भी आयोजन करते थे जिसमें वह बाहर के कलाकारों को भी बुलाते थे । ग्वालियर में आम जनता ने संगीत के प्रति बहुत जागृति की । नारियां भी संगीत शिक्षा लेती थीं और सार्वजनिक संगीत सभा में भाग लेती थीं ।

जौनपुर के सुल्तान हुसैन शरकी स्वं एक अच्छे संगीतज्ञ थे । ख्याल गायन शैली के प्रचार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है । समाज में ख्याल शैली धीरे–धीरे बढ़ती गयी और ध्रुपद का स्थान कम होता गया । उस काल में गायकों के तीन

वर्ग थे । कलावन्त वर्ग, जो ध्रुपद गायन शैली का पोषक था, दसरा कौव्वाल वर्ग जा कौव्वाली के साथ–साथ ख्याल भी गाते थे । तीसरा वर्ग जो ध्रुपद के स्थायी, अन्तरा तथा आलाप बढ़त और कौव्वाली की तान बढ़त के मिश्रण से ख्याल के नवीन स्वरूप को विकसित कर रहे थे ।

अकबर के युग में भक्ति रस के अनेक कवियों ने जन्म लिया जिसमें सन्त तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई तथा कबीर आदि के नाम विशेष प्रसिद्ध थे । अकबर एक शान्तिप्रिय सम्राट थे जो संगीत को पवित्र, पूज्य और कला की साधना मानते थे । इसलिए उन्होंने भक्त गायकों का बहुत सम्मान किया ।

इस काल के भारतीय संगीत पर दृष्टि डालने पर हम पाते हैं कि संगीत में दो स्पष्ट धारायें हो गयी थीं । पहली धारा उत्तर भारत में मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव में पनप रही थी तो दूसरी ओर दक्षिण का संगीत अभी भी प्राचीन रूप में पोषित हो रहा था । उत्तर भारतीय संगीत में विदेशी प्रभाव रहा जिससे वह निश्चित ही लाभान्वित हुआ । लगभग 1000 वर्षीय हिन्दू और मुसलमानों के सांस्कृतिक सम्पर्क से उत्तर भारतीय संगीत में इतनी परिपक्वता आ गयी कि वह विश्व में प्रशंनीय होने लगा ।

सन्त संगीतज्ञ स्वामी हरिदास

अकबर कालीन हिन्दू सन्त संगीतज्ञ स्वामी हरिदास यमुना नदी के तट पर वृन्दावन में निवास करते थे । यह तानसेन के गुरु और उस समय के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ थे । स्वामी हरिदास के और भी कई शिष्य हुये जैसे बैजू, गोपाल दास, मदनलाल, रामदास तथा सोमनाथ पंडित आदि । स्वामी जी ने अनेक ध्रुपद, धमार, तराने, त्रिवट, रागमाला तथा कई रागों की रचना की । स्वामी जी के शिष्यों ने देश के कोने–कोने में संगीत का प्रचार–प्रसा किया । स्वामी जी की काफी रचनायें 'संगीत कल्पद्रुम' में मिलती हैं । वे 95 वर्ष की आयु तक जीवित रहे ।

तानसेन

अकबर के दरबार के सर्वश्रेष्ठ रत्न तानसेन ने भारतीय संगीत की अभिवृद्धि के लिए प्रबल प्रयास किया । गायन की नैंपुण्यता के कारण ही उन्हें उक्त काल में संगीत सम्राट की मान्यता उपलब्ध हुई । भारतीय संगीताकाश में उनकी कीर्ति–कौमुदी की प्रतिभा आज भी वैसे ही व्याप्त है । तानसेन की प्रमुख रचनायें ध्रुपद हैं जो लिखित रूप में 'राग–कल्पद्रुम' एवं अन्य संगीत ग्रन्थों में उपलब्ध है । उनके लगभग 300 ध्रुपद तो ग्रन्थों में उपलब्ध हैं तथा अलिखित ध्रुपद घरानों से सम्बद्ध कलावन्तों को कंठस्थ है । उन्होंने तीन ग्रन्थों की रचना की --

1. संगीत सार
2. राग माला
3. गणेश श्रोत

भक्त कवियों का योगदान

सोलहवीं शताब्दी का काल भक्ति काव्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है । इस काल में भक्ति आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर रहा । इसी समय निर्गुण सन्त भक्ति, प्रेम–मार्गी, सूफी भक्ति, कृष्ण–भक्ति तथा राम–भक्ति की प्रेरणा से अनेक भक्त कवियों का जन्म हुआ । ये भक्त कवि अपनी रचनायें भक्ति–भावना में डूबकर गाते थे जिससे इनकी भावना का प्रभाव संगीत पर पडा और उत्तर भारतीय संगीत में एक बार पुनः भक्ति–भावना का समावेश हुआ तथा वह आध्यात्म की ओर आर्कषित होने लगा । अकबर का काल भारतीय संगीत में स्वर्ण काल के नाम से इसीलिए सम्बोधित किया जाता है क्योंकि इस युग में जहां एक ओर भक्त कवियों तुलसीदास, सूरदास, कबीर, मीराबाई आदि ने संगीत की धार्मिक एवं आध यात्मिक पृष्ठभूमि सुदृढ़ की वहीं दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत का स्वरूप मुस्लिम दरबारों में सजाया–संवारा गया ।

मध्य युग में पंडित पुण्डीक विट्ठल ने संगीत के चार ग्रन्थों – सद्राग चन्द्रोदय, राजमाला, राग–मंजरी तथा नर्तन–निर्णय की रचना करके संगीत को शास्त्र पक्ष से मजबूती प्रदान की ।

अकबर के बाद उनके पुत्र 'जहांगीर' भी संगीत प्रेमी थे परन्तु उनके काल में श्रृंगारिक साहित्य का ही अधिक निर्माण हुआ । जहांगीर के दरबार में विलास खॉ, छत्तर खाँ, दुर्रम दाद आदि अनेक गायकों को स्थान प्राप्त था तथा इन्हीं के काल में पंडित सोमनाथ ने 'राग–विबोध' नामक अनुपम संगीत ग्रन्थ की रचना की ।

शाहजहाँ
(1627–1658)

शाहजहाँ भी अपने पिता के समान ही संगीत प्रेमी था । वह संगीतज्ञों का बहुत आदर करता था । उसके दरबार में हैदर खाँ, लाल खॉ, रामदास, भट्टाटेर तथा जगन्नाथ आदि संगीतज्ञ थे । शाहजहाँ स्वयं भी कुशल गायक तथा सितारवादक था । उसके काल में ध्रुपद शैली का अत्यधिक प्रचार–प्रचार था । गुजरात तथा महाराष्ट्र के नृत्य विकसित होते रहे । इस काल में संगीत की बागडोर ब्राह्मणों के हाथों में थी । संगीतज्ञों का इतना अधिक आदर–सम्मान होने के उपरान्त इस काल में संगीत उच्च वर्ग से निकलकर निम्न अशिक्षित जातियों में हस्तान्तरित हो चुका था । संगीतज्ञों का एक ऐसा वर्ग निर्मित हो गया था जो मात्र संगीत से ही अपना जीवन यापन करता था और संगीत को पूर्णतया व्यवसाय के रूप में देखता था । इन अशिक्षित संगीतज्ञों को राग–रागनियों का ज्ञान भी अल्प था । अकबर के काल में संगीतज्ञों का जो नैतिक स्तर निर्मित हुआ था उसका इस काल में ह्रास हुआ । कलाकार कला की साधना से विमुख होकर विलासी हो गये फिर भी कतिपय हिन्दु संगीतज्ञ भारतीय संगीत के प्राचीन स्वरूप को सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे थे । 'कत्थक नृत्य' मुगल युग के पूर्व से ही भारत में 'कृष्ण–नृत्य' के नाम से प्रचलित था किन्तु यह नृत्य भी मुस्लिम युग में परिवर्तित हो गया ।

गया था, / उसी प्रकार 'कत्थक–नृत्य' का विकास श्रृंगारिक उत्तेजक एवं आकर्षक बनाने के लिए हुआ । इस काल में कत्थक नृत्य सर्वाधिक प्रचलित रहा ।

औरंगजेब (1658–1707)– संगीत जबकि अपनी निम्नावस्था प्राप्त कर चुका था, उसी समय औरंगजेब दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ उसे भारतीय संगीत की उत्कृष्टता का अनुभव नहीं था, उसने मुस्लिम युग में संगीत का मात्र श्रृंगारिक रूप ही अवलोकन किया था। उसकी यह धारणा थी कि मनुष्य के चरित्र को गिराने का साधन संगीत है । इस दृष्टिकोण से उसने समस्त दरबारी गायकों को सेवा मुक्त कर दिया । औरंगजेब की इस कठोरता से संगीतज्ञ असंतुष्ट हो गए उसने संगीत विषयक सभी समारोहों पर प्रतिबन्ध लगा दिया और संगीतज्ञों के वाद्ययंत्र जलवा दिये । फिर भी औरंगजेब के ही काल में उत्तर भारत में सर्वाधिक लोकप्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'संगीत पारिजात' की रचना हुई । औरंगजेब भले ही संगीत के पक्ष में न रहा हो किन्तु उसके काल में राग तत्व विबोध, हृदय कौतुक, हृदय प्रकाश, अनूप संगीत रत्नाकर, चर्तुण्डि प्रकाशिका आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हुई । औरंगजेब की मृत्यु के बाद हम 18वीं शताब्दी में पदार्पण करते हैं ।

आधुनिक काल
(1800 से अब तक)

इस काल को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं ।

(1) पूर्वार्द्ध आधुनिक काल (1800–1900 तक)

(2) उत्तरार्द्ध आधुनिक काल (1900 से अब तक)

पूर्वार्द्ध आधुनिक काल

मुहम्मदशाह रंगीले– (**1719–1748**) बहादुरशाह का पोता मोहम्मदशाह 1719

से न सँभाल सका, फलतः सब छिन्न–भिन्न हो गया । मोहम्मदशाह संगीत कला का अत्यन्त प्रेमी था, इसी कारण उसका नाम 'रंगीला' पड़ा । वह अपने नाम के अनुरूप ही रंगीली मनोवृत्त के श्रृंगार प्रिय बादशाह थे उनका शासनकाल संगीत, कला एवं साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा । उनके दरबार में आलम और धनानन्द जैसे उच्चकोटि के कवि तथा महाकवि और सदारंग जैसे संगीत सिरोमणि थे । रंगीले का शासनकाल सांगीतिक दृष्टि से क्रान्तिकारी माना जा सकता है क्योंकि ध्रुवपद, धमार गायिकी के स्थान पर ख्याल, ठुमरी, दादरा, कव्वाली जैसी गायन शैलियाँ तथा वीणा के स्थान पर सितार जैसे नवीनतम तन्तु वाद्य का प्रचार एवं विकास इसी काल में हुआ । इसी सम्राट के दरबार में प्रसिद्ध गायक और रचयिता अदारंग और सदारंग ने समृद्धि पायी थी । मोहम्मदशाह रंगीले के दरबार में सदारंग एक आचार्य की तरह प्रतिष्ठित थे । भारतीय संगीत में उन्होनें कुछ विशिष्ट परम्पराओं की सृष्टि की । उन्होनें ख्याल शैली को सुर,भाषा व लय से सजाया सँवारा । सदारंग ने कव्ववाली की परम्परा की ख्याल गायिकी को एक नया रूप दिया तथा नवीन शैली दी जिससे ख्याल की विषय वस्तु में श्रृंगार आ गया । सदारंग के भाई खुसरो खाँ – 'अदारंग' भी उच्चकोटि के कलाकार थे । उन्होनें भी अनेक ख्यालों की रचनाएँ की जो आज भी प्रचलित हैं । यद्यपि वे स्वयं ध्रुवपद गाते थे और अच्छे वीणा वादक भी थे । वे संगीत मर्मज्ञ थे और तीन तार के नवीन तन्तु वाद्य 'सहतार' के तारों पर स्वर की गूँजों को जिन्दा रखने का प्रयास किया । कालान्तर में इसी वाद्य का परिष्करण करते हुए सितार वाद्य की संरचना हुई । इन्होंनें बहुत से रागों का अविष्कार किया । सदारंग की शिष्याओं ने पन्नाबाई और कमालबाई का नाम प्रसिद्ध है ।

'टप्पा' गायन शैली का प्रारम्भ भी इसी काल में गुलामनबी शोरी ने किया । आज कल टप्पा अत्यन्त लोकमान्य शैली है । इसका गायन संक्षिप्त तथा चंचल प्रकृति का होता है जिसके लिए गले की तैयारी आवश्यक है ।

भरतीय और फारसी संगीत शैलियों का सम्मिश्रण मुस्लिम काल की विशेषता थी जिसमें हमारे देश में नवीन गायन पद्धति उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का विकास किया । इस काल में ठुमरी का भी अत्यधिक प्रचलन हुआ । लखनऊ की ओर ठुमरी का प्रचलन अत्यन्त लोकप्रिय हुआ । इस प्रकार हम देखते हैं कि

रंगीले का राज्य काल शासन की दृष्टि से तो अवनति की ओर जा रहा था जबकि संगीत के क्षेत्र में संगीतज्ञों द्वारा नयी–नयी रागों तथा शैलियां का जन्म तथा विकास हो रहा था ।

सन् 1846 से 1856 ई० तक **'वाजिद अली शाह'** नवाब रहे । स्वयं वाजिद अली शाह ने अपने दरबारी नर्तक ठाकुर प्रसाद व उनके भाई दुर्गा प्रसाद जी से नृत्य की शिक्षा ली थी । वाजिद अली शाह उत्तम गायक व वाग्गेयकार थे । उन्होंनें 'अख्तर' उपनाम से अनेक सादर, ख्याल, ठुमरियों और गजलों की रचना की । भैरवी की प्रसिद्ध ठुमरी 'बाबुल मोरा नहर छूटो ही जाय' उन्हीं की रचना है ।

अब मुगल शासन के अन्तिम बादशाह **'बहादुरशाह जफर'** का शासन काल आता है । इस समय तक अँग्रेजों का आधिपत्य पूरी तरह हो चुका था और संगीत के लिए परिस्थितियाँ संतोषजनक नहीं थीं अतः दिल्ली के अधिकाँश कलाकार देश की विभिन्न रियासतों में जाकर बस गये जहॉ नवाबों और राजाओं ने इन संगीतज्ञों को आश्रय दिया । इन रियासतों के नाम से भी संगीत के विभिन्न घरानों के जन्म की नींव पडी ।

उत्तरार्द्ध अथवा वर्तमान आधुनिक काल
(1900 से अब तक)

भारत के इतिहास में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध काल को अत्यन्त महत्वपूर्ण काल कहा जा सकता है । 1850 से 1909 तक, भारत क्षितिज पर ऐसे अनेक महापुरूषों का आविर्भाव हुआ जिन्होंनें जीवन के सभी क्षेत्रों में नयी शक्ति का संचार करने का प्रयत्न किया । देश के विचारक और नेतागण भारत के प्राचीन गौरव के पुनरूत्थान के साथ–साथ समाज की विचारधारा में नयी क्रान्ति पूर्ण भावनाओं का संचार कर रहे थे । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षण साहितय, रंग मंच और सांस्कृतिक कलाओं (संगीत) का उपयोग करना आवश्यक हो गया था । संगीत को राष्ट्रीय संस्कृति का अभिन्न अंग समझा जाने लगा और उसका पूर्व गौरव पुनः स्थापित हो जाये, ऐसा प्रयत्न किया जाने लगा । पुनरूत्थान और

सुधार की भावना से संगीत के क्षेत्र में दो महान विभूतियों का जन्म हुआ – **विष्णुनारायण भातखण्डे एवं विष्णुदिगम्बर पलुस्कर** । इन दोनों संगीतज्ञों ने संगीत की उन्नति के लिये अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया । संगीत की कला और प्रतिष्ठा के उत्थान के लिए दृढ़संकल्प होकर अटल उत्साह से कार्य किया । इन विष्णुद्वय के सतकर्मों के फलस्वरूप संगीत पुनः सभ्य समाज में स्वीकृत किया गया तथा जनसामान्य के लिए सहज बन सका । संगीत के क्षेत्र में इन दोनों महान विभूतियों में क्रान्तिकारी रूप से अपना अमूल्य योगदान संगीत विद्यालयों की स्थापना, स्वरलिपि की पद्धति का अविष्कार, प्राचीन रागों का सुनियोजित स्वरूप स्वरचित ग्रन्थों में प्रस्तुत कर तथा संगीत शिक्षा प्रदान कर दिया । इनके पश्चात् से लेकर आज तक उत्तर भारतीय संगीत में अनेक महान संगीतज्ञों ने अपना योगदान देते हुए इस पद्धति को सर्वप्रिय एवं समृद्धशाली बनाया है यथा बालकृष्ण बुवा, उ0 अमीर खॉ, उ0 अब्दुल करीम खॉ, राजा भैया पुंछ वाले, पं0 डी0वी0 पलुस्कर, पं0 भोलानाथ भट्ट, पं0 ओंकारनाथ, फैय्याज खॉ, हीराबाई बड़ोदकर, बेगम अख्तर, सिद्धेश्वरी देवी, विद्याधरी, गंगूबाई हंगल, केसरबाई केरकर, कुमार गन्धर्व, पं0 भीमसेन जोशी, पं0 जसराज आदि ।

इस प्रकार विभिन्न शासकों के शासनकाल में शासकों से प्रभावित होता हुआ तथा सामाजिक परिस्थितियों के परिवेश में उत्तर भारतीय संगीत क्रमशः विकसित होता रहा । इसके विपरीत दक्षिण भारत में जहॉ आक्रमणों की हलचल नहीं के बराबर रही, वहॉ संगीत अपने प्राचीन स्वरूप में ही पोषित होता रहा । इस प्रकार हमारे देश में दो संगीत पद्धतियॉ स्पष्ट हुयीं । स्वतंत्र भारत में उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का प्रचार–प्रसार अत्यधिक जोर–शोर से हुआ और हो रहा है । वर्तमान समय में अनगिनत संगीतज्ञ पूरे मनोयोग से इस पद्धति में संगीत साधना कर रहें हैं और इसे समृद्धिशाली बना रहे हैं । इन संगीतज्ञों में महिलाओं का भी एक बडा वर्ग है और वही मेरे शोध प्रबन्ध की केन्द्र बिन्दु भी है – '**उत्तर भारतीय संगीत में महिला संगीतकारों का योगदान (गायन के सन्दर्भ में)**' ।

अध्याय – तृतीय

मीराबाई

मीराबाई

संगीत और भक्ति–काव्य के समन्वय की दृष्टि से सोलहवीं शताब्दी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है । यह युग संगीत के उत्कर्ष के दृष्टिकोण से 'स्वर्णयुग' कहलाता है, क्योंकि इस युग में स्वामी हरिदास बैजूबावरा, तानसेन, गोपाल आदि अनेक महान संगीतज्ञों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठा दिलाई थी । यह युग 'भक्तियुग' भी था, क्योंकि इस युग मे सूर, तुलसी, कबीर, तथा मीरा जैसे भक्त कवियों ने सगुण तथा निर्गुण धारा मे अपनी अटूट भक्ति का अलख जगाया था । अकबर के राज्य काल में वर्षों से चली आ रही राजनैतिक उठा–पटक को भी शांति मिली, जिससे जनसामान्य भी अपनी–अपनी भावनाएँ लोक संगीत के माध्यम से प्रगट करने लगे थे । संगीत को राज्याश्रय प्राप्त था जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षण मिला और वह पुष्पित–पल्लवित होकर अपनी सुगंध चर्तुदिशा में फैलाने लगा । भक्ति तथा संगीत के उत्कर्ष के इसी युग में जन्मी 'मीराबाई' ने अपनी गीतमयी वाणी द्वारा भारत के जनमानस में, कृष्ण के प्रेम में सराबोर, प्रभुभक्ति का ऐसा प्रकाश फैलाया जिसे आज तक 'मीरा के भजनों' के रूप में हम विभिन्न संगीतज्ञों द्वारा श्रवण करके आत्मविभोर होते रहते हैं । काव्य और संगीत–कला दोनों में ही सिद्धहस्त, भक्ति–भाव के उल्लास में रस की धारा उमडाने वाली, कृष्ण की अनन्य पुजारिन मीराबाई, एक विशुद्ध कवियत्री गायिका थी ।

(1) मैं तो हरिगुण गावत नाचोंगी ।
ग्यान–ध्यान की गठडी बांधकर, हरिहर संग मैं खेलोंगी ।।
अपने महल में बैठ–बैठकर, गीत–भागवत् बाचूँगी ।
'मीरा' के प्रभु गिरधिर नागर, सदा प्रेम–रस चाखूँगी ।।

(2) श्री गिरिधर आगे नाचूँगी ।
नाच–नाच पिव रसिक रिझाऊँ, जोगी जन कूँ जाँचूँगी ।
मैं तो प्रेमी जन को जाचूँगी, नाचूँगी–नाचूँगी ।।

प्रेम–प्रीत का बाधि घूँघरा, सुरति की काछनी काहूँगी ।
लोक–लाज कुल की मर्यादा, या में एक न राखूँगी ।।
पिया के पलंगा जाय पौढूंगी, 'मीरा' हरिरंग राचूँगी ।
नाचूँगी–नाचूँगी, श्री गिरिधर आगे नाचूँगी ।।

मीराबाई रचित उपरोक्त पदों से ज्ञात होता है कि वह कुशल गायिका एवं नर्तकी थी जो अपने आराध्य श्री कृष्ण के प्रेम म डूबकर, उन्हें प्रसन्न करने के उद्देश्य से गाती तथा नाचती थीं । ध्रुवदास ने अपनी 'भक्तनामवली' में मीरा के संगीत के विशेष महत्व देते हुए कहा है–

नृत्यत नूपुर बॉध के, गावत लैकरतार ।
विमल हियो भक्तनि मिली, तृनसम गान्यो संसार ।।

इस पद की प्रथम पंक्ति से स्पष्ट है कि मीरा संगीतज्ञ तथा नृत्य–कुशल थीं । वह अपनें हाथों में करताल तथा पैरों में घुँघरू बॉधकर श्रीकृष्ण के प्रति अपनी भावनाओं को गीतिकाव्य के माध्यम से गा–गाकर प्रगट करती थीं ।

मोर–मुकुट पीताम्बरधारी, नट नागर गिरवरधारी, श्याम सलोने कृष्ण के आगे मतवाली होकर नाचने वाली 'प्रेम–दिवाणी' मीरा, हिंदी–साहित्य की एक कवियत्री के रूप में सामने आई लेकिन उनके पदों को देखकर प्रतीत होता है कि 'जनम–जनम की प्यासी' मीरा ने अपने हृदय की भावनाओं को गीति–काव्य का आश्रय लेकर अपने भाव–सुमनों को श्री हरि के चरणों में अर्पित किया था अतः वह दीवानी कवियत्री पीछे, पहले एक भक्त गायिका रहीं, जिसने अपने सुरों की चोट से अपनी आकुलता की गीत–गाव्य के रूप में बाहर निःसृत किया था । उनके पदों में सांसारिक प्रेम के स्थान पर आध्यात्मिक प्रेम का मधुर भाव था, जिसमें आत्मा और परमात्मा के चिर–मिलन का आभास होता है ।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मीरा का जन्म उस काल में हुआ था जब भारतीय शास्त्रीय संगीत की उपत्यका उन्नति की पराकाष्ठा चूम रहीं थी दूसरे

शब्दों में संगीत का वह स्वर्णिम युग था । एक ओर जहाँ सगीत शिरोमणि तानसेन, बैजू, गोपाल आदि अपने–अपने सुरों से सगीत का रूप सजा–सँवाकर रहे थे, उसी समय दूसरी ओर सूर–मीरा–तुलसी आदि कवि अपने भक्ति–संगीत में विभोर होकर एक अलग ही संगीत–'भक्ति संगीत' का अलख जगा रहे थे । माया–मोह आदि दूषित विकारों से रहित वह एक ऐसा संगीत था, जो मानव हृदय में पूरी तरह से पैठकर उसे भक्ति भावना से सरोबोर कर देता था । मीरा इस सगीत की अमर गायिका थीं ।

मीरा द्वारा रचित काव्य–रचनाओं में संगीत की माधुर्यता तथा गायन–कुशलता का का जो दृष्टान्त मिलता हे उससे यह जानने की तीव्र इच्छा होती है कि मीराबाई की संगीत शिक्षा किन गुरू के निर्देशन में, किस प्रकार हुई होगी किन्तु पुष्ट प्रमाणों के अभाव में, उनके जीवन वृन्त के आधार पर मात्र अनुमान ही लगाया जा सकता है कि मीरा की संगीत के रूचि तथा प्रतिभा का विकास किस प्रकार हुआ होगा ।

मीरा के समय में संगीत को राज्यश्रय प्राप्त होने का प्रचलन था । मीरा, जो कि राजघराने की पुत्री थी अतः शैशवावस्था से ही मेडता में धार्मिक संस्कार के साथ ही उन्हें संगीत शिक्षा भी प्रदान की गई होगी । मीरा के समय में नृत्य तथा गान का अधिक प्रचार था । स्त्रियों को संगीत तथा नृत्य का ज्ञान आवश्यक समझा जाता था । राजकुल में राजकुमारियों को संगीत शिक्षा दी जाती थी (मीरा कृति ग्रंथ, मीरा के पदों में सांस्कृतिक चित्र, पृष्ठ 161–162) । मीरा का जन्म भी राजकुल में हुआ था अतः मीरा की संगीत शिक्षा के प्रति उनके अभिभावकों की उदासीनता संभव नहीं । मीरा का पालन–पोषण उनके बाबा रावइदा जी ने किया था जो कि वैष्णव थे । उनके यहाँ साधू–सन्तों का समागम तथा सतसंग होता रहता था । सत्संग के अर्न्तगत भजन तथा कीर्तन भी आवश्यक अंग था । भजन–कीर्तन में संगीत का भी आयोजन रहता है अतः मीरा को संगीत के संपर्क में आनें का संयोग मिला और संगीत के साथ उनका परिचय बहुत स्वाभाविक रूप से हुआ । विवाहोपरान्त अपने ससुर–गृह में मीरा को यथासंभव अपनी संगीत प्रतिभा के विकास के अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ ।

मीरा का विवाह मेवाड के सिसोदिया राजवश में हुआ था । सिसौदिया राजवंश उन दिनों संगीत के अनन्य प्रेमी महाराणा कुंभा के कारण पूर्ण विख्यात हो चुका था । महाराणा कुंभा संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की वीणा के बहुत बडे उपासक थे । उन्होनं संगीत का गहरा अध्ययन और अभ्यास किया था । संगीत पर महाराणा कुम्भा ने 'संगीत–प्रदीपिका', 'संगीत–सुधा' तथा 'सगीतराज' ग्रन्थ लिखे थे । इसके अतिरिक्त 'संगीत–रत्नाकर' तथा जयदेव के 'गीत–गोविन्द' की टीका 'रसिक प्रिया' नाम से भी की थी । राणाकुंभा की पुत्री रमाबाई संगीत–पटुता के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध थीं ।

अतः जिस राजवंश में संगीत का इतना प्रचार हो, वहॉ जयदेव की अष्टपदी संगीत की नवीन स्वर–लहरियों से मिलकर वायुमण्डल को गुंजायमान कर रही हो, उस घर में बाल्यकाल से आई श्रीकृष्ण की प्रेम भक्ति में डूबी मीरा, भला संगीत के प्रभाव से अछूती कैसे रह सकती थीं ? किन्तु तत्तकालीन समय में स्त्रियॉ घर में गातीं थी । बाह्य स्थानों पर वेश्याओं का ही संगीत प्रदर्शन होता था । ऐसे में जब मीरा अपनी सुध–बुध भूलकर बाहर मंदिर तथा संत–मंडली में गाने और नृत्य करने लगीं तो श्वसुर कुल ने आपत्ति की होगी । उनके क्रोधित होने पर मीरा गृह त्याग कर वृन्दावन में निवास करने लगीं । वृन्दावन उस समय संगीत का प्रधान केन्द्र था जहॉ स्वामी हरिदास, अपनी विशाल शिष्य मण्डली के साथ संगीत साधना में रत रहते थे, अतः वहॉ के वातावरण में मीरा की संगीत प्रतिभा को प्रस्फुटित होने का और भी सुयोग मिला । इस प्रकार अनुकूल वातावरण पाकर मीरा अपने युग की सर्वश्रेष्ठ कवियत्री गायिका हुई ।

भारतीय संगीत को मीराबाई की देन

भारतीय संगीत के क्षेत्र में, मीराबाई ने एक पेशेवर गायिका अथवा शस्त्रीय गायिका के रूप में प्रतिष्ठित ना होते हुए भी अप्रतिम योगदान दिये हैं । वह तो सिर्फ अपने कृष्ण की भक्ति में खोई हुई, अपने हृदय की कृष्ण के प्रति कोमल भावनाओं को गाकर कहती रहती थीं उन्हें यह सुध नहीं थी कि उनके पद शास्त्रीय रागों का पूर्णतः पालन कर रहे हैं या उनमें लोकसंगीत का मिश्रण हो रहा है वह तो बस अपनी आत्म–संतुष्टि के

लिये अपने हृदय की सच्ची भावनाओं को ज्यों का तयो प्रगट कर देती थीं और यहां तो वास्तविक संगीत है किन्तु ऐसा भी नहीं था कि वह संगीत से बिल्कुल अनभिज्ञ थीं तथापि वह अपने संगीत ज्ञान को भावनाओं के प्रस्तुतिकरण को सहज बनानें में प्रयोग करती थी शास्त्रीयता के नियम पालन के रूप में नहीं । उनका उद्‌देश्य शास्त्रीय संगीत की उत्कृष्ट प्रस्तुति करना नहीं, अपनी भक्ति तथा प्रेम की सहज–सरल–निर्मल धारा प्रवाहित करना था । इसीलिये उनके संगीत को 'भक्ति–संगीत' की सज्ञा दी जाती है ।

मीराबाई ने अपने अनगिनत गेय पदों की रचना के द्वारा संगीत जगत को जो अमूल्य भेंट दी है उससे तो आज तक के संगीतज्ञ भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धान्वत होते हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे । यह तो एक ऐसा 'खजाना' है, जिसके लिये संगीत समाज कभी भी मीराबाई से उऋण नहीं हो सकता––

(1) चलो मन गंगा जमुना तीर ।
गंगा जमुना निरमल पानी, संग लियो बलबीर ।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहत, कुंडल झलकत हीर ।
'मीरा' कहै प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल पर सीर ।।

(2) पग घुँघरू बॉध मीरा नाची रे ।
मैं तो अपने नारायण की, हो गई आपही दासी रे ।।
जहर का प्याला राणाजी ने भेजा, पीवत मीरा हॉसी रे ।
लोग कहे मीरा हो गई बॉवरी, सास कहे कुल नासी रे ।।

(3) हरि तुम हरो जनकी भीर ।
द्रौपदी की लाज राखी, तुम बढायौ चीर ।
बूडते गजराज रा.ख्यो, धरयो नाहीं धीर ।।
हिरणकस्यप मार लीन्हो, धरयो आप सरीर ।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर, क्यों भए बेपीर ।।

(4) दरस बिन दूखन लागे नैन
जबसे तुम बिछुडे प्रभु मेर, कबहु न पायो चैन ।।
सबद सुनत मोरी छतियां कॉपे, मीठे लागत बैन ।

बिरह व्यथा कासों कहूँ सजनी, वह गई करवट ऐन ।।
कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छैमासी रैन ।
'मीरा' के प्रभु कबरे मिलागे, दु:ख मेरण सुख दैन ।।

आदि भजन आज भी शास्त्रीय संगीत सभाओं में अपना विशिष्ट भावमय स्थान रखते हैं । गायक तथा श्रोता दानों ही इन भजनों में विशेष रसानुभूति करते हैं । युगों–युगों तक मीराबाई के भजन शास्त्रीय तथा सुगम संगीत में गुंजित होते रहेंगें ।

शास्त्रीय रागों तथा लोक धुनों का अद्‌भुत समन्वय

मीराबाई के पदों के ऊपर विभिन्न रागों के नाम अकित होने से स्पष्ट होता है कि वह अपने पदों को विभिन्न रागों जैसे– भैरवी, तोडी, पहाणी, झिंझोरी, आसावरी, पीलू, मॉड, बिहाग, सोहनी, छायानट, गूजरी, देस, जोगिया, कालिंग्ड़ा बरवा, कान्हाणा, बागेश्वरी, भीमपलासी, काफी, खमाज, पूरियाधनाश्री, सोरठ, मल्हार, मालकौंस हमीर, तिलंग धानी, सूहा तथा सारंग आदि रागों में गाती थीं । उनके पदों में राजस्थानी तथा गुजराती लोकधुनों का भी सुन्दर समन्वय मिलता था यही कारण है कि इनके पदों ने जहॉ शास्त्रीय संगीत प्रेमियों को आकर्षित किया वहीं जनसामान्य की भी रूचि इसमें उतनी ही तीव्रता से परिलक्षित होती रही है और इनके पद विशिष्ट संगीत समारोहों से लेकर, घर–घर में गाये जाने लगे और सर्वप्रिय हुए । हॉथ में 'एकतारा' लेकर भक्ति में सुध–बुध खोई मीराबाई जब गाती थीं तो चहुँ ओर भक्ति और संगीत का सुन्दर वातावरण छा जाता था । मीराबाई को गायन तथा नृत्य का ज्ञान था । जिस प्रकार उच्च काव्य का जन्म अनुभव से होता है उसी प्रकार जब संगीत–साधना आत्मानंद के समय की जाती है, तब अनुपम आनन्द मिलता है । मीरा का लक्ष्य एक ही था, और वह था– अपने प्रियतम कृष्ण का रजन कर उनको प्राप्त करना । वह अपने प्रियतम के लिये गाती थी और नृत्य करती थीं । उनकी सारी साधना केवल श्रीकृष्ण के लिये ही थी । उनकी इस

संगीत मय भक्ति ने उन्हें मोक्ष दिलाया और अनेक लोगों को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग, संगीत के माध्यम से , प्रशस्त किया । मीराबाई ने अपने सुरों की मोहिनी शक्ति से चक्रधारी भगवान को भी वश में कर लिया था और पल–आनन्द–तत्व में लीन हो गई । वह जानती थी कि 'आत्मानंद' के लिये आवश्यक है कि अपने हृदय की कोमल भावनाओं की निष्पत्ति केवल 'सुर' की कसक से ही व्यक्त की जा सकती है, क्योंकि भक्ति–भावपूर्ण इस गायन मे मानव की आत्मिक भावनाएँ भौतिक लोक से परे एक ऐसे लोक में पहुँच जाती हैं जहाँ केवल शिव है, सुन्दर है और सत्य का शाश्वत स्वरूप है । जहाँ पहुँचकर भक्त फिर इस माया–मोह से घिरे हुए संसार में आनें की इच्छा ही नहीं करता है । मीरा इसी प्रकार के संगीत को अपनाकर तन्मयी भाव की स्थिति में पहुँच गई थीं ।

मीरा ने अपने भाव को संगीत की पीठिका में बैठाया क्योंकि ईश्वर तक पहुँचने का यही सुगम और सत्य मार्ग था । उन्होंने अपने 'दर्द' को, अपने 'प्रेमोन्माद' को स्वरों के माध्यम से निकाला इसीलिये मीरा के पदों में आज भी संगीत की अजस्र धारा प्रवाहित हो रही है ।

संगीत में भक्ति भावना की प्रतिष्ठा

हमारा संगीत प्रारम्भ में ईश स्तुति में प्रयुक्त होता था अतः उसका साहित्य भी ईश अराधना के शब्दों और भावों को सँजोये रखता था किन्तु कालान्तर में विदेशी आक्रमणों–साम्राज्य स्थापना आदि राजनैतिक उथल–पुथल का काल इतना लम्बा चला जिससे संस्कृति, संगीत सभ्यता सभी प्रभावित हुई । संगीत ईशस्तुति के स्थान पर बादशाहों को प्रसन्न करनें का साधन बन गया और उसके साहित्य में चाटुकारिता, विलासता और अश्लीलता ने अपना साम्राज्य फैला लिया । महान सगीतज्ञ स्वामी हरिदास के अतिरिक्त मीराबाई ने भी संगीत के साहित्य में भक्तिपूरक शब्दों का प्रयोग कर पुन. संगीत को आराधना योग्य बनाने में अपना अप्रतिम योगदान दिया है । मीरा तो श्रीकृष्ण की प्रेम दीवानी थी उनका सम्पूर्ण काव्य उन्हीं का समर्पित था अतः उसमें विलासता, अश्लीलता आदि का तो स्थान असंभव ही था । उनके गेय पदों

में तो मात्र भक्ति की निर्मल धारा प्रवाहित होती थी जिसने ना कवल उस युग के लोगों को अपितु आज भी अनेक लोगां को भक्ति–भावना का सचार किया है और संगीत को समाज में आदरणीय स्थान दिलाया है–

मनवा राम–नाम रस पीजै
तज कुसंग सत्संग बैठनित, हरि चर्चा सुन लीजे ।।
काम क्रोध मद लोभ मह को, बहा चित्त से दीजे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, वाही के रंग में भीज ।।

मन रे, परसि हरि के चरण ।
सुखद शीतल परम कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
दासि 'मीरा' लाल गिरिधर, अगम तारण तरण ।।

मीरा के अतुलनीय सांगीतिक योगदानों के कारण वह सदैव साधकों के हृदय में अमर रहेंगी ।

अध्याय चतुर्थ

उत्तर भारत में प्रचलित प्रमुख गायन शैलियों में विशिष्ठ महिला कलाकारों का परिचय एवं सांगीतिक योगदान

उत्तर भारत में प्रचलित प्रमुख गायन शैलियों में विशिष्ट महिला कलाकारों का परिचय एवं सांगीतिक योगदान

ध्रुपद गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार

गायन शैली का परिचय

ध्रुवपद शैली– पन्द्रहवीं शताब्दी से प्रचलित 'ध्रुवपद' गायन शैली का अविष्कार राजा मानसिंह के द्वारा माना जाता है । ध्रुवपद की संरचना में बैजूबावरा, चरजू भगवान, धोन्दू रामदास (मानसिंह के दरबारी गायक) का भी सहयोग रहा है । ध्रुव का अर्थ है निःश्चल तथा चिर स्थायी । इस प्रकार ध्रुवपद वह है जिसमें पद, ध्रुव अर्थात् निश्चित ताल के साथ निबद्ध हों । ध्रुवपद शब्द का अपभ्रन्श रूप ध्रुपद कहलाता है । 'अनूप संगीत रत्नाकर' ने ध्रुवपद की व्याख्या इस प्रकार की गई है–

गीर्वाणमध्यदेशीय भाषा साहितय राजितम् ।
द्विचतुर्वाक्यसंश्पन्नं नर नारी कथाश्रयम् ।।
श्रृंगाररसभावाद्यं रागालापपदात्मकम् ।
पादातानुप्रासयुक्तं पादानयुगकं चवा ।।
प्रतिपादं यत्र बद्धमेवं पाद चतुष्टयम् ।
उद्ग्राह ध्रुवकाभोगांतरं ध्रुवपदं स्मृतम् ।।

ध्रुवपद की बंदिशें मुख्यत हिन्दी एवं ब्रज भाषा में होती हैं । ध्रुवपद गायन का स्वर, शब्द शुद्ध तथा स्थिर रहता है । इसकी गायिकी गम्भीर और ओजपूर्ण है इसलिए गम्भीर प्रकृति के राग यथा– भैरव, हिंडोल तथा मालकोष आदि ध्रुवपद गायन हेतु उपयुक्त रहते हैं । ध्रुवपद गायन में नोम–तोम के आलाप के बाद स्थायी, अन्तरा, सचारी, आभोग विभिन्न लयकारियों द्वारा

प्रदर्शित किया जाता है । लयकारी की समाप्ति सुन्दर ढंग से तिहाइयों द्वारा की जाती है । 'गमक' इस गायन शैली की प्रमुख विशेषता है । इसमें मुर्की, गिटकरी, जमजमा, कण इत्यादि का प्रयोग नहीं होता है । यह वीर तथा अद्‌भुत रस प्रधान शैली है । यह गायन शैली मुख्यत. चार ताल, ब्रह्म ताल, सूल ताल, रूद्र ताल, झम्पा ताल, लक्ष्मी ताल तथा मोहन ताल आदि में गायी जाती है । झप ताल में भी ध्रुपद गायन किया जाता है किन्तु उसे 'सादरा' कहा जाता है । ध्रुवपद गायन शैली में ताल ज्ञान एवं उस पर पूर्ण नियत्रण के अभाव में गायन प्रस्तुत करना असंभव है ।

पूर्व काल में ध्रुवपद गायकों को कलावन्त कहते थे । धीरे–धीरे ध्रुवपद गायकों के भेद उनकी चार वाणियों के अनुसार किये जाने लगे । उन चार वाणियों के नाम इस प्रकार हैं– (1) गोबरहार वाणी अथवा शुद्धवाणी (2) खंडहार वाणी

(3) डागुर वाणी तथा (4) नौहर वाणी ।

यही वाणियॉ ध्रुवपद की 'बानियों' के रूप में प्रसिद्ध है । 'मआदनुलमूसीकी' नामक ग्रन्थ के प्रणेता हकीम मुहम्मद करम इमाम ने उक्त चार वाणियों के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं – 'अकबर बादशाह के दरबार में उस समय चार महागुनी रहते थे – (1) तानसेन (2) ब्रजचन्द ब्राह्मण (डागुर गॉव के निवासी) (3) राजा समोखन सिंह वीणाकार (खण्डहार नामक स्थान के निवासी) (4) श्री चन्द राजपूत (नोहार के निवासी)। अकबर के समय में इन चारों के द्वारा चार वाणियॉ प्रसिद्ध थीं । तानसेन के गौड ब्राह्मण होने से उनकी वाणी का नाम गौड़ीय अथवा 'गोबरहारी' पड गया । प्रसिद्ध वीणाकार समोखन सिंह का विवाह तानसेन की पुत्री के साथ होने के कारण उनका नाम नौबाद खॉ निश्चित हुआ । नौबाद खॉ का निवास स्थान खण्डहार था, इसीलिए इनकी वाणी का नाम 'खण्डहार वाणी' हुआ । ब्रजचन्द के निवास स्थान के नामानुसार उनकी वाणी का नाम 'डागुर वाणी' हुआ । राजपूत श्रीचन्द, नोहार के निवासी थे इसलिए उनकी वाणी का नाम 'नोहार वाणी' प्रसिद्ध हुआ ।'

वर्तमान समय में भी ध्रुवपद शैली में कई कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं । गम्भीर, जोरदार तथा मर्दानी आवाज के उपयुक्त इस गायन शैली मे कई महिला कलाकारों ने भी अपनी प्रतिभा एवं साधना से महारथ प्राप्त की है और इस शैली की प्रतिष्ठित गायिका होने का गौरव प्राप्त किया है ।

धमार– धमार, धमाल (उछल–कूद) शब्द से उद्धृत बताया गया है । जो पद धमार ताल में निबद्ध गाया जाता है उसे 'धमार' की संज्ञा दी जाती है । लयकारी और बोल बॉट इस शैली की विशेषता होता है । इसकी बंदिशों में ब्रज भाषा का बाहुल्य परिलक्षित होता है । धमार में विभिन्न राग वाचक धुनों का प्रयोग कर विविधता उत्पन्न की जाती है । धुनों की यही विविधता बोल तानों की उत्पत्ति का कारण बनती है । धमार में दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा बोल बॉट के माध्यम से गायन प्रस्तुत किया जाता है । इसमें लयकारी का विशेष महत्व है ।

धमार गायन शैली में अधिकांशतः 'होरी' का चित्रण रहता है बल्कि यह कहा जाय कि, होरी को ध्रुवपद अंग से धमार ताल में निबद्ध करके गाया जाय तो वह 'धमार' कहलाता है, तो अधिक उपयुक्त होगा । किन्तु ध्रुवपद जहॉ गम्भीर प्रकृति का होता है वहीं धमार, चंचल प्रकृति की शैली है और प्रायः इसे सभी रागों में गाया जा सकता है । ध्रुवपद की अपेक्षा धमार में आलाप बहुत ही कम होती है । यह श्रृंगार रस प्रधान शैली है और इस शैली में मींड तथा गमक का प्रयोग प्रचुरता से किया जाता है ।

यह शैली एक प्रमुख शैली के रूप में गायी न जाकर ध्रुवपद गायन के बाद गायी जाती है अतः ध्रुवपद शैली के कलाकार ही धमार भी गाते हैं ।

ध्रुवपद शैली की गायिकाओं का परिचय एवं सांगीतिक योगदान

बाई नार्वेकर

ध्रुवपद–धमार शैली में सम्पूर्ण दक्षता एवं अधिकार पूर्वक गायन प्रस्तुत करने वाली गायिका, बाई नार्वेकर हैं न इस क्लिष्ट तथा पुरूष कण्ठ योग्य कही जाने वाली गायन शैली को स्त्रियाँ भी कुशलता पूर्वक गा सकती हैं, यह उदाहरण समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है ।

कारवार जिले के अकोला नामक शहर में सन् 1905 में श्री सुब्बराव नाडकर्णी और श्रीमती सुभद्राबाई की पुत्री रूप में बाई नार्वेकर ने जन्म लिया इनकी माता सुभद्राबाई भी ध्रुवपद–धमार शैली की ही प्रसिद्ध गायिका थीं अतः सर्वप्रथम माता के द्वारा ही उन्होंने संगीत शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ किया । बाद में स्व0 बालकृष्ण बुआ, मोहम्मद खॉ, नत्थन खॉ तथा शालिगराम बुआ जैसे उच्च कोटि के संगीतज्ञों से शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ किन्तु विशेष रूप से संगीत साधना श्री विलायत खॉ के निर्देशन में बाई नार्वेकर जी ने बारह वर्षों तक की । यही कारण है कि वह जो भी गाती हैं उसमें उस्ताद विलायत खॉ की गायकी की स्पष्ट छाप दिखती है ।

वर्षों तक नियमित साधना से दमदार आवाज तथा विशिष्ट प्रभावशाली गायकी से बाई नार्वेकर शीघ्र ही लोकप्रिय कलाकार के रूप में स्थापित हो गयीं । देश के लगभग सभी महत्वपूर्ण सांगीतिक शहरों बाई नार्वेकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है । एक–एक स्वर की क्रमशः बढत करते हुए प्रभावशाली आलाप और क्लिष्ट लयकारी इनकी कठिन साधना की परिचायक रहीं । बाई नार्वेकर ने अपनी कला अगली पीढी को हस्तांतरित करते हुए अपने शिष्य शिष्याओं को भी बडो लगन से शिक्षा प्रदान की । उनकी शिष्या शालिनी नार्वेकर ने संगीत समाज मे प्रतिभाशाली गायिका के रूप में ख्याति अर्जित की ।

पुरूष प्रधान क्लिष्ट गायन शैली ध्रुपद–धमार की एक सधी हुई उच्च स्तरीय गायिका के रूप में बाई नार्वेकर का नाम संगीत समाज में सदैव सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा ।

असगरीबाई

उ0 अल्लादिया खॉ संगीत अकादमी की सम्मानित सदस्या होने के साथ–साथ आकाशवाणी छतरपुर की इलाहाबाद की सदस्य देश की जानी–मानी ध्रुवपद शैली की उत्कृष्ट गायिका, 'असगरी बाई' के नाम पर पूरा समाज श्रद्धान्वत हो जाता है ।

बुन्देलखण्ड राज दरबार की राज्य गायिका असगरीबाई दरबार समाप्ति के बाद बहुत ही मुश्किल दिनों में अपनी संगीत कला और स्वयं को बिखरने से बचाय रखा । पुरूष कण्ठ के उपयुक्त ध्रुवपद गायन शैली को असगरीबाई पूर्ण कुशलता से प्रस्तुत करती रहीं हैं । दमदार आवाज़, गहन आलाप, विचित्र लयकारी द्वारा उनकी सघन साधना का परिचय मिलता था ।

ध्रुवपद के अतिरिक्त बुन्देलखण्डी शैली में ठुमरी, दादरा, रसिया, पद, भजन तथा लोकगीतों की भावपूर्ण प्रस्तुति में असगरी जी पूर्ण निपुण रहीं हैं । पूरे देश में विलक्षण सांगीतिक बुद्धि रखने वाली कुशल गायिका के रूप में जानी जाने वाली इन कलाकार ने अपने दृढ आत्म विश्वास और गहन साधना के बल बूते पर इस क्लिष्ट गायन शैली में वह मुकाम प्राप्त किया जिसे हर कोई सम्मान, आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता है ।

संगीत की क्लिष्ट गायन शैली ध्रुवपद में उनके महत्वपूर्ण योगदानों के लिए संगीत समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

सुमति मुटाटकर

हमारे संगीताकाश में अनेक ऐसे नक्षत्र हैं जिनकी चमक से विश्व को प्रकाश मिलता है । ऐसी ही एक दैदीप्यमान नक्षत्र है श्रीमती सुमति मुटाटकर । जिन्होंनें संगीत को किसी एक ही क्षेत्र से पुष्ट नहीं किया बल्कि संभव हर पक्ष को उन्होंनें अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से संपुष्ट किया है । ध्रुवपद–धमार जैसी क्लिष्ट गायन शैली की सिद्धस्थ गायिका श्रीमती मुटाटकर अन्य गायन शैलियो में कुशल होने के साथ ही संगीत के शास्त्र पक्ष को भी अपने अमूल्य विचारों से सबल किया है ।

डा0 सुमति मुटाटकर का जन्म मध्य प्रदेश के बाला घाट नामक स्थान पर 10 सितम्बर 1916 को एक संभ्रात मराठी परिवार में हुआ । सुमति जी के पिता श्री गगाधर राव जनार्दन पेशे से न्यायाधीश थे किन्तु एक कुशल सितान वादक भी थे । स्वाभिक है कि उनके घर में संगीत विद्वानों का आना–जाना रहता था । इस सांगीतिक वातावरण का प्रभाव सुमति जी पर बचपन से पड़ा । नागपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मात्र 18 वर्ष की आयु में इनका विवाह श्री विश्वनाथ लक्ष्मण मुटाटकर से हुआ जो अत्यन्त प्रगतिशील मांसिकता के व्यक्ति थे । उनके सहयोग एवं प्रोत्साहन के कारण सुमति जी न गृहस्थी के सभी कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए नागपुर में अपनी संगीत साधना जारी रखी । 1943 में संगीत की विधिवत् शिक्षा प्राप्त करने हेतु वह लखनऊ में पं0 एस0 एन0 रातान्जन्कर के पास आयी ।

संगीत विद्यापीठ लखनऊ से संगीत विशारद, संगीत निपुण तथा सांगीताचार्य की उपाधियाँ प्राप्त करने के साथ ही साथ सुमति जी ने स्वंगीय रातान्जन्कर जो से शास्त्रीय गायन की लगभग सभी विधाओं का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया और उन्हीं के सुयोग्य निर्देशन मे 'भारतीय संगीत का सांस्कृतिक पक्ष' विषय पर शोध कार्य किया । इसी समय उन्होंनें प्रकाण्ड प0 गायक स्व0 राजा

भइया पूंछवाले से ग्वालियर घराने के ख्याल गायिकी, टप्पा, ठुमरी तथा गीत गोविन्द के प्रबन्ध आदि के प्रस्तुतिकरण की तालीम भी प्राप्त की । आगरा घराने के उ0 विलायत खॉ साहब से भी ख्याल एव ध्रुवपद–धमार गायन की बारीकियत सीखी । स्व0 पं0 अनन्त मनोहर जोशी एवं उ0 मुश्ताक हुसैन खॅ साहब से कई बंदिशें सीखीं । इस प्रकार सुमति जी ने अपने गायन को किसी एक घराने में सीमा बद्ध न करके, अलग–अलग घरानों के सगीत मनीषियों से विद्या प्राप्त कर अपने सगीत कोष को विस्तृत और समृद्ध किया ।

आकाशवॉणी एवं दूरदर्शन के अनेक कार्यक्रमों एवं संगीत सम्मेलनों में गायन प्रस्तुत करने के अतिरिक्त देश–विदेश के विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपने कुशल एवं सधे हुए गायन द्वारा श्रोताओं को आल्लहादित किया । विभिन्न अधिकारी पदों को सुशोभित करके भी सुमति जी ने अपनी सेवायें संगीत को अर्पित की हैं । सर्वप्रथम 1953 से 1958 तक आकाशवॉणी में संगीत निर्देशिका, 1965 से 1968 तक डिप्टी चीफ प्रोड्यूसर संगीत (आकाशवॉणी), 1968 से दिल्ली विश्वविद्यालय से संगीत विभाग में रीडर पद से क्रमशः प्रोन्नत होते हुए विभागाध्यक्षा एवं डीन के महत्वपूर्ण दायित्वों को पूर्ण कुशलता से निभाया है । इस दौरान आप दिल्ली विश्वविद्यालय के एकेडमिक और एग्जीक्यूटिव कौंसिल की सदस्या भी रहीं । इनके संगीत विषयक अनेक लेख देश–विदेश के विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं । संगीत नाटक अकादमी से यह जुड़ीं हैं तथा इसकी जनरल कौंसिल की सदस्या भी रह चुकी हैं । श्रीमती मुटाटकर 'सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण–केन्द्र' द्वारा स्कूल तथा कालेजों के छात्र–छात्राओं में भरतीय संस्कृति व संगीत के प्रचार हेतु बनायी गयी योजनाओं से अभिन्न रूप से जुड़ी हैं ।

इतनी लम्बी एवं सफल संगीत यात्रा के बाद आज भी श्रीमती मुटाटकर नियमित संगीत साधना पर विशेष बल देती हैं और स्वयं भी नियमित अभ्यास करती हैं । संगीत विषय में ज्ञान बढाने के लिये वह "संस्कृत" भाषा के ज्ञान को

आवश्यक मानती हैं । संगीत को जन–मानस में फैलाने की इच्छा रखनें वाली डॉ सुमति मुटाटकर आज भी संगीत के क्षत्र में अपनें गायन तथा शास्त्र ज्ञान के माध यम से नयी पीढ़ी का मार्ग दर्शन कर रही है । अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित श्करनें वाली सुमति जी आज भी इसी क्षेत्र को कुछ और संवर्धित करनें में ही जुटी हैं । आज सचमुच हमारा संगीत ऐसी ही महान विभूतियों की वजह हैं आज विश्व में अपनी पहचान बना चुका है । ईश्वर करे कि श्रीमती मुटाटकर हम सभी का लम्बे समय तक मार्ग दर्शन कर ।

ख्याल गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार

गायन शैली का परिचय

ख्याल

मूलतः फारसी भाषा से उपजे शब्द 'ख्याल' का भावार्थ ही विचार या कल्पना है । अतः राग के नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा एवं कल्पना के अनुसार आलाप–तान करते हुए, गायक के विविध भावों को प्रगट करने वाली गायन शैली ही 'ख्याल' कहलाती है ।

जब लोग ध्रुवपद गायन शैली की शास्त्रीयता एवं शुद्धता से ऊब गये तब ख्याल शैली का अविष्कार हुआ । वास्तव में ख्याल गायन शैली विभिन्न गायन शैलियों का अद्भुत, सुन्दर सम्मिश्रण है जिसमें ध्रुवपद शैली से आलाप, ठुमरी से बोलबनाव, टप्पा शैली से तानों का मिश्रण ख्याल शैली की निजी विशेषता को ध्यान में रखते हुए किया गया है यही कारण है कि आज ख्याल गायन शैली सर्वाधिक लोकप्रिय । इसकी लोकप्रियता का एक अन्य प्रमुख कारण यह भी है कि इसमें कभी एकरसता नहीं आने पाये समय की मॉग के अनुसार इस लचीली शैली के सदैव नये रंग भरते गये । एक समय था जब विलम्बित लय में ख्याल गायन का रिवाज ही नहीं था किन्तु उ0 अमीर खॉ ने विलम्बित लय में गायन के अपने नवीन प्रयोग से इसमें शैली के नये रंग और खूबसूरती को जन्म दिया । ख्याल गायन के विभिन्न घरानों में किसी में स्वरों की क्रमिक बढत करते हुए आलाप को महत्व दिया गया तो किसी में बोलबनाव को तो किसी में तानों की तैयारी और विविधता का महत्व दिया गया । हर गायक अपनी निजी स्वभाव के अनुसार ख्याल शैली को प्रस्तुत करता है । ख्याल शैली के इस लचीलेपन में श्रोताओं को ऊबने नहीं दिया और लगभग दो सौ वर्षों से प्रचलित ये शैली आज भी अपनी लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष पर विराजमान है ।

ख्याल गायन शैली के गीतों में श्रृंगार रस, शान्त रस एवं करूण रस की प्रधानता रहती है । इनकी भाषा मुख्यत. हिन्दी, ब्रज, अवधी होती है । विलम्बित द्रुत ख्याल एवं मध्य लय में भी ख्याल गायन प्रस्तुत किया जाता है । प्रारम्भ आलाप से फिर क्रमशः बन्दिश, बोलआलाप, स्वरबॉटा, बोलबॉट (बहलावा) और तानें गायी जाती हैं । बन्दिशें विभिन्न तालो यथा – एकताल, तीनताल, झपताल, रूपक, सूलताल, आडाचारताल, तिलवाडाताल, झूमराताल आदि में निबद्ध रहती है । ख्याल गायन में राग की शुद्धता एवं भाव सम्प्रेषण का महत्व रहता है ।

ख्याल गायिकी के लिए प्रथम प्रयास अमीर खुसरो ने 1251–1325 ई0 में किया । उनके पश्चात जौनपुर के शासक हुसैन शर्की, बाजबहादुर, चंचल सेन, चॉद खॉ, सूरज खॉ आदि संगीतज्ञों ने भी इस गायिकी का मार्ग प्रशस्त करने का सत्प्रयास किया किन्तु अपेक्षित सफलता नहीं मिली । नियामत खॉ– 'सदारंग' ने इस पर गहराई से सोचा और निष्कर्ष निकाला कि जब तक ख्याल की बन्दिशों में वो बादशाह का नाम नहीं डालेगें, बादशाह उसमें रूचि नहीं रखेंगे । अतः उन्होनें बन्दिशों में अपने बादशाह का नाम 'सदारंगीले मोहम्मदशाह' देना शुरू किया जिससे बादशाह अबन्दिशों पर प्रसन्नता व्यक्त की है और देखते ही यह गायन शैली सभी को आकर्षित करते हुए अतिशय लोकप्रिय हो गयी ।

नियामत खॉ ने स्वयं कभी भी ख्याल नहीं गाया और ना ही अपने वंशजों को सिखाया किन्तु दरबारी गायकों, ढाढी मिरासियों को इस शैली की विशिष्ट शिक्षा देकर सुदक्ष बनाया और इस प्रकार यह शैली प्रचलित हुई । रियासत काल में नवाबों की छत्र छाया में भारतीय संगीत की ख्याल शैली क्रमशः उचित पोषण पाकर पुष्पित–पल्लवित होती गयी और जन प्रिय हुई । विभिन्न रियासतों की उदारता एवं सहायता से विकसित ख्याल गायकी के अनेक घराने रियासतों के नाम पर, ग्वालियर, आगरा, किराना, जयपुर, रामपुर, दिल्ली, पटियाला, बनारस आदि के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

ख्याल गायन शैली की गायिकाएँ

पूर्वाद्ध आधुनिक काल की ख्याल गायिकाएँ

ताराबाई शिरोडकर

सुश्री ताराबाई शिरोडकर का नाम संगीत जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । 1859 ई0 में गोआ के शिरोडा नामक स्थान पर अन्मी प्रतिभाशाली गायिका की संगीत शिक्षा सोलह वर्ष की आयु से तत्कालीन सुविख्यात संगीत श्री रामकृष्ण बुआ वझे के निर्देशन में आरम्भ हुई । कुछ समय उनसे शिक्षा ग्रहण करने के बाद ताराबाई ने महान संगीतज्ञ भास्कर बुआ बखले जी से भी गहन तालीम ग्रहण की ।

इन्दौर नरेश महाराजा तुकोजीराव होल्कर की राज्य गायिका के रूप में अपनी संगीत सेवाएँ अर्पित करते हुए, उन दिनों के सुप्रसिद्ध कलावन्त नत्थन खॉ के बडे पुत्र मुहम्मद खॉ से भी गायन कला के कुछ गुण ताराबाई ने आत्मसात् किये ।

प्रथम महायुद्ध के समय अंग्रेज सरकार ने युद्ध के लिये धन एकत्र करने के दृष्टिकोण से अनेक साधनों का प्रयोग किया था जिसमें संगीत कार्यक्रमों द्वारा धनार्जन प्रमुख साधन था । इन कार्यक्रमों में ताराबाई को कई बार मंच पर अपनी कला प्रदर्शन का अवसर मिला जिससे उनकी कला में विशेष चमक आई । 1946 में भास्कर बुआ बखले जी की निधन तिथि पर प्रथम बार बम्बई आकाशवाणी केन्द्र से गुरू को श्रृद्धांजलि अर्पित करने के रूप में ताराबाई शिरोडकर का गायन प्रसारित किया गया । यह कार्यक्रम श्रोताओं ने अत्यधिक पसंद किया और फिर श्रोताओं की विशेष मॉग पर आकाशवाणी द्वारा उनके कई कार्यक्रम कराये गये और कुछ रिकार्ड भी तैयार करके रखे गये ।

स्व0 ताराबाई शिरोडकर की कला साधना, संगीत साधको को सदैव प्रेरित करती रहेगी ।

अंजनी बाई मालपेकर

सुनामधन्य गायिका स्व० अंजनी बाई मालपेकर का जन्म २२ अप्रैल सन् १८८३ को गोआ में हुआ था। संगीतज्ञ परिवार में जन्मी अंजनीबाई की संगीत शिक्षा अनके जीवन के आठवें वर्ष से ही पं० विष्णु नाराण भातखण्डे जी की देखरेख में मुरादाबाद वाले उ० नजीर खॉ जी के शिष्यत्व में प्रारम्भ हुई। पलटे तथा अंलकार तैयार कराने के बाद गुरू नजीर खॅा ने तीन वर्षो तक प्रतिदिन केवल राग यमन का ही अभ्यास कराया और उसके बाद दो वर्षो तक भैरवी की साधना करायीं उनका कहना था कि " उपरोक्त दोनों रागों के अभ्यास से बारहों स्वर सध जाते है। फिर कोई भी राग गाना मुश्किल नहीं रह जाता । " इस प्रकार अपनी शिक्षा के कंठ में बाटते स्वर तदोपरान्त दस–पन्द्रह वर्षो तक विभिन्न रागों की तालीम दी। खॅा साहब के कड़े अनुशासन में सतत् अभ्यास से अंजनीबाई के गले में जो जादू उत्पन्न हुआ कि श्रोताओं को वह आज भी भूल नहीं सका है।

बचपन में भातखण्डे जी द्वारा स्नेह में सोनचिरैया कहलाने वाली अंजनीबाई ने अपनी सोलह वर्ष की उम्र में जब मुम्बई में पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया तो सारे संगीत जगत में एक सनसनी सी फैल गई और पहले ही कार्यक्रम से बाई जी ने अपनी शख्शियत का एहसास करा दिया।

इसके बाद तो उनके सांगीतिक कार्यक्रमों का सिलसिला चल पडा । नेपाल, गुजरात, कच्छ, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, सौराष्ट्र तथा पंजाब आदि कई प्रान्तो के विभिन्न सांगीतिक जलसों में बाईजी ने अपनी विलक्षण गायन प्रतिभा से श्रोताओं को आकष्ठ तृष्ट किया।

उस समय राजा नवाबो आदि के यहॉ गाने की महफिले सजाने का चलन था। ऐसी ही अनेंक महफिलो में बाईजी को भी निमन्त्राण दिया गया तो उन्होनें वहॉ भी गायन प्रस्तुत किया किन्तु दुर्भाग्यवंश उन्हें कुछ महफिलों में बड़े ही कटु अनुभव हुए जिससे दुखी होकर उन्होने फिर कभी इस प्रकार की महफिलो में ना गाने का निर्णय ले लिया। हॉ खुले जलसों में गायन प्रस्तुत करती रहीं। ऐसे ही एक जलसे में रात भर गानें के बाद बाई जी की आवाज अचानक ही बैठ गई। हालत यह हो गई कि बोलना भी दुष्कर हो गया फिर गाना तो दूर की बात है। कई बैद्य डॉक्टर से इलाज कराया गया किन्तु लाभ कुछ नहीं हुआ।

तब कुछ आस्थावन शुभचिंतकों ने उन्हें श्री नारायण महाराज जी के पास जाकर उनका आर्शिवाद लेने की सलाह दी। उनलोगो का पूर्ण विश्वास था कि महाराज जी के कृपा से बाई जी की आवाज निश्चय ही पूर्ववत हो जाएगी। यद्यपि बाई जी को ऐसी बातों पर विश्वास नहीं होता था। तथपि सम्बन्धियों के आग्रह से वो मान गई। महाराज जी की उम्र उस समय १३—१४ वर्ष की ही थी। बाई जी हाल सुनने के बाद महाराज जी बोले कि आवाज तो ठीक हो जाएगी किन्तु मेरी एक शर्त है कि बाई जी को मुझे गाना सुनाना होगा हुआ भी वही। नारायण महाराज जी के प्रसाद से बाईजी की आवाज एकदम ठीक हो गई फिर तो बाई जी की महाराज जी पर ऐसी अटूट श्रद्धा हुई कि वो जीवन पर्यन्त समाप्त नहीं हुई जब भी महाराज जी मुम्बई में रहते थे तब बाई जी उन्हें पॉच छः घटें भजन तथा कीर्तन सुनाया करती थी, ऐसी थी उनकी श्रद्धा भावना।

कुछ समय बाद उन्होने जलसों में भी गाना छोड़ दिया। उनका हृदय अब ईश्वराधना की ओर उन्नमुख हो रहा था। आवश्यकता भर का धन उनके पास था ही अतः पैसो के लिये जलसों में गाना उनकी

मजबूरी नहीं थी हालाकि एक समय उन पर ऐसा थी आया जब उन्हें उनकी अत्यधिक आवश्वकता आन पडी तथपि उन्होंने जलसों में ना गाने का व्रत खण्डित नहीं किया। इतना होने पर भी जब भी कोई श्रेष्ठ कलाकार मुम्बई तो उनका कार्यक्रमों बाई जी जरूरी करवाती थी और कलाकार को सम्मानित करती थी इसके अलावा यदि कोई सच्ची भावाना से उनसे कुछ सीखना चाहता था तो बाईजी खुले ह्रदय से उसे सिखती भी थी। उनकी संगीत साधना ऐसी थी कि बड़े कलाकार भी उनसे कुछ न कुछ प्रसाद रूप से अवश्य सीखना चाहते थे और सीखकर खुद को गौरवान्वित भी समझते थे। सुप्रसिद्ध गायिका किशोरी अमोणकर ने भी उनसे संगीत रूपी प्रसाद ग्रहण किया है।

. संगीत नाटक अकादमी की प्रथम सम्माननीय सदस्या रही बाई जी के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आए कभी सम्पन्नता तो कभी विपन्नता लेकिन बाई जी ने कभी भी अपने जीवन के सिद्धान्तों के पालन तथा सभी परिस्थितियों का सामना बड़ी ही हिम्म्त के साथ किया।

जीवन के उत्तरार्द्ध में बाई जी का स्वस्थ खराब हरने लगाा। कुमार गंधव्र, किशोरी अमोनकर तथा बई जी के शिष्य टी०डी० जानोरीकर ने दइवओं के माध्यम सेबाई जी को अस्वास्थ से लड़ने में सहयोग करते हरे , तथापि होनी को कौन टाल सकता है। ७ अगस्त सन् १९७४ को इन महान संगीत साधिका का स्र्वगवास हो गया।

'सादा जवीन उच्चविचार' की कहावत को अपने सम्पूर्ण जीवन में चरितार्थ करने वाली अजनी बाई को संगीत के प्रति भक्ति भावना का बोध इस घटना से ही हो जाता है। कि उनके तानपुरे को बड़े –बड़े रईस तथ संगीतज्ञ अच्छी रकम देकर खरीदना चाह रहे थे किन्तु बाई

जी अपनी संगीत साधना के साधन को बेचना नहीं चाहती थी। भला कोई भक्त अपनी भक्ति को भी बेच सकता है। हॉ उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनका तानपुरा राष्ट्रीय संग्रहालय में रखा जाय। ऐसी थी उनकी भावना सिद्धान्तकारी, सदरचरित्रा तथा अद्‌भुत संगीत साधिका का सम्पूर्ण जीवन हम सभी के लिये आदर्श है।

केसरबाई केरकर

हिन्दुस्तानी संगीत में ख्याल गायन शैली में एक आदर्श स्थापित करने वाली, उत्तर भारतीय संगीत की सशक्त स्तम्भ स्व0 केसरबाई करकर एव उनके सांगीतिक योगदानों की चर्चा के बिना मेरा शोध ग्रन्थ नितान्त अपूर्ण ही रह जायेगा । संगीत सीखने की तीव्र उत्कठा लिये साधको में यदि सच्ची लगन होती है तो वह मार्ग मे आने वाली तमाम बाधाओं को पारकर अपना लक्ष्य प्राप्त ही कर लेते हैं, इस कथन को शत्–प्रतिशत चरितार्थ किया है। केसरबाई केरकर का जन्म सन् 1892 ई में गोआ के 'केर' ग्राम में हुआ । आठ वर्ष की अल्पायु में ही कोल्हापुर में आपकी संगीत शिखा का श्री गणेश किराना घराने के प्रतिनिधि गायक खाँ साहब अब्दुल करीम खाँ के द्वारा हुआ । गायन सीखने की यह अवधि लगभग एक वर्ष चली जिसमें आपने विभिन्न अलंकारों की साधना की तथा कई बंदिशें भी सीखीं । किन्तु साल भर बाद ही सगीत–साधना का यह क्रम खण्डित हो गया क्योंकि केसरबाई कोल्हापुर से गोआ आ गईं । गोआ के निकट पं0 रामकृष्ण बझे आ गये । अतः आपने लगभग तीन वर्षों तक उनसे भी शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया । इसके बाद प0 रामकृष्ण बझे को बादौंर गांव में एक जमींदार के यहाँ नौकरी मिल गई । अतः अपनी संगीत–साधना जारी रखने के लिये केसरबाई भी उनके पास चली गईं । सन् 1908 ई0 के लगभग केसरबाई बम्बई चली गईं जहाँ उन्हे सुप्रसिद्ध संगीतज्ञों से सीखने का अवसर भी प्राप्त हुआ किन्तु आपका दुर्भाग्य यही रहा कि किसी भी गुरु से आपकी शिक्षा नियमित रूप से नहीं चल सकी । अपनी इस अस्त–व्यस्त संगीत शिक्षासे दुःखी होकर आपकी संगीत शिक्षा प्राप्त करने की लालसा कम न हुई अपितु आपका सगीत सीखने का निश्चय और भी दृढ होता गया । प्रारम्भ से ही आपको अल्लादिया खाँ साहब से सीखने की प्रबल इच्छा थी किन्तु खॉ साहब आपको अपनी शिष्या बनाने के लिये कतई राजी न थे । इन सभी कारणों से आप इतनी दुःखी हो गईं कि उससे शरीर भी प्रभावित होने लगा । आपकी ऐसी दशा देखकर बम्बई के सेठ विट्ठलदास ने

आश्वासन दिया कि वह खाँ साहब को आपका गुरु बनने के लिए अवश्य मना लेंगे । सेठ जी के आग्रह पर खाँ साहब राजी तो हुए लेकिन लिखित शर्तों के साथ । खॉ साहब की शर्तें थीं –– तालीम लगभग दस वर्षों तक चालू रहेंगी । वेतन के रूप में एक निश्चित रकम देनी होगी । अस्वस्थ रहने पर या किसी कार्य वश यदि वे सिखा न पायें तो उन दिनों की भी पूरी तनख्वाह देनी पड़ेगी तथा बम्बई छोडकर कहीं बाहर जायेंगे तो वो जहॉ भी रहेंगे वहीं आकर तालीम हॉसिल करनी पड़ेगी ।

केसरबाई ने खाँ साहब की सभी शर्तें सहर्ष स्वीकार कर लीं फिर उनकी गंडा–बंध शिष्या बनीं । फिर शुरू हुआ नौ–नौ घण्टों का नियमित अभ्यास । जितनी लगन से खाँ साहब सिखाते थे आप उसकी दुगनी लगन से अभ्यास करती थीं । इस प्रकार धीरे–धीरे आपके गले में जयपुर घराने की सभी विशिष्टतायें प्रगट होने लगीं । निर्दोष, खुली हुई आवाज़, तीनों सप्तकों में आवाज़ को आवश्यकतानुसार बारीक तथा मोटी करते हुये सहजता से घूमना आपकी प्रमुख विशेषता थी । स्वरों का लगाव अत्यन्त मधुर था । दानेदार तानें, बोल–बहलावा, बंदिशों का प्रस्तुतिकरण आदि जयपुर घराने की प्रत्येक विशेषता आपके गायन में अपने पूरे सौन्दर्य के साथ प्रगट होती थीं । शिक्षा का सफर 1943 तक अनवरत चलता रहा । आपकी कठोर साधना ने आपके गायन को ऐसा तराशा कि ख्याल गायन आपका पर्याय लगने लगा । ऐसी सघन साधना के बाद भी आप कभी अधिक कार्यक्रमों के पक्ष में नहीं रहीं । आप अपनी निश्चित फीस से कम कभी नहीं लेती थीं चाहे कार्यक्रम मिले या ना मिले । यूं तो आप कई राग गाती थीं किन्तु वसंत–बहार, मियॉ मल्हार, गुणकली, जयजयवन्ती, गोड मल्हार, शुद्ध नट, अडाना, मारु बिहाग, तोडी, सावनी कल्याण तथा हेमनट आपके विशेष प्रिय राग रहे हैं ।

संगीत जगत में अपने उत्कृष्ट गायन के लिये आपको कलकत्ता के संगीत रसिकों द्वारा 'सुरश्री' की उपाधि, सन् 1953 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत की गई तथा सन् 1969 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' अलंकार से नवाजा गया । आपको महाराष्ट्र की प्रथम राज्य गायिका होने का गौरव भी प्राप्त

हुआ तथा 1975 में सुरसिंगार संसद द्वारा आपको शारंगदेव फेलोशिप भी प्रदान की गई ।

'राग की शुद्धता को कायम रखना गायक का पुनीत कर्तव्य है एवं गुरु की शिक्षा का निष्ठा पूर्वक पालन करना आवश्यक है,' ऐसे विचारों वाली तथा अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत पर 'न्यौछावर कर देने वाली' संगीत भक्त केसरबाई केरकर 16 सितम्बर सन् 1977 में स्वर्गवासी हो गईं । जब तक आप जीवित रहीं, ख्याल गायन में अपना कण-कण घिस डाला । आपके गायन की गहराई, व्यापकता तथा विशिष्टता आपके उस व्यक्तित्व की ओर संकेत करती थी जो आपकी अपने 'फन' के प्रति ईमानदारी और लगन का परिचय देती थी ।

जयपुर घराने की सशक्त स्तम्भ केसरबाई के अनेक रिकार्ड्स विभिन्न संगीत कम्पनियों द्वारा प्रकाशित किये गये हैं । आज आप हमारे बीच नहीं किन्तु आपका गायन आज भी उस इतिहास को दोहराता है जिसने ख्याल गायन को अपने कंठ-स्वर द्वारा पुष्पित और पल्लवित किया ।

श्रीमती मोघूबाई कुर्डीकर

अपना सम्पूर्ण जीवन सगीत को समर्पित करने वाली महान गायिका पद्यम्भूषण स्व0 मोघूबाई कुर्डीकर का जीवन हम सभी के लिये आदर्श है । जयपुर घरानें की गायकी को उसके शुद्धतम् स्वरूप मे प्रस्तुत करनें मे जिन दो अद्भुत गायिकाओं (केसरबाई केरकर एवं मोघूबाई कुर्डीकर) का नाम गायिकाओं की श्रेणीं में प्रथम स्थान पर आता है उनमे से एक थी स्व0 मोघूबाई कुर्डीकर । संगीत की इस विलक्षण विभूति का जन्म सन् 1904 में गोआ के 'कुर्डी' नाम के ग्राम में हुआ था । बाल्यावस्था में कुछ आर्थिक विषमताओं के कारण यह कुछ नाटक मंडलियों से जुडी रही और वहीं 'चितोपन्तजी' से सगीत की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की । एक बार सगीत के सम्पर्क मे आने से संगीत का प्रभाव उनके मन मस्तिष्क पर कुछ ऐसा पडा कि फिर उनका सारा जीवन ही सगीतमय हो गया ।

सुप्रसिद्ध गायक उस्ताद अल्लादिया खॉ ने मोघू जी को अपनी शिष्या स्वीकार किया तथा तालीम देने लगे परन्तु कुछ समय बाद किसी कारणवश मोघू जी बम्बई जाकर रहने लगी जिससे अल्लादिया खॉ की शिक्षा का तारतम्य टूट गया । बम्बई मे मोघू जी नें आगरा के उ0 विलायत खॉ साहब से तालीम लेनी प्रारम्भ कर दी किन्तु किस्मत का फेर कुछ ऐसा हुआ कि कुछ ही समय बाद उ0 उल्लादिया खॉ साहब भी बम्बई आकर रहनें लगे । मोघू जी ने अपनें पुराने गुरू के पास जाकर उनसे पुनः शिक्षा प्रदान करनें की विनती की पर उस्ताद नहीं मानें । उनका कहना था कि अब तुम्हार तालीम का घराना बदल जानें से गले के संस्कार बदल चुके हैं अतः अब मैं तुम्हें शिक्षा नहीं दूँगा । किन्तु दृढ़ निश्चय को तो ईश्वर भी पूरा करता है और वही हुआ भी मोघू जी की सच्चे हृदय की प्रार्थना को उस्ताद जी अधिक समय तक ठुकरा न सके और पुनः उन्हें तालीम देनें लगे ।

यह सच था कि मोघू जी के गले के सस्कार बदल चुके थे जिन्हें पुनः अपनी गायकी में ढलना दुष्कर कार्य था किन्तु उस्ताद जी की कृपा एवं मोघू जी की दृढ लगन नें सभी कठिनाअयो का सामना किया । गृहस्थी के सारे दायित्व और साथ में गोद का बच्चा लिये हुए यह मोघू जी की लगन और दृढ निश्चय ही था कि वह जयपुर घराने की गायकी को आत्मसात् कर रहीं थी । मोघूबाई का संगीत के प्रति अटूट अनुराग देखकर उस्ताद जी ने भी पूरी लगन व इमानदारी से अपनी कठिन गायकी को उन्हें आत्मसात कराया उसी का तो यह परिणाम है कि आज खॉ साहब अल्लादिया खॉ के घराने के रूप में सही रूप में प्रदर्शित करने वाली गायिकाओं के रूप में मोघूबाई का नाम उत्यन्त आदर से लिया जाता है ।

मोघूबाई ने अपनी बुद्धिमत्ता, दृढ़संकल्प और अथक परिश्रम से संगीत जगत में अत्यन्त विशिष्ट स्थान बनाया । कौन सा स्वर कितने परिमाण में, कितने समय तक और कितने विस्तार में लेना चाहिए, यह मोघू जी की गायकी की महत्वपूर्ण विशेषता रही है । श्रोताओं के ऊपर अनुकूल प्रभाव डालने में जिस संयम और धैर्य की आवश्यकता होती है उसे वह भली–भॉति समझती थीं ।

ताल की एक आवृत्ति मे किसी भी मात्रा से सम पर आते समय मुखडे की बंदिश में बारम्बार नवीनता पैदा करना मोघूबाई की मौलिक कल्पना शक्ति का परिचायक थी । वे स्वरों की फिजूलखर्ची न करके स्वरों का उपयोग बड़े ही संयमित, सुनियोजित एवं लय के डौल में सॅभालकर संतुलित रूप से करती थी । लयकारी और बोलतान, जो कि उनके घराने की विशेषता है, उनकी गायकी की भी प्रमुख विशेषता रही । लय के तिरछेपन से उनके स्वरों का अविर्भाव होता था । राग की शुद्धता आलाप से लेकर तान, बोलतान तक बनी रहती थी । बोलतानों मे बोल फिराने का उनका ढंग और कौशल तो अनोखा ही था । बोलतान में स्वर व्यंजन की स्वाभाविक नादमयता को कभी भी धक्का नहीं पहुंच सकता था । जयपुर घराने की गायिकी के लिये सीधा ठेका आवश्यक होता है किन्तु मोघू जी का ताल पक्ष इतना सधा हुआ था कि वह विकट से विकट

तबला वादकों के साथ भी अपनी दुष्कर गायिकी को उतनी ही श्रेष्ठता के साथ प्रस्तुत करने में पूर्ण समर्थ थीं । मोघू जी की प्रतिभा का एक और पहलू यहाँ बता देना आवश्यक है । जयपुर घराने के गायिकी के लिए उनकी देन है, उनकी बनाई हुयी कई लय के द्रुत लय की बदिशें । इस गायिकी में विलम्बित ख्याल के पश्चात् उसी राग की द्रुत बन्दिश गान का रिवाज नहीं था परन्तु उनके पास सीखने वाली शिष्याएँ जब से महफिलों में गाने लगीं, तो द्रुत लय की बन्दिशों की आवश्यकता पडने लगी तब मोघू जी ने उन्हीं वह चीजें बनाकर दीं । इस प्रकार की द्रुत लय की चीजें उन्होंने जयपुर घराने की अनेक रागों यथा सावनी नट, जगत कल्याण, सम्पूर्ण मालकौंस, भूपनट, शुद्ध नट, बसन्त बहार, बसन्ती केदार आदि रागों में बनायी । इन चीजों को श्रोताओं ने और स्वय उन्होनें बहुत पसन्द किया और खुद भी उसे महफिलों में गाने लगीं ।

संगीत जगत में उनकी अनुपम सेवाओं के लिए सन् 1969 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया । सन् 1974 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित किया गया । किसी भी कलाकार को वास्तविक सम्मान तो श्रोता द्वारा ही प्राप्त होता है जो मोघूबाई जी को उनके सम्पूर्ण जीवन में भरपूर्ण मिला । उनके गायन में वह अद्‌भुत शक्ति थी कि श्रोता का हृदय बरबस ही भावविभोर होकर प्रशंसा करने लगता है और यहीं उनके जीवन का सर्वोच्च सम्मान एव पुरस्कार था । वर्तमान समय में यह विलक्षण गायिका हमारे बीच नहीं तथापि इनके स्वर वायुमण्डल में अपना अस्तित्व बना चुके हैं। सम्पूर्ण संगीत समाज सदैव उनके प्रति आदर्श से नतमस्तक रहेगा ।

श्रीमती हीराबाई बड़ौदकर

कला के परिवर्धन और परिष्करण मे कलाकार का विशेष हाथ रहता है । सर्वप्रथम कलाकार अपनी कलागत विशेषताओं द्वारा कला के सृजन में पूर्ण सहायक होता है तत्पश्चात् उसके क्षेत्र को प्रचार और प्रसार द्वारा व्यापक रूप देने का उत्तरदायी भी कलाकार ही होता है । हिन्दुस्तानी सगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली ऐसी ही एक महान महिला कलाकार हैं -- "श्रीमती हीराबाई बडौदकर ।"

पद्मभूषण श्रीमती हीराबाई बडौदकर का जन्म 1905 में ऐसे घराने में हुआ जहाँ संगीत की परम्परा तीन पीढियों से निरन्तर विद्यमान थी । यूँ तो जन्म से ही उनके कानों में किराना घराने की गायकी के संस्कार पड़ रहे थे तथापि संगीत की विधिवत् शिक्षा उन्होंने अपनी माता ताराबाई, बालकृष्ण बुआ कपिलेश्वरी, शंकर बुवा, फैजमुहम्मद खाँ, गौहरजान, वझेबुआ और श्री गोविन्द राव टैम्बे जैसे महान संगीतज्ञों के निर्देशन में ग्रहण की । हीराबाई जी की गायकी निर्माण में सर्वाधिक योगदान उनके गुरु खाँ साहब अब्दुल वहीद खाँ जी का रहा जो नियमित रूप से दो घण्टे सुबह और एक घण्टा शाम तालीम देते थे ।

अच्छी तरह से शिक्षा प्राप्त करके तैयार गायकी के साथ श्रीमती हीराबाई बडौदकर ने महफिलों में मंच प्रदर्शन प्रारम्भ किया और शीघ्र ही मधुर गायन के कारण सुविख्यात हो गईं । उनकी गायकी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उनका स्वरलगाव है । एक-एक स्वर बिल्कुल सटीक स्थान पर लगाते हुए उनकी क्रमिक बढत, आवाज में वजन और माधुर्य, राग की शुद्धता उनकी गायनशैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं । अधिकांशतः सीधे राग गाना पसन्द करती हैं क्योंकि उनका मानना है कि गायन में स्वर-विस्तार करना आवश्यक है और सीधे रागों में आधे घण्टे तक स्वर-विस्तार आसानी से किया जा सकता है और इस प्रकार राग को घण्टा-सवा

घण्टा गाना बहुत आसान हो जाता है । इसके विरुद्ध मिश्र रागों में स्वर–विस्तार करने में कठिनाई होती है और गायक को मिश्र रागों में अपनी कला दिखाने का अवसर अधिक देर तक नहीं मिलता । लेकिन ऐसा नहीं है कि वह मिश्र राग गाने का विरोध करती हैं किन्तु वह प्रधानता सीधी रागों को देने के ही पक्ष में हैं ।

हिन्दुस्तान के सभी बडे संगीत सम्मेलनों में अपने अद्भुत गायन से श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध करने वाली श्रीमती हीराबाई बडौदकर ने आकाशवाणी और रिकार्डों के माध्यम से भी अपना संगीत जनता को दिया । किराना घराने का प्रतिनिधित्व करने वाली यह विलक्षण गायिका तराना, ठुमरी और हल्के मराठी पद–गायन मे भी पूर्ण अधिकार रखती हैं ।

देश के अतिरिक्त 1949 ई0 में दक्षिण अफ्रीका और 1953 में भारतीय कलाकार–प्रतिनिधि मण्डल के साथ चीन के भी अपनी विलक्षण संगीत कला के प्रदर्शन से वहाँ की जनता को उत्तर–भारतीय संगीत की विशेषताओं से अत्यधिक प्रभावित किया और उनसे सम्मान प्राप्त किया ।

श्रीमती हीराबाई के गायन के अनेक रिकार्ड हिन्दी और मराठी में बनाये गये हैं जो प्रायः आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से श्रोताओं की फरमाइश पर प्रसारित किये जाते रहते हैं । उनके गायन राग तोडी में 'लंगर काकरिया', पटदीप में 'पिया नहीं आये', मारवा का तराना, देशकार की 'होरी', तिलंग राग में ठुमरी 'काहे सतावो मोहे श्याम' और 'अकेली मत जइयो राधे' तथा मराठी में 'मधुमधुरा' आदि ने श्रोताओं को अत्यधिक प्रभावित किया है ।

हीराबाई जी को अपनी कला प्रदर्शन रियासतों में भी करने का अवसर प्राप्त हो चुका है । भावनगर, राजकोट, जूनागढ आदि रियासतों में अपनी कला का सफल प्रदर्शन किया है ।

हीराबाई जी ने अपनी कला शिष्यों मे भी हस्तान्तरित की है । श्रीमती सीता मुस्की, मालती पाण्डे, मानकरबाई सरोदकर, सुश्री तारा दीक्षित के अतिरिक्त छोटी बहनों सरस्वती बाई राने और कमलाबाई को भी इन्होंने संगीत की विधिवत् तालीम दी है जो आज संगीत जगत की प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में जानी जाती हैं ।

तपस्विनी की भॉति सगीत साधना कर के अपना सम्पूर्ण जीवन ही संगीत जगत को समर्पित करने वाली इन गानतपस्विनी के अमूल्य योगदानों के लिये संगीत समाज सदैव उनके प्रति श्रद्धान्वत रहेगा ।

लक्ष्मीबाई बड़ौदकर

गायन सम्राट स्व0 अल्लादिया खॉ साहब के भाई, खॉ साहब हैदर खॉ की सुयोग्य शिष्या, 'लक्ष्मीबाई बड़ौदकर' ने अपने गायन द्वारा अपने समय मे उच्छी खासी लोकप्रियता प्राप्त की थी ।

1902 में मराठा कुल में जन्मी लक्ष्मीबाई ने तेइस वर्षो तक बडौदा दरबार की दरबार–गायिका पद से अपनी कला द्वारा श्रोताओं को संगीत रस पिलाती रहीं । उसके बाद वह अपने जन्मस्थान कोल्हापुर वापस आई और स्वतन्त्र रूप से देश के विभिन्न शहरों में कार्यक्रम करने लगी । मैसूर, इन्दौर, कश्मीर नागपुर,कठियावाड आदि शहरों में सफल प्रस्तुतियॉ देने वाली लक्ष्मीबाई बडौदकर के हिज़ मास्टर्स वॉयस तथा यंग इण्डिया कम्पनी द्वारा लगभग पचास ग्रामोफोन रिकाड्र्स प्रकाशित किये गये ।

ख्याल और ठुमरी गायन की कुशल गायिका लक्ष्मीबाई की आवाज मीठी और सुरीली है । उनकी आवाज़ की तुलना लोग सारंगी से भी करते हैं । स्वाभाविक कम्पन युक्त दानेदार ताने उनके गायन की विशेष आकर्षण बनाती थीं ।

आकाशवॉणी के मुम्बई केन्द्र से अनेक बार लक्ष्मीबाई का गायन प्रसारित किया जा चुका है । राग देशकार मे उनके द्वारा गाई गई 'करवा गड़ गइलवा', बंदिश विशेष रूप से सराहनीय और लोकप्रिय हुई है ।

वर्तमान काल की ख्याल गायिकायें

श्रीमती गंगू बाई हंगल

किराना घराने की गायकी का प्रतिनिधित्व करने वाली वरिष्ठतम् गायिका पद्मभूषण गंगूबाई हंगल के नाम से आज कोई भी अपरिचित नहीं है । सन् 1913 में धारवाड नामक स्थान पर जन्मी इन स्वर साधिका की साधना इनकी माता श्रीमती अम्बाबाई, जो कि एक अच्छी कर्नाटक संगीतज्ञा थीं, के संरक्षण में ही प्रारम्भ हुई किन्तु इनका रुझान हिन्दुस्तानी संगीत में होता देख, इन्हें हुबली के पंडित कृष्णाचार्य के पास हिन्दुस्तानी संगीत शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेज दिया गया । वहां एक वर्ष तक संगीत शिक्षा प्राप्त की, तदोपरान्त किराना घराने के सुप्रसिद्ध गायक श्री रामभाऊ कुन्दगोलकर 'सवाई गन्धर्व' की गंडा बन्ध शिष्या बनीं । उन श्रेष्ठ गुरु के शिष्यत्व में उनकी आवाज में उसी प्रकार निखार आने लगा जैसे कि एक बन्द पुष्प अपनी क्रमशः खुलती पंखुड़ियों से पूर्णतः खिलता है । पं0 रविशंकर के शब्दों में – "मैंने उनके गायन में जो पाया, वह निश्चय ही उनके गुरु संवाई गंधर्व की विरासत है, कोई स्वय–प्रसूत या अपनी ओर से जोड़ा गया नवीन खटका, जमाजमा नहीं – केवल गुरु प्रदत्त, एकदम वही विशुद्ध गायकी । विलम्बित बढत का इससे सुन्दर रूप और हो ही नहीं सकता । एक ताल भी ऐसी कि एक मात्रा आठ की प्रतीत होती है ।" यदि किसी की किराना गायकी का पूर्ण स्वरूप जानना हो तो वह गंगूबाई का गायन सुनकर पूर्ण तृप्त हो सकता है ।

उनकी खुली हुई, दमदार आवाज में गजब का लोच और नज़ाकत का विलक्षण समन्वय दिखता है । भारी आवाज में जब यह किसी राग के एक–एक स्वर की बढत करती हैं तो श्रोतागणों की स्थिति कुछ ऐसी होती है जैसे कि वह राग को आत्मसात् कर रहे हों । गंगूबाई के सांगीतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ सन् 1924 में आयोजित कांग्रेस के महाअधिवेशन से हुआ और तब से आज तक उनके कार्यक्रमों का सिलसिला अविराम चलता जा रहा है । देश के विभिन्न शहरों जैसे

इलाहाबाद, लखनऊ, वाराणसी, कलकत्ता, बम्बई आदि के लगभग सभी बड़े संगीत सम्मेलनों में अपनी कला प्रदर्शन कर चुकने वाली इन साधिका ने विदेशों में भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का नाम उज्जवल किया तथा यू0एस0ए0 और कनाडा में अनेक संगीत समारोहों में अपनी गायकी का जादू बिखेरा । अखिल भारतीय आकाशवाणी कार्यक्रम में भी कई बार कार्यक्रम प्रसारित किये हैं । भिन्न–भिन्न ग्रामोफोन्स कम्पनियो तथा कैसेट कम्पनियो ने इनके अनेक रिकार्ड्स तथा कैसेट बनाये है ।

संगीत के क्षेत्र में श्रीमती गंगूबाई हंगल के महान योगदानों के लिये उन्हें सम्मान प्रदान किये गये हैं जिनमें से 1962 मे मैसूर संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1969 मे प्रयाग संगीत समिति द्वारा 'स्वर–शिरोमणि' उपाधि, 1973 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा 1971 में भारत सरकार द्वारा 'पद्भूषण' अलंकार प्रमुख हैं । उन्हें कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड द्वारा डी0लिट0 की सम्माननीय डिग्री भी प्राप्त है ।

श्रीमती गंगूबाई हंगल नेपाल और पाकिस्तान में 'इण्डियन कल्चरल डेलिगेशन' की सदस्या भी रही हैं । इसके अतिरिक्त कर्नाटक संगीत नृत्य अकादमी की अध यक्षा और कर्नाटक यूनिवर्सिटी सीनेट की सदस्या भी रही हैं ।

जीवन के अट्ठाइसवें वर्ष में आज भी श्रीमती हंगल अपने सांगीतिक कार्यक्रमों मे व्यस्त रहती हैं । गायन के क्षेत्र में वह जितनी ही विलक्षण हैं, सामान्य जीवन मे उतनी ही सरल । विनम्रता की मूर्ति, सहज स्नेह वाली अद्भुत गायिका को ईश्वर दीर्घायु और स्वास्थ्य प्रदान करे, यही हमारी प्रार्थना है ।

श्रीमती सुशीला पोहनकर

लब्ध प्रतिष्ठित गायिका श्रीमती सुशीला पोहनकर जिन्हें लोग प्यार से "ताईजी" बुलाते हैं, का जन्म 17 जुलाई, सन् 1924 को नागपुर में हुआ था। सांगीतिक परिवार में जन्मी सुशीला जी ने संगीत शिक्षा अपने पिता श्री बाबूराव जोशी जो कि किराना घराने के गायक थे, से प्राप्त की। उनके बाद कई बड़े–बड़े संगीतज्ञों से भी समय–समय पर आशीर्वाद प्राप्त हुआ जैसे अमृत राव निस्ताने, पं0 नारायण राव पुणेकर – (ग्वालियर घराना) से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया। सन् 1943 में "विशारद" की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

सुशीला जी ने समाजशास्त्र एवं गायन दोनों विषयों से एम0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की है। तदोपरान्त खैरागढ़ विश्वविद्यालय से संगीत विषय में शोध कार्य कर पी0एच0डी0 की डिग्री भी प्राप्त की है। सुशीला जी की स्मृति के अनुसार संगीत विषय में शोध करने वाली वह द्वितीय महिला हैं। सुशीला जी का शोध विषय था – 'लोकसंगीत तथा शास्त्रीय संगीत'। सुशीला जी में किसी भी गीत को सुनने के साथ ही साथ तुरन्त उसकी स्वरलिपि बना लेने की तीक्ष्ण प्रवीणता ने उनके शोध कार्य में अत्यन्त सहायता प्रदान की। अपने शोध हेतु वह गांवों में ग्रामीण लोगों से अनुरोध करके लोकगीत सुनती थीं और तत्काल उसकी स्वरलिपि बनाती जाती थीं जिससे एक ही बार गीत सुनकर उसकी धुन भूलती नहीं थीं। बाद में उस स्वरलिपि के आधार पर लोकगीतों में छुपे हुये रागों को ढूंढती थीं तथा उनसे रागों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई होगी, यह विचार करती थीं। उनके शोध का निष्कर्ष निकला कि शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति लोकसंगीत से हुई है। अनेक शोध छात्र–छात्रायें सुशीला जी के सुयोग्य मार्गदर्शन में अपना–अपना शोध कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

सन् 1945 में जबलपुर के श्री राजाभाऊ पोहनकर से सुशीला जी का विवाह हुआ और वह जबलपुर आ गईं एवं वहाँ गवर्नमेन्ट होम साइन्स कालेज में संगीत विभाग में अध्यक्ष पद पर नियुक्त हो गईं । जबलपुर में संगीतज्ञो का आना–जाना लगा ही रहता था । उ0 अमीर खाँ भी अक्सर जाते थे एवं उन्हीं के निवास पर ठहरते थे अतः उ0 अमीर खाँ की गायकी का प्रभाव भी सुर्शाला जी की गायकी पर पडा ।

जबलपुर से बम्बई आने पर 'विलेपार्ले म्यूजिक एकेडमी' में लगभग चार वर्षों तक सुशीला जी ने प्रिंसिपल पद पर कार्य किया है ।

सुप्रसिद्ध ख्याल गायिका श्रीमती सुशीला पोहनकर ख्याल के अतिरिक्त ठुमरी, दादरा, गज़ल आदि भी उतनी ही कुशलता से प्रस्तुत करती हैं । आकाशवाणी से भी जुड़ी थीं तथा कई कार्यक्रम दिये किन्तु अब उम्र के इस पड़ाव पर आकर रेडियो से कार्यक्रम देने बंद कर दिये हैं । सुशीला पोहनकर जी ने देश के लगभग सभी संगीत सम्मेलनों में अपनी गायनशैली से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है ।

बंदिश–रचना के क्षेत्र में भी सुशीला जी ने अनेक खूबसूरत बदिशों की रचना की है जिसे वो स्वयं, उनके पुत्र एवं सुप्रसिद्ध गायक श्री अजय पोहनकर एवं उनकी शिष्यायें गाती हैं । उनकी बंदिशों को गुणीजनों एवं श्रोताओं से सराहना भी प्राप्त हुई है । उनकी कुछ प्रसिद्ध बंदिशें हैं––

रागदेस में – चलोरी सखी ब्रिज में देखन चलो री ।
चारुकेसी में – रेमन कैसे रिझाऊँ तथा आज मोरे भाग जागे ।
बिलास खानी में – कोयलिया काहे करत पुकार ।
मालकौस में – निर्दयी सांवरो मैंका मोह लियो ।
बसंत मुखारी मे – रसना मूक भई ।

इनके अतिरिक्त राग पूरिया धनाश्री मे इनकी एक रचना – 'गंगा के संग सरिता बिगडी' विशेष लोकप्रिय हुई है ।

अपने अनुभव के आधार पर सुशीला जी आज के नवोदित कलाकारों से कहना चाहती हैं कि, 'पहल साधक को सुर और लय में डूबना चाहिये क्योंकि संगीत में सुर के माध्यम से ही अपने भाव व्यक्त करते हैं सुर के बाद 'शब्द' का महत्व है जिसके माध्यम से अपनी बात कही जाती है, शब्दों के अर्थ के अनुसार उसके भाव को स्वर के माध्यम से व्यक्त करना ही 'संगीत' है ।' सुशीला जी के अनुसार गाना दिल–दिमाग दोनों से होना चाहिये क्योंकि बिना भाव के रूखा गाना हृदय को नहीं छूता अतः भाव आवश्यक है इसी प्रकार सिर्फ भाव से भी संगीत नीरस लगने लगता है अतः राग के 'मूड' के अनुसार उसमें भाव, आलाप, तान, लयकारी आदि सभी का महत्व है ।

सुशीला जी ने कई शिक्षार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान की है जो आज देश के जाने–माने कलाकार है उनमें से प्रमुख हैं – उनके पुत्र श्री अजय पोहनकर, जसविन्दर सिंह, उत्तरा चौसालकर, अंजली पोहनकर एवं कल्पना जोखलकर ।

वर्तमान समय की अति वरिष्ठ एवं संगीत मर्मज्ञा श्रीमती सुशीला पोहनकर जी ने अपनी गायन शैली एवं उसकी शिक्षा प्रदान कर उत्तर भारतीय संगीत को समृद्धशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनका वरद् हस्त हम सभी पर वर्षों तक बना रहे यही कामना है ।

श्रीमती मालविका कानन

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र मे महिला कलाकारों में श्रीमती मालविका कानन ना सिर्फ महिला कलाकारो में अपितु पुरुष सगीतज्ञो में भी आज पारम्परिक शुद्धता के साथ राग को उसके नैसर्गिक सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत करने वाले चुनिन्दा कलाकारों में से एक हैं । दुर्लभ राग एव बदिशो को बडी ही कुशलता एवं सुन्दरता के साथ प्रस्तुत करने में वह दक्ष हैं ।

संगीतज्ञ घराने में जन्मी श्रीमती मालविका कानन की संगीत शिक्षा चार वर्ष की अल्पायु में ही अपने पिता स्व0 श्री रवीन्द्र लाल रॉय, जो कि एक सुप्रसिद्ध संगीत समीक्षक एवं स्व0 पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे जी के शिष्य थे, के निर्देशन में प्रारम्भ हुई । मालविका जी ने अपने पिता से ध्रुपद, धमार और ख्याल गायकी की विधिवत् तालीम वर्षो तक ग्रहण की । अपने पिता के साथ देश में सांगीतिक भ्रमण करते हुये ही उन्हें संगीत की प्रयोगात्मक और विषयात्मक शिक्षा प्राप्त करने का लाभ मिला और उनके स्नेहपूर्ण सानिध्य में ही विधिवत् रियाज़ भी किया ।

सोलह वर्ष की आयु से ही नियमित कार्यक्रम देने वाली कलाकार के रूप में स्थापित हुईं । मालविका जी ने अनगिनत संगीत समारोहों में, राष्ट्रीय कार्यक्रमों, आकाशवाणी संगीत सम्मेलनों के अतिरिक्त देश के अनेक प्रतिष्ठित सागीतिक जलसों में अपना सधा हुआ गायन प्रस्तुत कर सराहना प्राप्त की है ।

सुनामध्यन्य गायक श्री ए0 कानन से विवाह होने के बाद मालविका जी के गायन को भी नई दिशा मिली क्योंकि श्री कानन की गायकी में किराना घराने की खूबियॉ समाहित थीं जिसे मालविका जी ने अपने गायन में भी समाहित किया और अपनी गायकी को और भी अधिक समृद्धशाली बनाया । अपने पति के मार्गदर्शन में ही उन्होंने ठुमरी गायन भी प्रारम्भ किया । भजन द्वारा भी वह भावों

के प्रगटीकरण मे दक्ष हैं । इस प्रकार एक समृद्धशाली एवं सुनियोजित गायकी, सुगमता एवं मधुरता के साथ ऊपर तक जाने वाली आवाज की धनी, धीमे ख्याल एवं आलाप मे एक–एक स्वर की धीमे–धीमे सुन्दर बढत और तानों में विभिन्नता के साथ तैयारी का प्रदर्शन उनके गायन को अत्यधिक आकर्षक बनाता है ।

श्रीमती मालविका कानन ने देश के लगभग सभी शहरो एवं प्रतिष्ठित संगीत समारोहा में अपने गायन से लोगों का मत्र–मुग्ध किया है जैसे दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, लखनऊ, इलाहाबाद आदि ।

श्रीमती कानन के अनेक कैसेट्स भी विभिन्न संगीत कम्पनियों द्वारा निकाले गये हैं जिसकी अत्यधिक सराहना भी हुई है । "एच0एम0वी0" द्वारा निकाला गया कैसेट जिसमें श्रीमती कानन ने राग छायनट में ख्याल तथा मिश्रखमाज में ठुमरी और भजन 'मैं गिरिधर के घर जाऊँ', विशेष लोकप्रिय हुआ है ।

संगीत रिसर्च अकादमी के विशेष कमेटी की भूतपूर्व सदस्या श्रीमती मालविका कानन को उनकी दीर्घकालीन और बहुमूल्य सांगीतिक सेवाओं के लिये सन् 2000 में 'संगीत नाटक अकादमी अवार्ड' से सम्मानित भी किया जा चुका है ।

अपनी कला को नई पीढ़ी में हस्तान्तरित करते हुए श्रीमती कानन अनेक शिष्य–शिष्याओं को संगीत शिक्षा भी प्रदान कर रही हैं जिनसे संगीत समाज भविष्य में काफी उम्मीदें भी रखता है ।

श्रीमती मालविका कानन के बहुमूल्य सांगीतिक योगदानों के लिये वह समाज के स्मृति पटल पर सदैव अमर रहेंगी ।

श्रीमती किशोरी अमोणकर

"संगीत अंदर की भाषा है । उस भाषा को जब हम प्रकट करते हैं तो उसे प्रकट करनें के लिये हम जिस मध्यम का प्रयोग करते हैं, वह माध्यम उस अमूर्त स्वरूप की अंदर की भाषा की अभिव्यक्ति के लिये सक्षम होना चाहिये और वह है । हम शैली की बात नहीं करते, हम कहते है कि अंदर की जो भाषा है, जो दिखाई नही देती, जो सुनाई नही देती, उसे प्रकट करनें के लिये जिस माध्यम का प्रयोग हम करतें हैं, वह सबल, सक्षम होना चाहिये और वह हमारे ऋषियों–मुनियों तथा वेदों ने हमें दिया है । संगीत इसी का एक भाग है । इसके लिये साधना करनीं पडेगी, क्योंकि अंदर देखनें के लिये साधना के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं है ।" – ये विचार हैं एक ऐसी स्वर –साधिका के जो एक अलग ही दृष्टि से संगीत को देखती हैं । संगीत को आध्यात्मिक स्तर–ध्यानस्था अवस्था तक ले जाने की पक्ष धर 'पद्मभूषण श्रीमती किशोरी अमोणकर' को प्राचीन स्वरूप के अनुसन्धान में रूचि रखनें वाली इन स्वर–आराधिका का जन्म 10 अप्रैल 1931 को हुआ । गायन शिक्षा का प्रारम्भ अपनी माता एवं सुविख्यात गायिका स्व0 मोघूबाइ कुर्डीकर से हुआ । उनके साथ ही श्री बालकृष्ण बुवा पर्वतकॅार एवं श्री मोहनराव पालेकर जी से भी शिक्षा प्राप्त की । अंजनीबाई मालपेकर जैसी प्रवींण गायिका से मीड के सौन्दर्य सम्मोहन का गुर भी प्राप्त किया । श्रीमती किशोरी अमोणकर ने जहॉ एक ओर अपनी मॉ से विरासत मे मिली घराने की विशुद्ध शास्त्रीय परम्परा को अक्षुण रखा है वहीं दूसरी ओर अपनी मौलिक सृजनशीलता का परिचय देकर घरानें की गायकी को और भी अधिक संपुष्ट किया है । रग–रग में रचे–बसे परम्परावादी शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि को उजागर करती किशोरी जी ने जयपुर घरानें की गायकी में अद्भुत महारत हॉसिल की है । जयपुर–अतरौली घरानें की हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में श्रीमती किशोरी अमोणकर अपना विशिष्ट स्थान रखती है किन्तु उन्होंने घराना इसलिये नही अपना लिया कि वह प्रारम्भ से उससे जुडी हैं वरन् उन्होंने प्रगतिशील विचारधारा को अपनाते हुए घरानों की गायकी को सुना–परखा और तब अपनी गायकी निर्धारित की है ।

नादोपासिका किशोरी जी जब स्वर लगाती हैं तो प्रयासरत् रहती हैं कि स्वर मूर्त हो उठे । उनका मानना है कि मुसलमानों तथा अंग्रेजों के आगमन के बाद हमारे पास वह संगीत, वें 'सुर' नही रहे, वह संकल्पना नहीं रही जिसे वह ढूँढने का प्रयास कर रही हैं । प्राचीन सगीत ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा वह मिल सकता है । इन ग्रन्थें को पढने से उनकी यह मान्यता प्रबल हुई कि हमारा सगीत ध्यान स्तर तक जाना चाहिये । संगीत का नीति तत्व हमारे ऋषियो-मुनियों नें देखा था । वह यह था कि स्वरों का असर हृदय पर होता है और यदि ऐसा है तो फिर हर जगह भी स्वरों का असर होता होगा । किशोरी जी इसी दृष्टि से स्वरों को देखती हैं । उनका मानना है कि यह स्वानुभव की चीज है परानुभव की नहीं । गुरू तो सिर्फ मार्ग दिखाता है चलना खुद पडता है । चलना ही स्वानुभव है । किशोरी जी का मानना है कि जिन लोगों नें स्वरों की खोज की, राग-रागनियॉ बनाई वे क्या इतनें अल्पज्ञानी थे कि वहीं रूक, गए ? वे भी हजारों राग-रागनियॉ बना सकते थे किन्तु वे वहीं रूक गए इसके पीछे अवश्य ही कुछ ठोस कारण होगें, वह उसकी खेज में हैं ।

किशोरी जी 'रस' को विशेष महत्व देती हैं । राग एक भाव है, प्रत्येक राग का एक 'रस' होता है । भावोत्पत्ति और रसोत्पत्ति में ही पूरा संगीत समाहित है । स्वयं किशोरी जी के शब्दों में- "ग्रंथ ढूँढने, पढने की प्रवृत्ति जागृत होनें पर मुझे अभिनव गुप्त की टीका देखनें का अवसर मिला । उनके विश्लेषण को देखकर मुझे समझ आया कि स्वरों के रस होतें हैं । वादी-संवादी का मतलब भी तभी समझी । आजकल जिन शब्दों का प्रयोग हमारे यहॉ । होता है- पकड़, ख्याल आदि ये हमारे शब्द नही हैं । मैनें "हमारे" शब्दों के अनुसार संगीत को देखा है । अपनी अमरीका यात्र' के दौरान मैंने उद्‌घोषक से कहा कि वह यह बताए कि मैं राग भूप गाऊँगी ना कि राग भूप में ख्याल । 'भूप' एक नाम है जो एक भावविशेष को दिया गया है । जब कोई राग गाया जाता है तो उसका अपना अलग ही 'मूड' या रंग होता है । कुछ भाव कम समय तक ठहरते हैं और

कुछ अधिक समय तक अपना फैलाव प्रदर्शित करते हैं । हमें स्वरों के बारे में सोचना है । मैं स्वरो के रस भाव की खोज में हूँ । पहले तो मैंने सिर्फ रियाज किया और यह अनुभूति बाद मे हुई ।'

सन् 1952 से आकाशवॉणी से जुडी किशोरी जी का सर्वर्पथम सार्वजनिक कार्यक्रम अमृतसर में हुआ और फिर धीरे-2 देश-विदेश के लगभग सभी महतवपूर्ण सांगीतिक जलसों में किशोरी जी नें अपनी भावप्रवण गायकी से लोगों को आत्मविभोर किया है । भावविभोरता ही उनकी गायन शैली की पहचान है । उनका कहना है, – 'सरगम' रियाज की चीज है, सुनानें की नहीं । 'सरगम' स्वरों को पहचानने के लिये है गानें के लिये नही, क्योंकि स्वरों में अक्षर नहीं हैं । स्वर और ताल समय विभाजन है । 'रेगमपधनी ओर सा' की ही विभिन्न उचाइयाँ हैं । 'सरगम' नहीं करना चाहिये क्योंकि स्वरों की आहट जाननें के लिये 'आकार' ही काम आते हैं । संगीत को हम जितना ही प्रावाहित रखेंगे, गले का संगीत उतना ही असर डालेगा । किशोरी जी कभी भी श्रोताओं की फरमाईश पर अर्द्धशास्त्रीय संगीत या सुगम संगीत नहीं गाती । वह तो राग के एक-एक स्वर लगाव द्वारा ध्यानस्थ होने का प्रयास करती हैं, राग के भाव में कुछ इस तरह डूबने लगतीं हैं कि श्रोता भी उस स्वर प्रभाव द्वारा उन्हीं गहराइयों में डुबकियाँ लिये बगैर नहीं रह पाता । स्वयं किशोरी जी के कथनानुसार, 'मैंने संगीत को हमेशा एक प्रार्थना और साधना समझा है । भगवान पर मेरा अटल विश्वास है । अपने स्वरों के माध्यम से मैं ईश्वर को खोज रहीं हूँ । कला और कलाकार अनाशक्त नहीं रह सकते । आसक्ति ही कलाकार को वास्तविक उपलब्धि के अनन्त की ओर ले जाती है । स्वर मेरे लिये भगवान है । सतत् साध्य और अराध्य है' । राग और भाव में से प्राथमिक भाव किसे देती हैं, इस प्रश्न के उत्तर में वह कहती हैं- 'मैं सबसे पहले भाव को प्रधानता देती हूँ फिर राग को । राग, शास्त्र है और भाव, उसे सजाने के लिए उसकी आवश्यकता है । यदि यूँ कहें कि राग तो भाव के लिए ही जन्मा है तो भाव ही ऊपर हुआ ।'

संगीत को अध्यात्मिक दृष्टि से देखना ही तो उनकी गायिकी को

अन्य गायिकाओं से अलग कर विशिष्टता प्रदान करता है । स्वयं विभोर होकर श्रोताओं को रस विभोर करते जाना ही किशोरी जी के गायन की पहचान है । अपनी इन्हीं अध्यात्मिक भावनाओं को संगीतमय रूप देते हुए किशोरी जी ने अनेक बन्दिशों की रचना की है । राग भूप में उनकी एक बन्दिश प्रस्तुतु है –

प्रथम सुर साधे जब होवत ज्ञान

तब अलंकार कर दिखावे ।

षड्राग, छत्तीस रागिनी, तीन ग्राम

बाईस श्रुति कर ध्यावै ।।

किशोरी जी इसी पद्धति से शिक्षा भी देती हैं । वह बताती है, 'मैं बच्चों को पहले राग नहीं सिखती, अलंकार सिखती हूँ । मैं अलग–अलग रागों की झलक भी सिखाती हँ किन्तु कहती हूँ कि सा रे गा आदि को देखों फिर गति में रियाज़ करो । पॉच हजार चालीस अलंकार हैं बल्कि इनसे भी कहीं अधिक इनका अभ्यास किया जाय । भावों की दृष्टि अनन्त रूप है । मीड, खटका, मुर्की, गमक इत्यादि पर अधिकार किया जाय तो राग स्वतः आ जायेंगे । आजकल स्कूल कॉलेजों में रागों से शिक्षा शुरू होती है । अगर 'चीज' पहले सिखायी जाये तो रस भाव भी सिखाना होगा । पहले स्वरों पर अधिकार करना आवश्यक है ।'
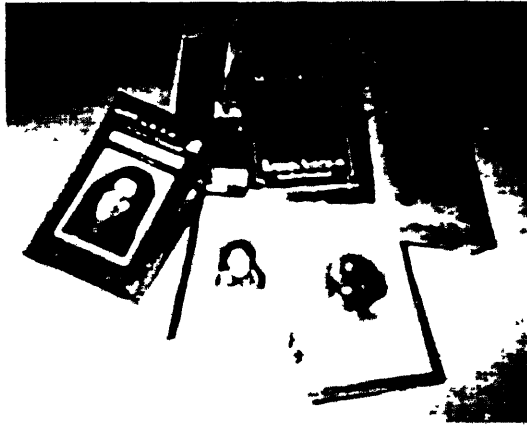
किशोरी जी के कुछ प्रचलित कैसेट्स

इन संगीत आराधिका के अनेक कैसेट और सी0डी0 भी प्रकाशित हुए हैं – 'वीनस' कम्पनी द्वारा 'क्लासिकल गैलेक्सी' दो वॉल्यूम मे जिसमें किशोरी जी द्वारा राग देशकार, गौड सारंग, मिया मल्लहार गाया गया है ।

'एच0एम0वी0' द्वारा प्रकाशित कैसेटों में राग भूप तथा बागेश्री गाया है । 'म्यूजिक टुडे' द्वारा भी समय–समय पर किशोरी जी के अनेक कैसेट प्रकाशित किये गये हैं जो संगीत श्रोताओं के बीच विशेष लोकप्रिय हुए हैं ।

श्रीमती किशोरी अमोनकर जी को संगीत क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिये सन् 2001 में उन्हे 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया है ।

किशोरी जी का संगीत मात्र श्रोताओं के मनोरंजन को लक्ष्य नहीं मानता वह तो संगीत माध्यम मानती हैं अर्न्तरात्मा के अमूर्त स्वरूप के प्रगटीकरण का आज जबकि हमारा शास्त्रीय संगीत जनरूचि पर आधारित होता हुआ अपनी शास्त्रीयता खोता जा रहा है तब हमें अपनें संगीत की शास्त्रीयता कायम रखनें के लिये ऐसे ही विचारवान कलाकारों पर निर्भर होना है ।

लक्ष्मी शंकर

आकर्षण आवाज़, राग का विषयात्मक ज्ञान, अद्‌भुत कल्पना शक्ति द्वारा सुनियोजित एवं मनमोहक गायन प्रस्तुत करना परिचायक है, आज की प्रतिष्ठित महिला संगीतज्ञ 'लक्ष्मीशंकर' की । उच्चस्तरीय कलाकारों में अग्रणी श्रेणी की गायिका लक्ष्मीशंकर की संगीत शिक्षा पटियाला घटाने के उ0 अब्दुल रहमान खॉ के निर्देशन में प्रारम्भ हुई । उनके पश्चात उन्होंने अनेक सगीतकारो का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए प्रो0 बी0आर0 देवधर एवं पं0 रविशंकर, जो विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं, के शिष्यत्व में भी अपनी संगीत–साधना की ।

तीन सप्तक तक आसानी से गायन करने वाली सशक्त एवं सुमधुर आवाज़ की धनी श्रीमती लक्ष्मी शंकर की आवाज में सम्पूर्णता और स्पष्टता का खूबसूरत समायोजन है । संगीत के प्रति पूर्ण समर्पित लक्ष्मी जी अपने गायन के आकर्षण से श्रोताओं को बांध ारखती हैं और उनकी आत्मिक प्रशंसा स्वीकार करती हैं

देश–विदेश के लगभग सभी महत्वपूर्ण सांगीतिक जलसों मे अपनी कला का सफल प्रदर्शन कर चुकी लक्ष्मी जी ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी कला के प्रशंसक बनाए है ।

लक्ष्मी शंकर जी ने विभिन्न भाषाओं की कई फिल्मों में भी अपनी सुमधुर आवाज का जादू बिखेरा है, जिनमें से 'गॉधी' फिल्म को 'अकादमी अवार्ड' द्वारा सम्मानित भी किया गया है ।

सगीत जगत को समृद्ध बनाने में अपना अभूतपूर्ण योगदान लक्ष्मी जी ने अनेक कैसेट्स में अपनी गायन रिकाड करवा कर दिया है जिसका विवरण इस प्रकार है ––

एकल गायन :

E M.I.	ECSD 2391	ख्याल, ठुमरी तथा भजन (भारत में)
E M.I.	ECSD 2724	ख्याल, ठुमरी तथा भजन (भारत में)
E M.I.	ECSD 2749	ख्याल, ठुमरी तथा भजन (भारत में)
E M.I.	ECSD 2782	ख्याल, ठुमरी तथा भजन (भारत में)
STIL	0608 575	ख्याल, ठुमरी तथा भजन (फ्रांस में)
Golden	Age Prod.	Devotional Songs (यू0एस0ए0 में)
OOCORA	558615/16	LES HEURESET LES SAISONS (फ्रांस में)

अन्य कलाकारों के साथ --

E.M.I.	ECSD 2317	(श्री निर्मल अरुन के साथ युगलबन्दी) (भारतीय)
E.M.I.	ECSD 2350	(श्री निर्मल अरुन के साथ युगलबन्दी) (भारतीय)
गणेश	DRLS 1008	भारत की दो परम्परा (यू0एस0ए0 में)
E.M.I.	ECSD 2414	वर्षा ऋतु
E.M.I.	ECSD 2454	सत्यनारायण कथा
E.M.I.	ECSD 2269	मीरा भजन
E.M.I.	7EPE 1501	भजन
E.M.I.	7EPE 1285	बच्चों के लिये

Cassettes (Music Circler, U.S.A.)

RSMC	5	-	मीरा भजन
RSMC	17	-	ख्याल, ठुमरी और भजन
RSMC	29	-	ख्याल, ठुमरी और भजन
RSMC	33	-	Ravi Shankar's Festival
RSMC	39	-	श्री एल0 सुब्रमणियम के साथ

RSMC 49 ख्याल, ठुमरी और भजन

VC-7 (Videl Cassette) Master Musicians of India

इनके अतिरिक्त श्रीमती लक्ष्मी शकर ही वह प्रथम भारतीय गायिका हैं जिनका यूरोप और संयुक्त राष्ट्र संघ कॉम्पैक्ट डिस्क निकाला गया ।

अपने सुमधुर गायन से श्रोताओं के मानस पटल पर अमिट छाप छोडती लक्ष्मी जी आज संगीत समाज की आदरणीय, अनुकरणीय तथा लोकप्रिय गायिका हैं । जहां–जहां भी उन्होंने कार्यक्रम प्रस्तुत किये, उनके प्रशंसकों की संख्या में वृद्धि होती गई । विदेशों में हिन्दुस्तानी सगीत की धूम मच गई जिससे उसका प्रचार–प्रसार भी हुआ । विभिन्न विदेशी एव देशी अखबारों में उनकी प्रशसा की गई जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं ––

1. Lakshmi Shankar's Performance sent the audience in to ecstasies ...... **'The times', London.**

2. Lakshmi Shankar's vocal numbers added agility of a kind rare in other musical systems. **'The New York Times'.**

3. No one at the festival communicated so much, so directly and so beautifully. Lakshmi Shankar displayed an elegant virtuosity and musical complixity unknown to the tradition which represents the coloratura soprano as the highest achievement of the female voice.

'Shiraz Festival, Iran'.

4. Lakshmi Shankar holds listeners spell-bound............ her whole presentation, suffused as it were with tender lyricism, leaves nothing to be desired. It is perfect in itself.

'Times of India, New Delhi.'

5. .... A voice trained to perfection. Her beautiful, crystal clear voice.... easily traversed three octaves expressed a myriad exquisite little nuances... intensivelyimaginative decorations.... clearity of musical form..... serenely evocative.

'The Indian Express, Madras.'

6. .... recital of Lakshmi Shankar full of superfine artistry. The sweet tonal quality and the splendid presentation cast a spell.
'The Mail, Madras.'

लक्ष्मी जी के सांगीतिक योगदानो के लिये पूरा संगीत समाज उनका आभारी है ।

परवीन सुल्ताना

अल्पायु में ही देश का प्रतिष्ठित सम्मान 'पद्मश्री' प्राप्त कर चुकी गायिका परवीन सुल्ताना आज देश की जानी–मानी प्रतिष्ठित गायिकाओं में से एक हैं । दक्षिण भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य स्थल नौगॉव (असम) में 1950 में जन्मी इन संगीतज्ञा ने बाल्यावस्था से ही गायन में रूचि दिखायी अत इनके पिता खॉ मुहम्मद इकरामुलमजीद खॉ, जो कि स्वय्र उ0 गुलमुहम्मद खॉ (करांची) एवं उ0 बड़े गुलाम अली खॉ (अटियाला) के शिष्य हैं और एक अच्छे संगीतज्ञ हैं, उन्होंने छः वर्ष की आयु से ही अश्पनी पुत्री को सगीत शिक्षा देना शुरू कर दिया । इसीलिये उनकी गायकी पर पटियाला घरानें की छाप दिखती है । 1960 से 1970 तक परवीन जी ने कलकत्ता के संगीताचार्य पं0 चिन्मयलाहड़ी से सघन तालीम प्राप्त की । ईश्वरीय वरदान के रूप में मिली सुन्दर आवाज सही निर्देशन और सतत् अभ्यास से बहुत कम अम्र में ही ये बुलन्दियों को छूने लगीं । सत्रह–अठ्ठारह वर्ष की उम्र में तो यह संगीत क्षेत्र में 'स्टार' बन चुकी थी । इनके गायन की सबसे बड़ी विशेषता यह हे कि इनकी आवाज साढे तीन सप्तक के दायरे में बडी ही सहजता से घूमती है । यही वह मुख्य खासियत है जो इन्हें अन्य गायिकाओं से अलग करती है । इसके अलावा उनकी फिरत, तान–पल्टों में तो जादू ही है । मुख्य रूप से यह ख्याल गायिका है किन्तु ठुमरी, भजन, गजल में भी वह ष्णात हैं । इनका फिल्म 'एक दूजे के लिये' में गाया गीत 'हमें तुमसे प्यार कितना' तो आज भी लोगों के दिलोदिमाग में छाया है । इनकी आवाज में ग़जब की बुलन्दी और मिठास है । उ0 दिलशाद खां से विवाह करने के बाद वह उनके साथ जुगलबंदी में देश तथा विदेश में अनेक कार्यक्रम पुस्तुत करती रहती हैं । लगभग सभी प्रमुख संगीत सम्मेलनों में अपनी कला का प्रदर्शश्न कर चुकी श्रीमती परवीन सुल्ताना के अनेक कैसेट तथा सी0डी0 भी निकाले गए है। ।

आज उनके कई सुयोग्य शिष्य तथा शिष्याएँ संगीत जगत के उज्वल भविष्य की ओर संकेत दे रहे हैं । गौरवशाली सम्मान 'पद्मश्री' के

अतिरिक्त श्रीमती सुल्ताना का प्रथम कार्यक्रम 1962 में कलकत्ता में हुआ था तब उनकी उम्र मात्र बारह वर्ष की थी, तभी उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था । इनके अतिरिक्त अन्य कई पुरस्कार समय–समय पर प्रदान किये गये हैं । ईश्वर इन्हे बुलन्दियाँ प्रदान करें ।

सुमित्रा गुहा

आकर्षक सुरीले कंठ की मल्लिका, सुमित्रा गुहा की जन्म आन्ध्र प्रदेश में हुआ जहॉ उन्होने अपनी माता श्रीमती राज्य लक्ष्मी राजू से कर्नाटक संगीत की शिक्षा लेना प्रारम्भ किया और अपनी प्रतिभा से शीघ्र ही उस गायन शैली में निपुणतः होने लगी ग्यारह वर्ष की आयु से ही कर्नाटक संगीत के प्रख्यात गुरू संगीत एस. आर. जानकी रमन जी का शियत्व ग्रहण करने के पश्चात लगन पूर्वक साधना करते हुए सुमित्रा कर्नाटक पद्धति में अपनी पहचान तीव्रता से बनाने लगी।

स्कूली शिक्षा पद्भावती वमन्स कालेज से समाप्त करने के बाद सुमित्रा विश्व भारती युनिवसिटी शान्ति निकेतन् में शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से आई। जहॉ उन्होने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रतिभा आकर्षण अनुभव किया। ' दर्शन शास्त्र विषय से ग्रेजुएट की डिग्री प्राप्त करने के बाद जब सुमित्रा शान्ति निकेतन (विश्व भारती) से निकस कर कोलकाता में निवास करने आई तो वहाँ उन्होने हिन्दुस्तानी पद्धति के प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री ए० कानन और श्रीमती मालविका कानन के शिष्यत्व में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में गायन की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया। उनके पश्चात उन्होंने स्व० उ० बड़े गुलाम अली खॉ के सुयोग्य शिष्य श्री सुशील कुमार बोस द्वारा भी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त किया।

श्रीमती सुमित्रा गुहा के गायन पर टिप्पणी करत हुए एक प्रख्यात संगीत समीक्षक ने कहा "सुमित्रा की प्रत्येक प्रस्तुति श्रोताओं को एक आत्मिन अनुभव करती है। सुरीला कंठ,सुयोग्य गुरूओं कोमार्गदर्शन एवं सतत साधना से सुमित्रा ने अपनी प्रभावपूर्ण तथा हृदय स्पर्शी गायन शैली तैयार की है। उनकी गायन शैली ने अपने

प्रदर्शन से देश विदेश के संगीत प्रेमियो को कई बार आत्मिक तृप्ति प्रदान की है।

सुमित्रा गुहा जी को उनकी बेहतरीन गायन प्रस्तुति के लिए द्वितीय ब्रहोत्सव (त्रिमुसा मंदिर) – १६७२ में स्वर्णपदक से सम्मनित किया गया। ११ जनवरी १६८४ "अखिल भारतीय वागयेकार उत्सव " में अविस्मरणीय कला प्रदर्शन के लिये भी उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया गया हैं वर्ष १६६० का पश्चिम बंगाल पत्रकार असोशिएशन द्वारा उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया गया हैं।

वर्ष १६६० का पश्चिम बंगाल पत्रकार असोशिएशन द्वारा उन्हें " सवोत्तम गायिका अवार्ड " प्रदान कर के सम्मानित भी किया गया हैं।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की सर्वोच्च श्रेणी की कलाकार श्रीमती सुमित्रा गुहा ने अपनी प्रत्येक प्रस्तुतियों द्वारा कला समीक्षको को और संगीतज्ञों को अत्यधिक प्रभावित किया हैं तभी देश के प्रमुख अखवारों में उनके विषय सदैव प्रशंसा प्रकाशित होती रही है।

'Not only Luman Learts, stones also metls."

- Endu

" Swani Ranganathannnnad of Ramkrishan Math appreciated the spontaneity in her style.

- Deocan Chronicle

She exhibited precision and clarity excelling both in rarganand taans."

- Idian Express.

" Sumitra sanaj like cuckoo bird with its honeyed voice in spring" Vanitha Jyothi.

" Sumitra's music was rentful andcreated ecstatil music and endowed with rich, mellifluous voice."

" She made audiences spellbound with her melodious voice "

- Andhra Jyothi

" She has a very sweet melodious voice which kept the audience intrested throughout and her Khayals and Bhayans are praise worthy".

- Dr. M.G.Diggavi - Times of India.

"Sunitra has a remarkably rich voice with the texture of velvet Her toans are smooth flowing with a commendable speed."

- Hindustan Times.

"Well known as one of the finest treditonal artist in the South Asian Nation, Sumitra Guha has devoted hereself to music Performing and teaching it around the world."

- The Korea Times.

It was abvious from the opening German concert in Saarbrucken that it was a very special tour. The audience was os entranced that they did not want to leave the flissful atmosphere created by the musicians sumitrais rendition of the 27 vedas in Gandharava Veda was superb and deeply moving."

- Konzertburo Report, Wegberg Germany

सुमित्रा के गायन में हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शैली का सुन्दर संयोग स्पष्ट होता है। जो उनकी गायकी को अत्यधिक आकर्षक बनाता हैं। देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोहो में सफल कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी सुमित्रा ने विदेशी में अमेरिका यूरोप के कई श्हरों यथा जर्मनी स्विटजरलैण्ट हालैण्ड, सबिआ हंगरी, पोलैण्ड आदि में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये है। जर्मनी में सुमित्रा जी के गायन ने अत्यधिक प्रभावित किया।

सुमित्रा जी का गायन श्रोताओंा का न केवल प्रभावित करता है। अपितु चारो ओर एक अदभुत सागीतिक माहौल का मधुर वातावरण भी बनाता हैं उनकी गायकी स्वयं में गहारी धर्मिक आस्था एवं मधुरता रखती है जिसकी श्रोता बरबस ही प्रशसा करते हैं युरोप के सफल सांगीतिक दौरे के बाद सुमित्रा जी ने दक्षिण पूर्व एशियन देशों की ा यात्राा की और हागकाग, साउथ कोरिया, जापान, ताईवान, फिलीपीन्स तथा थाईलैण्ड में भी अपनी कला के माध्यम से श्रोतओं की प्रिय कलाकार बनी।

कठोर साधना संगीत के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण ही आज सुमित्रा गुहा ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत उच्चस्तरीय कलाकार का स्थान प्राप्त किया है और देश विदेश में अपने संगीत की पहचान बनाई है।

श्रीमती मालिनी राजुरकर

आज की सुनामधन्य महिला संगीतज्ञों ने अपनी साधना से संगीत के क्षेत्र में आने वाली महिला पीढी के हौसले बुलन्द किये। ऐसी ही एक आदर्श संगीतज्ञा है " श्रीमती मालिनी राजुरकर।"

राजस्थान के अजमेर शहर में जन्मी इन गान तपस्विनी कोअत्यन्त बाल्यावस्था से ही इनके परिवार द्वारा संगलत सीखने हेतु प्रेरित किया गया।अजमेर के ही संगीत महाविद्यालय से इन्होंने "संगीतनिपुण" की डिग्री प्राप्त की जहां उन्हें ख्याल टप्पा एवं तराना गायकी की विशेष शिक्षा प्रदान की। सुमधुर एवं दमदार आवाज की धनी श्रीमती मालिनी राजुरकर ने अपनी गायकी हेतु 'ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध गायक "श्री गोविन्द राव राजुरकर " जो कि 'स्व० राजा भैया पूछवाले " के प्रिय एवं सुयोग्य शिष्य है। उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। योग्य गुरू की कुशल शिष्या ने अपनी मेहनत लगन एवं कठिन साधना द्वारा अपने गायन में अद्‌भुत सौन्दर्य बिखेरा। वह ख्याल ठुमरी,टप्पा, तराना एवं मराठी गीत समान दक्षता से प्रस्तुत करती है।

श्रीमती राजुरकर आकाशवाणी की कलाकार है तथा आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम आकाशवाणी संगीत सम्मेलन के अतिरिक्त देश के लगभग सभी प्रतिष्ठात संगीत सम्मेलनों में अपनी सफल कला प्रस्तुति के द्वारा करोड़ो संगीत प्रेमियों की प्रिय एवं आदर्श गायिका बन चुकी है। मालिनी जी के दो एल.पी. और अनके ऑडियो कैसेट्स भी निकल चुके हैं जो कि संगीत समाज में उनकी धरोहर है।

श्रीमती मालिनी राजुरकर ने यू.एस.ए एवे कनाडा में भी अपने

गायन द्वारा प्रशंसा प्राप्त की हैं और इस प्रकार विदेशियों के हृदय पर हिन्दुस्तजान संगीत की श्रेष्ठता की अमिट छाप छोड़ी है।

वर्तमान समय में श्रीमती राजुरकर अपने पति श्री बसन्तराव राजुरकर जो कि हैदराबाद के गारमेन्ट कॉलेज संगीत और नृत्य के प्रधानाचार्य है के निर्देशक में अपने संगीत को और भी ऊचाई पर ले जा रही है। श्रीमती मालिनी जी से प्रेरित होकर आज अनेक युवा संगीत साधिकए अपनी उपस्थित संगीत समाज में दर्ज कर रही हैं।

आरती अंकलीकर टिकेकर

सुप्रसिद्ध गायिका आरती अकलीकर टिकेकर संगीत जगत में अपना सम्मानित स्थान बना चुकी हैं । अल्पायु से ही संगीत की कठिन साधना से ईश्वरीय वरदान में प्राप्त कठ में वह क्षमता उत्पन्न हुई कि आज वह लाखों सगीत प्रेमियों की आदर्श सगीतज्ञ है । आरती जी की सगीत शिक्षा दस वर्ष की आयु से ही ग्वालियर–आगरा घराने के विख्यात संगीतज्ञ प0 वसन्तराव कुलकर्णी की देख–रेख में प्रारम्भ हुई । पं0 वसन्तराव कुलकर्णी जी स्वयं किसी एक घराने की परिधि में ही सन्तुष्ट रहने वाले कलाकार नहीं हैं । उनका मानना है कि "एक गायक को सभी घरानों की विशेषताओं को अपनाते हुए अपनी विशिष्ट गायन शैली का निर्माण करना चाहिये ।" इसी अवधारणा पर विश्वास रखते हुए उन्होंने अपनी गायकी में किराना, जयपुर, आगरा एवं ग्वालियर घरानों की विशेषताओं का समावेश किया और उसी गायकी की तालीम आरती अंकलीकर जी को दी । यही कारण है कि आरती जी के गायन में भी उपरोक्त चारों घरानों के सौन्दर्य तत्व अपनी–अपनी झलक दिखाते पाये जाते हैं ।

आरती जी की गायकी की एक अन्य विशेषता है – "नाक की आवाज" । उनकी आवाज़ में नाक की आवाज का एहसास उनके द्वारा गाई ठुमरी, दादरा और कुछ चंचल प्रकृति (चाल) की बंदिशों में और भी अधिक भावोत्पादक बना देता है ।

आरती जी की संगीत साधना में उनके श्वसुर एवं सास क्रमश. श्री बालासाहेब टिकेकर एवं श्रीमती सुमति टिकेकर द्वारा भी मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है । उनके अतिरिक्त सुविख्यात संगीतज्ञा श्रीमती किशोरी अमोणकर का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ है जिनकी गायकी का प्रभाव उनकी गायन शैली मे स्पष्ट दिखता है । वर्तमान समय में आरती जी पं0 दिनकर कैकिनी जी के निर्देशन में अपनी संगीत साधना कर रही हैं ।

आरती जी को उनकी दीर्घ संगीत साधना हेतु समय–समय पर विभिन्न छात्र–वृत्तियों से सम्मानित किया गया है यथा राष्ट्रीय छात्र–वृत्ति वर्ष 1975 से 1980 तक, केसरबाई केरकर छात्रवृत्ति – 1980–82 तक प्रदान की गई । इनके अतिरिक्त आरती जी ने अखिल भारतीय आकाशवाणी प्रतियोगिता में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन, ठुमरी एवं गजल इन तीनों वर्गों में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है – यह उनकी विलक्षणता की प्रमाणिकता है

आकाशवाणी के अतिरिक्त आरती जी देश के कई प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी कला की सफल प्रस्तुतियाँ दे चुकी हैं – सवाई गंधर्व, भोपाल कला परिषद, दिल्ली मल्हार उत्सव इत्यादि ।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका एवं कनाडा में भी कई बार अपने सुमधुर गायन से श्रोताओं को आकण्ठ तृप्त किया है ।

आरती जी की अद्‌भुत गायन प्रतिभा की पहचान कर "म्यूजिक इण्डिया" एवं "रिद्‌म हाउज" द्वारा उनके कैसेट्‌स एवं कॉम्पैक्ट डिश भी प्रकाशित करे गये हैं ––

1. म्यूजिक टुडे – 'प्रोडिजी' Prodigy दो श्रंखला में कैसेट्‌स एवं कॉम्पैक्ट डिश ।
2. रिद्‌म हाउज़ – राग ललित एवं जौनपुरी – कैसेट

अनुकरणीय गायन शैली की धनी आरती अंकलीकर टिकेकर आज करोडों संगीत प्रेमियों की प्रिय एवं साधकों की आदर्श गायिका हैं । संगीत समाज को उनकी भेंट उनके कैसेट्‌स के रूप में सदैव उनकी गायकी को अक्क्षुण रखेगी ।

श्रीमती वीणॉ सहस्त्रबुद्धे

जब संदर्भ चल रहा है संगीत क क्षेत्र मे महिला सगीतकारों के योगदान का और वह भी गायन के संदर्भ में तो अज की प्रतिष्ठित गायिकाओं में श्रीमती वीणॉ सहस्त्रबुद्धे का अपना एक विशेष ही स्थान है । सधी हुई आवाज मे जब वह गायन प्रारम्भ करती हैं तो श्रोता भाव रूपी सागर में डुबकी लगानें को मानो बाध्य ही हो जाते हैं । उनकी साधना नें उनके कठ में वे जादू पैदा कर दिया है कि श्रोता बरबस वाह–वाह ही करता है । राग को पूरी शुद्धता स प्रस्तुत करते हुए स्वरों का लगाव ऐसा रहता है कि प्रतीत होता है राग साक्षात् खड़ा है । वह ख्याल गायकी में तो सिद्ध हस्त हैं ही साथ ही तराना भजन और मराठी में भी उतनी ही दक्षता से गाती हैं । संगीत की इन उपासिका का जन्म संगीतज्ञ परिवार में ही हुआ था । इनके पिता स्व0 पं0 शंकर श्रीपद बोडस, पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के सुयोग्य शिष्य थे । वीणॉजी की संगीत शिक्षा का प्रारम्भ नृत्य शिक्षा से हुआ था किन्तु बाद में पिता तथा भाई के द्वारा उत्साहित करनें पर ये ख्याल गायन की तालीम लेनें लगीं । इन्होनें अपने पिता पं. शंकर श्रीपद बोडस, तथा भाई पं0 काशीनाथ शंकर बोडस के अतिरिक्त पद्मश्री बलवन्तरी भट्ट, स्व0 पं0 वसंत छकार, स्व0 पं0 गजानन बुआ जोशी से भी शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया है । इतने विद्वान गुरूजनों से तालीम प्राप्तकर वीणॉ जी की जो गायकी निखर कर सामनें आई उसकी आधार शिला तो ग्वालियर घरानें की है लेकिन किराना एवं जयपुर घराने का भी प्रभाव दिखता है । श्रीमती वीणॉ जी ने अपनें भावपूर्ण गायन द्वारा देश–विदेश में श्रोताओं को आकठ तृप्त किया है । देश के लगभग सभी सम्मानित संगीत समारोहों जैसे आई0टी0सी0 संगीत समारोह, तानसेन समारोह, स्वामी गन्धर्व समारोह आदि के साथ ही पूना, मुम्बई, कोलकता, इलाहाबाद तथा ग्वालियन आदि देश के विभिन्न शहरों मे भी अपना गायन प्रस्तुत किया है । उत्तर भरतीय संगीत की इन चिर् साधिका ने विदेशों में हिन्दुस्तानी सगीत का भरपूर प्रचार–प्रसार किया है । 'वाइस आफ द वर्ल्ड फैस्टिवल' में इन्होनें भारत का प्रतिनिधितव किया है । वीणॉ जी न सिर्फ एक अच्छी गायिका है अपितु एक श्रेष्ठ

संगीतकार और सुयोग्य गुरू भी हैं । इन्होनें अपनी गायिकी की तालीम सुयोग्य शिष्यों को विभिन्न संस्थानों में तथा व्यक्तिगत रूप से दी है । इनके कई शिष्य देश के युवा गायक–गयिकाओं में अग्रणी हो रहे हैं । इनके तीन शिष्यो को संगीत सीखने हेतु राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है, एक शिष्य को प0 जसराज मित्र मण्डल अवार्ड– 1993 से सम्मानित किया गया तथा दत्ताओपन्त देशपाण्डे स्मृति पुरस्कार– 1995 भी प्रदान किया गया है । ये सभी हिन्दुस्तानी संगीत के भविष्य को अपने संगीत से समृद्ध बनायेंगे और ये देन है श्रीमती वीणॉ सहस्त्रबुद्धे की ।

विभिन्न म्यूजिक कम्पनियो ने वीणॉ जी के कई कैसेट तथा सी0डी0 प्रकाशित करवायें हैं । जिनमें से कुछ प्रमुख का विवरण इस प्रकार है –

(1) 'ट्रिब्यूट टु तानसेन' (दो भागों में) – रिदम हाउस
(2) 'ऋतु चक्रम' (तीन भागों में) – रिदम हाउस, इसमें छः ऋतुओं के राग हैं । (इसके सी0डी0 भी हैं)
(3) 'ट्रिब्यूट टु पं0 ओंकारनाथ ठाकुर' –एच0एम0वी0 द्वारा
(4) 'भक्ति माला' – म्यूजिक टुडे द्वारा, इसके सी0डी0 भी हैं ।
(5) 'मॉर्निंग राग' – (इसके कैसेट और सी0डी0 भी हैं)– नवरस रिकार्डस द्वारा
(6) 'फ्लाइट ऑफ मेलोडी' – म्यूजिक टुडे द्वारा
(7) 'मधमाद सारंग' (कैसेट और सी0डी0) – नवरस रिकार्डस द्वारा
(8) 'सरस्वती उपासना' (दो वॉल्यूम) – अधिश्री द्वारा
(9) 'गोपिका चली सुर वन' (सी0 डी0 एव कैसेट) – वीनस रिकार्ड्स द्वारा ।
(10) 'इम्मैक्यूलेट रागाज' (दो वॉल्यूम) – रिद्म हाउस द्वारा ।
(11) 'भाव–वीना' – रिदम हाउस द्वारा ।
(12) 'पंच रत्न माला' – रिदम हाउस द्वारा ।
(13) 'द फर्स्ट माइलस्टोन' – रिदम हाउस द्वारा ।
(14) 'द इमर्जनिंग स्टाइल' – रिदम हाउस द्वारा ।
(15) 'डिवाइन' – बी0 एम0 जी0 क्रेसकेण्डो द्वारा ।

संगीत के क्षेत्र मे वीणॉ जी के अभूतपूर्व योगदानो के लिए उन्हे सन् 1993 में उत्तर प्रदेश संगीत अकादमी अवार्ड द्वारा सम्मानित किया गया । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि नादब्रह्म की यह उपासिका आने वाले कई वर्षों तक अपने सगीत द्वारा श्रोताओं को इसी प्रकार तृप्ति प्रदान करती रहेंगी ।

श्रीमती पद्‌मा तलवरकर

वर्तमान संगीत समाज में श्रेष्ठ महिला सगीतज्ञों की सूची में अग्रणी कलाकार, सुनामधन्य श्रीमती पद्‌मा तलवरकर में गायन का गुण उनके दादा श्री कोनबुवा जी से आया । ईश्वर प्रदत्त सुरीले कठ को साधने हेतु दस वर्ष की अल्पायु में ही वह श्री गगाधर पिम्पलखारे जी के शिष्यत्व में गई जहॉ उन्होंने ग्वालियर और किराना घराने की विधिवत् तालीम प्राप्त की । 1974 में पद्‌माजी को जयपुर घराने की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्रीमती मोघूबाई कुर्डीकर जी का शिष्यत्व प्राप्त करने का सुअवसर मिला जहाँ उन्हे मोघूबाई जी की सुनामधन्य पुत्री श्रीमती किशोरी अमोनकर जी का सानिध्य प्राप्त हुआ और उनसे उन्हों ने सगीत समारोहों में प्रशंसनीय प्रस्तुतिकरण की कला भी सीखी । तदोपरान्त श्रीमती पद्‌मा तलवरकर ने पं0 निवृत्तिबुवा सरनाइक जी से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया और अपनी सागीतिक जिज्ञासा को शान्त करने हेतु स्व0 प0 गजानन राव जोशी जी का कुशल मार्ग दर्शन भी प्राप्त किया ।

किशोरावस्था में ही पद्‌मा जी ने भुलाभाई मेमोरियल ट्रस्ट छात्रवृत्ति एवं केसरबाई केरकर छात्रवृत्ति, जो कि नेशनल सेंटर ऑफ परफॉर्मिन्ग आर्ट्‌स द्वारा प्रदान की जाती है, प्राप्त की ।

पद्‌मा जी की गायकी में विभिन्न घरानों की झलक उनकी अपनी शैली में स्पष्ट प्रलक्षित होती है और यही उनके गायन की वह विशेषता है जिससे वह अन्य समकक्ष कलाकारों से अलग स्थान बना चुकी हैं । आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की नियमित कलाकार श्रीमती पद्‌मा तलवलकर जी ने देश–विदेश में अपने अनेक कार्यक्रमों द्वारा श्रोताओं की सांगीतिक इच्छा की पूर्ति की है और उनसे प्रशंसा प्राप्त की है । यू0एस0ए0 एवं कनाडा मे उनके कार्यक्रमों ने श्रोताओं को विशेष रूप से प्रभावित किया और उन्हें हिन्दुस्तानी संगीत की ओर आकर्षित किया ।

Music Today द्वारा पद्मा जी का कैसेट – गौड सारग निकाला गया जो कि श्रोताओ में अत्यधिक लोकप्रिय भी हुआ ।

इस प्रकार श्रीमती पद्मा तलवरकर जी ने अपने कार्यक्रमों द्वारा कैसेट्स एवं आकाशवाणी, दूरदर्शन के माध्यम से अपनी गायकी से लोगों को आकंठ तृप्त किया एवं विदेशों में अपने देश के सगीत को प्रचारित एव प्रिय बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं । इसके अतिरिक्त विभिन्न घरानों की गायकी को मिलाकर उसमें अपनी स्वसोच मिलाकर उन्होंने अपनी गायन शैली का निर्माण किया है, वह भी प्रशंसनीय है ।

श्रीमती माधुरी दण्डगे

वर्तमान संगीत जगत में स्थापित प्रतिभासम्पन्न गायिका श्रीमती माधुरी दण्डगे ने उत्यन्त बाल्यकाल से ही शास्त्रीय सगीत की शिक्षा स्व0 श्री गोविन्दराव देसाई (गोपाल ग्यान समाज–पुनाके) से लेनी प्रारम्भ कर दी थी । तत्पश्चात् उन्होनें कोलकाता की सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीमती मालविका कानन और मुम्बई की पद्मश्री स्व0 श्रीमती मानिक वर्मा जी से एक साथ दीर्घकाल से तक शास्त्रीय सगीत की बारीकियो को आत्मसात् करती रही । आज भी माधुरी जी समय–समय पर मालविका जी का कुशल मार्गदर्शन प्राप्त करती रहती है ।

संगीत शिक्षण काल से लेकर अभी तक उन्होनें विभिन्न संगीत प्रतियोगिताओं में उच्च स्थान प्राप्त किया यथा 1957 मे एस0एस0सी0 बोर्ड पूना की सेकेण्डरी स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा में प्रथम, 1959 में अखिल भारतीय आकाशवॉणी संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर तत्तकालीन राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी से स्वर्ण पदक ग्रहण किया ।

मराठी स्टेज गाने सीखने के लिये माधुरी जी को पूना के श्री बाल गंधर्व के स्व0 श्री हरीभाऊ देशपाण्डे जी से कुशल निर्देशन प्राप्त करनें का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसकी पूर्ण रूप से लाभ पठाते हुए माधुरी जी ने अपनी लगन और साधना के बल पर 1970 में बालगधर्व स्टेज लॉग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया और 'बालगंधर्व गायकी' उपाधि भी प्राप्त की । 1975 में माधुरी जी ने एस0 एन0 डी0 टी0 कॉलेज मुम्बई की संगीत की एम0 ए0 की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

1966 से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों जैसे– जालन्धर, दिल्ली, मुम्बई, गुवाहाटी, नागपुर, आदि से कार्यक्रम देती आ रही माधुरी जी के कार्यक्रम 1979–80 में आकाशवॉणी नेपाल, काठमाण्डू द्वारा भी प्रसारित किया गया है ।

'ए' ग्रेड की कलाकार माधुरी जी का कार्यक्रम आकाशवॉणी की मगलवासरीय सभा मे भी प्रसारित हुआ है । वह आकाशवॉणी के दिल्ली केन्द्र से सम्बद्ध है ।

इसके अतिरिक्त 1992 फरवरी में दूरदर्शन के राष्ट्रीय सगीत सभा मे भी श्रीमती माधुरी दण्डगे ने अपनी उच्चस्तरीय कला एवं साधना का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत किया था । उनके कार्यक्रमों दूरदर्शन के दिल्ली, श्रीनगर, कोलकाता, मुम्बई तथा मद्रास केन्द्रों से भी प्रसारित किये जा चुके हैं ।

आकाशवाणी एव दूरदर्शन के अलावा देश के महत्वपूर्ण सांगीतिक नगरो जैसे कोलकाता, अमृतसर, इलाहाबाद, दिल्ली, पूना, मुम्बई– (एन0 सी0 पी0 ए0) नासिक, आगरा, शीलॉग, अलीबाग, बडौदा आदि में अपने तैयार गायन से श्रोताओं की प्रशंसा प्राप्त की है । आई0 टी0 सी0 सगीत सम्मेलन, पं0 विष्णु दिगम्बर जयन्ती समारोह –दिल्ली और आगरा, तानसेन संगीत समारोह–ग्वालियर मालवा उत्सव–इन्दौर, आदि प्रतिष्ठित संगीत सभाओं में सराहनीय गायन प्रस्तुतियां दी हैं ।

प्रसिद्ध अखबार **Indian Express** के अनुसार– "Her rexital was tuneful compact and unrepertitive. "

इसी प्रकार **Times of India** में लिखा गया है– "Her bold voice l ushes in a waterfall of notes that numb the listeners' senses Her singing is remarkable for an accurate tonal focus and a no-nonsense approacl to Raga "

"Madhuri Dandage's treatment of Durga was super with her mellifluous poweyul voice clear Taankari. steeped in musicality in her forte "

Hindustan Times

"दिल्ली में राग दुर्गा पर इतना असरदार गायन सालों बाद सुनने का मौका मिला । गौरतलब है कि शुद्ध स्वरों के राग को मधुरता से गाना खास बात है, इस मायने में माधुरी का गाना बेजोड था ।

ख्याल गायन में जो भी उनकी परिपाटी थी उसकी रसमयता से लोग भीग गये ।' –**जनसत्ता** ।

इसी प्रकार उनके एक कार्यक्रम पर टिप्पणी करते हुए 'पंजाब केसरी' में लिखा गया – "श्रोताओं को मत्र मोहित किया । उनकी आवाज अत्यन्त मधुर ठोस और सुरीली है । नाट्य संगीत पर विशेष प्रभुत्व है ।" स्वदेश ग्वालयर के अनुसार– "माधुरी के स्वर लहरियो ने ठिठुरते श्रोताओं में गर्मी उडेली ।"

अपने श्रेष्ठ स्तरीय गायन द्वारा श्रीमती माधुरी दण्डगे वर्तमान समय की एक प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय कलाकार है और नई पीढी के संगीत साधको के समझ एक आदर्श प्रस्तुत कर रहीं हैं ।

डॉ० ऊषा पारखी

संगीत के माहौल में जन्म लेकर प्रतिभाशाली लोगों को स्वयं को उच्च श्रेणी का कलाकार बनाने मे उन लोगों से तुलनात्मक रूप में कही अधिक सुगमता होती है। जो प्रतिशाली तो होते है किन्तु सागीतिक माहौल से दूर रहते है। ऐसे लोगों को स्वय अपनी मेहनत से सारे रास्ते बनानें पड़ते है जो सगीतज्ञ परिवार में जन्में लोगो को बने बनाये मिल जाते है। वास्तव में इस प्रकार अपने रास्ते स्वय बनाकर आगे बढना एक अत्यधिक श्रीसाध्य कार्य है जिसे कोई संगीत के पति पूर्ण समर्पण की भावना रखकर आदम्य साहस और धैर्यशाली संगीत साधक ही कर सकते है क्योकि संगीत से आकर्षित होकर इस क्षेत्र में कदम तो अनेक लोगो रखते है। किन्तु मार्ग की बाधाओ से घबराकर धैर्य खो बैठते है। और किनारा कर लेते है किन्तु आगे वही बढाते है जिनमें अटूट लगन होती है। ऐसी ही संगीत को समर्पित, लगनशील महिला कलाकार है डॉ० श्रीमती ऊषा पारखी जिन्होनें अपनी मेहनत के बल पर अपनी प्रतिभा को पूर्ण सार्थक करते हुए आज उस मुकाम को हॉसिल किया है जिसे संगीतज्ञ परिवार के कलाकार भी आदर की दृष्टि से देखते है और उसे प्राप्त करने के लिये अत्यधिक साधना करते है।

ख्याल, ठुमरी, नाट्यगीत और भक्ति गीतों को पूरी तैयारी और सौदर्य के साथ भावपूर्ण रूप से गाने में कुशल श्रीमती ऊषा पारखी की संगीत शिक्षा नागपुर के सुविख्यात संगीतज्ञ श्री D.G.Alias भइया जी वजलवार जी के शिष्यत्व में हुई। उनके पश्चात् मुम्बई के प्रतिष्ठित वरिष्ठ संगीतज्ञ स्व पं० जगन्नाथ बुवा पुरोहित जी के निर्देशन में ऊषा जी ने अपनी गायन शैली का विकास किया।

आकाशवाणी नागपुर केन्द्र की नियमित कलाकार ऊषा पारखी जी ने अनेक राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों के माध्यम से सम्पूर्ण देश मे अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और अनके मेडल (मेरिट सर्टीफिकेट) श्रेष्ठता प्रमाणपत्र और छात्रवृत्तियाँ भी प्राप्त की।

कठिन रागों को पूर्ण मधुरता और कुशलता के साथ प्रस्तुत करने में दक्ष ऊषा जी का गायन उनकी अद्‌भुत कल्पना शक्ति के कारण विशेष प्रभावशाली बन जाता है। और श्रेताओं के ह्रदय मे अपनी गहरी पैठ बनाता है। ऊषा जी ने अपनी गायकी मे किराना घटाने की खूबियों को आत्मसात् किया है।

गंधर्व महाविघालय महामण्डल से स्व. पं० यशवन्त बुवा पुरोहित पुष्कर जी के निर्देशन मं पी.एच.डी की उपधि प्राप्त डॉ० पारखी वर्तमान समय में नागपुर विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित शोध मार्गदर्शन हैं। श्रीमती बिनजानी महिला महाविद्यालय नागपुर के संगीत विभाग की अध्यक्ष पद से १९६१ से १९८२ तक की इक्कीस वर्ष की लम्बी अवधि तक अपनी सेवाए संगीत जगत को अर्पित करने वाली ऊषा जी महाराष्ट्र सरकार के Bound of Studies in Music और नागपुर विश्वविद्यालय के भी Bound of Studies in Music की सदस्या रही है।

तानसेन विष्णु दिगम्बर छात्रवृत्ति प्राप्त डॉ० पारखी ने अपने गायन से देश विदेश को श्रोताओं को प्रभावित किया है लंदन, रूकडेल, बाथ, स्वीडन आदि स्थलों पर उन्होंने अपनी कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। लंदन के प्रसिद्ध इग्लिश नेशलन आपेरा की ५० वी वर्षगाठ पर आयोजित संगीत समारोह ऊषा जी ने पच्चास घंटो की संगीत मैराथन के भाग लेने की गौरव भी प्राप्त किया हैं । Indian Summer कार्यक्रम में भी लंदन में अपना महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभाई। लंदन के ही भारीतय विद्याभवन , बी बी. सी रेडियो तथा टीवी पर श्री

उनके कार्यक्रम हुए है।

१९८२ में श्रीमती ऊषा को यू एस. ए. तथा कनाडा में कार्यक्रम देने हेतु निमन्त्रित किया गया जहॉ उन्होने न्यूयार्क, वाशिंगटन, शिकागों, हॉस्टन समेत कई शहरों में अपनी कला विलक्षण्ता का परिचय किदया ओर हिन्दुस्तानी संगीत श्रोताओं की सख्या मे वृद्धि की।

डॉ० पारखी की संगीत के प्रति अभिरूचि उसके प्रयोगात्मक ओर शास्त्रात्तक दोनो ही पहलुओ में समाजन रूप से हैं 'पारम्परिक संगीत ओर उसका भविष्य ' विषय पर महत्वपूर्ण शोध करके उन्होने पी.एच. डी. की डिग्री प्राप्त की और अब शोधविद्याथियो की कुशल मार्गदर्शन करके संगीत के शास्त्रात्मक पक्ष को भी सफलता प्रदान करने मे सलग्न है।

देश में आयोजित विभिन्न संगीत समारोहो मे उनकी प्रस्तुति विशेष प्रशंसनीय रही –

"There is case and flow, both in her alap and Taans. She developed the Raga gracesfuylly giving evidence of a quick and inventive mind. In drut, her taans have both speed and clearly."

Indian Express. New Delhi Her vice supple and sweet was melodiously expressive lending, itself to her Ideas with ungroudging promptitude One admired the singing for its rich colouring musical feeling of her skill in the handling of speed.

- Statesman, New Delhi.

Usha rendered a beautiful ' Marwa' in velambit and drut in the noble tradition of Gangubai Hangal. The sombre and yet majectic hlineaments of the difficult, yed hunting meldoy were brought out by her through lingering alap. The ruminating grandeur and the eerie overtones fo this

sandhi Prakash' melody were conveyed through imaginative boltan"

- Times of India - Bombay

"It was a fine piece of introspective music by the artist suported by a reverberating voice quality The tonal skethces depicted by her were in fine fettle with the basics of the Raga . The accentuations in the rendition were dealt with a neat and systematic approach "

- The Hitavada Nagpur

ऊषा जी के लिये उस्ताद रईस खॉ जैसे चोटी के कलाकार के बनाये वातावरण का भार वहन करना बहुत कठिन था। दुबली–पतली ऊषा जी ने ज्योही मारूबिहाग से अपना कार्यक्रम आरभ किया तो सहज श्रोताओं को प्रारम्भ के पॉच मिनट में ही उन्होने आकर्षित कर दिया ।

– नवभारत इंदौर

विभिन्न आयामों से सगीत पर समर्पित डॉ० (श्रीमती) ऊषा पारखी जी पूरे मनोयोग से संगीत को समृद्धशाली बनाने में अपना अमूल्य योगदान निरन्तर प्रदान कर रही है।

श्रीमती कमला बोस

इलाहाबाद के सगीतज्ञ मजूमदार परिवार में जन्मी वरिष्ठ ख्याल गायिका श्रीमती कमला बोस, अन्य कलाकारो मे से एक है जिन्होने अपनी प्रतिभा एवं सगीत के प्रति समर्पण की भावना से दीर्घ कालीन सगीत साधना करके आज के सगीत साधकों के समक्ष एक गौरवशाली आदर्श के रूप में स्थापित हैं ।

इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध वायलन वादक स्व0 श्री जे0डी0 मजूमदार की पुत्री कमला जी ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से ग्रहण की । तदोपरान्त गायन की गहन शिक्षा 1973 से लेकर आज तक इलाहाबाद के वरिष्ठतम संगीतज्ञ कलावन्त पं0 रामश्रय झा जी के शिष्यत्व में प्राप्त की है । लम्बे शिष्यत्व काल में अपने सुयोग्य गुरु के निर्देशन में श्रीमती कमला बोस ख्याल, तराना, ठुमरी दादरा, टप्पा होरी तथा भजन गायन शैलियों में पूर्ण दक्षता प्राप्त की है । इनके अतिरिक्त कमला जी बंगला गीत, रवीन्द्र संगीत तथा नजरूल गीत में भी पारंगत हैं ।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की 'ए' श्रेणी की कलाकार श्रीमती कमला बोस ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे संगीत विषय से स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया तथा स्वर्ण पदक की अधिकारी बनी । इसी प्रकार प्रयागसंगीत समिति से 'संगीत प्रवीण' की परीक्षा में भी सर्वोच्च रही हैं ।

श्रीमती कमला बोस ने 1970 में आकाशवॉणी की सुगम संगीत गायिका के रूप में सांगीतिक क्षेत्र में कलाकार के रूप में पदार्पण किया । 1973 से आकाशवाणी की 'ए' श्रेणी की शास्त्रीय गायिका के रूप में इलाहाबाद–वाराणसी केन्द्र से नियमित रूप से कार्यक्रम देती आ रही इन कुशल गायिका के आकाशवॉणी द्वारा आयोजित विभिन्न संगीत समारोहों तथा राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं –

आकाशवॉणी गोरखपुर शास्त्रीय सगीत सभा, आकाशवॉणी धारवाड, नागपुर, पजिम, पूना, मुम्बई शास्त्रीय सभा, आकाशवॉणी मगलौर, आकाशवॉणी की मगलवासरीय (राष्ट्रीय) सगीत सभा, आकाशवॉणी के विशेष कार्यक्रम 'आइने के सामने' आकाशवॉणी पटना, इन्दौर सगीत समारो, आदि के अतिरिक्त दूरदर्शन लखनऊ से भी इनके कार्यक्रम प्रसारित किये जा चुके है ।

आकाशवाणी इलाहबाद द्वारा 26 कडियों का विशेष सांगीतिक कार्यक्रम 'सगीत–शिक्षा' में शिक्षिका के रूप मे भूमिका निभाई ।

आकाशवॉणी तथा दूरदर्शन के अतिरिक्त कमला जी ने देश के प्रतिष्ठित मचो – आई0 सी0 सी0 आर0, हरिदास संगीत समारोह, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, अल्लदिया खॉ पुण्यसमृति समारोह वाराणसी, उ0 फैय्याज खॉ संगीत सम्मेलन, भुदनेश्वर सगीत समारोह– उडीसा, मैत्री उद्बोधन आश्रम–गुरू पूर्णिमा संगीत समारोह–पटना, अखिल भारतीय विराट सगीत सम्मेलन– इटावा, के अतिरिक्त भी अनेक कार्यक्रमो में अपनी सुमधुर एव भावप्रवण गायकी द्वारा श्रोताओं की भूरि–भूरि प्रशंसा प्राप्त की हैं ।

कमला जी की गायन शैली मे उनकी मधुर हृदय स्पर्शी आवाज, सधी हुई आलाप राग की सुनियोजित बढत और विभिन्न प्रकार की तैयार तानें श्रोताओं को भावविभोर कर देती हैं । उपशास्त्रीय गायन में ठुमरी दादरा में मर्यादित भावप्रस्तुति और लय के साथ शब्दों को पिरोकर गायन करना उनकी गायन शैली की पहचान है । स्वर के लगाव के प्रति उनका विशेष ध्यान, आवाज़ का कम, तेज, जोरदार तथा कोमल प्रयोग श्रोताओं को बरबस ही आकृष्ट कर लेता है ।

सुर–सिंगार संसद द्वारा 'सुरमाणि' उपाधि से अलंकृत इन उत्कृष्ट कलाकार ने ना सिर्फ भारत में अपितु विदेशों में भी हिन्दुस्तानी संगीत के श्रोताओं का आकण्ठ तृप्त किया है । यूरोप की सांगीतिक यात्रा के दोरान फ्रांस, स्विटजरलैण्ड, जर्महनी और इटली में सराहनीय कार्यक्रम प्रस्तुत करके हिन्दुस्तानी शस्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है ।

श्रीमती कमलाबोस का गायन स्विस नेशनल और लंदन मे 1999 में तथा इटैलियन टी0 वी0 द्वारा 1988 मे रिकार्ड भी किया गया है ।

कमला जी का प्रथम सी0 डी0 'रिवरबरेशन' जून 1988 मे नन्दी रिकार्ड्स द्वारा प्रकाशित किया गया है जो शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया है ।

वर्तमान समय में इलाहाबाद महाविद्यालय में संगीत 'रीडर' के पद पर कार्यरत श्रीमती कमलाबोस ने विद्यालयी तथा गुरू–शिष्य परम्परा इन दोनो शिक्षा के माध्यम से अनेक शिष्य–शिष्याएँ तैयार की है जो आज के चर्चित प्रतिभाशाली युवा कलाकार के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं ।

श्रीमती कमलाबोस ने अनेक सांगीतिक समारोहों में लेक/डेम भी दिये हैं जो संगीत प्रेमियों एवं साधकों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध हुए है । सुप्रसिद्ध गायिका की हार्दिक इच्छा है कि वह अपने संगीत ज्ञान को अधिक से अधिक संगीत साधकों को और संगीत प्रेमियो को प्रदान कर उन्हें लाभान्वित करें । श्रीमती कमलाबोस विभिन्न सांगीतिक संस्थाओं की सक्रिय सदस्या है – बारिनदास सगीत सुरभि, संगीत संकल्प, Bengali social & cultural Associaltion आदि ।

इलाहाबाद आकाशवॉणी के स्वर परीक्षण मंडल की सम्मानित सदस्या कमला जी आई0 सी0 सी0 आर0 के कलाकार चयन समिति की भी सदस्या है ।

इस प्रकार विभिन्न आयामों से श्रीमती कमला बोस निरन्तर अपनी सेवाएँ संगीत समाज को समर्पित कर रही हैं और हिन्दुस्तानी संगीत को समृद्धशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं ।

पस्तुति में श्रीमती गिरिजा देवी की गायकी की स्पष्ठ छाप के साथ ही आपकी निजी अनुभूति एवं परिपक्व कल्पना का मणिकांचन सौन्दर्यबोध स्पष्ट परिलक्षित होता है।

आपकी विशिष्ट गायकी से प्रभावित होकर ही आपको उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित २ दिसम्बर १६८१ को देश के सुप्रसिद्ध एवं गणमान्य कलाकारो के साथ, बनारस घराने का प्रतिनिधित्व करने हेतु सादर आमन्त्रित किया गया था।

काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से सस्कृत विषय में प्रथम श्रेणी से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त श्रीमती मजू सुन्दरम् प्रयाग सगीत समिति, इलाहाबाद से संगीत प्रवीण की परीक्षा मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर स्वर्णपादक द्वारा सम्मनित भी की गई है। संगीत के सार्वजनिक मंचो एवं आकाशवाणी,दूरदर्शन केन्द्रो से प्रसारित कार्यक्रमों के क्रम मे आपको दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, मद्रास, पूना, नागपुर, गोवा, इन्दौर, अहमदाबाद, लखनऊ, पटना, इलाहाबाद, गोरखपुर, वाराणसी आदि नगरों में अपना प्रशंसनीय कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर मिला। सन् १६७५ ई में सुर सिंगार संसद (मुम्बई) द्वारा आयोजित 'कल के कलाकार' संगीत सम्मेलन में आपको 'सुरमणि' उपाधि प्रदान की गई है। गंधर्व महाविद्यालय (दिल्ली) राग तरंगिणी (मद्रास) मन्मथनाथ गांगुली मेमोरियल एसोशिएयशन (कोलकाता) आदि संस्थओं में आपके सराहनीय गायन की,द टाइम्स ऑफ इण्डिया,द स्टेट मैन, द इण्डियन एक्सपेस द हिन्दू, आदि देश के प्रमुख समाचार पत्रों में भूरि–भूरि प्रशंसा प्रकाशित की गई है।

काशी की प्रतिभा सम्पन्न, सुशिक्षित, पटु गायिका श्रीमती मंजू सुन्दरम् वर्तमान समय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से समबद्ध नगर की प्रतिष्ठित संस्था वसंत कन्या महाविद्यालय , कामच्छा में, अनेक वर्षो से कंठ संगीत की वरिष्ठ प्रवक्ता के रूप में कार्यरत रहती हुई संगीत जगत में अपना सक्रिया योगदान दे रही हैं।

डॉ० वनमाला पर्वतकार

'लयभास्कर' की उपधि से अलकृत श्री लक्ष्मण राव पर्वतकार सगीत जगत् के मूर्धन्य विद्वानों मे अपना प्रमुख स्थान रखते थे। जिनकी पौत्री डॉ० बनमाला पर्वतकार के पिता की तसला वादन विद्वता से सीत मार्तण्ड पे० ओंकारनाथ ठाकुर विषेष प्रभावित हुए और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अर्न्तगत सगीत कला सकाय में तबला प्राध्यापक के पद पर कार्य करने का साग्रह निमत्रण एवं व्यक्तिगत अनुरोध किया जहाँ पं० ओंकार नाथ ठाकुर स्वयं सकाय प्रमुख एव प्राचार्य के पद पर सुशोभित थे। बनमाला के पिता जी ने उस आमन्त्रण को सादर स्वीकार किया और सपरिवार काशी आ बसे। बनमाला ने काशी हिन्दू विश्वद्यिालय से स्नातक स्तर की शैक्षणिक एवं संगीत कला संकाय से डी. म्यूज की उपधि ससम्मान प्राप्त की।

कंठसंगीत की शिक्षा ग्रहण करने के अध्ययनकाल में वनमाला को संगीत विभाग में कार्यरत श्री बलवन्त राय भट्ट , वी.वी.ठकारे , पी. आर. देवधर, डा़ॅ एम. और गौतम आदि अनेक विद्वान शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला जिससे आपकी संगीत साधना क्रमशाः पुष्ट हाती गई पिता की अचानक मृत्यु से परिवार के भरणपोषण पालन का कठिन उत्तरदायित्व बडी बहन प्रतिभा एवं वनमाला पर आ गया जिसके फलस्वरूप दोनो बहनों को नौकरी करनी पडी। वनमाला ने आर्य महिला डिग्री कालेज में संगीत प्रवक्ता पद पर कार्य करने का उत्तरदायित्व, अतीव योग्यतापूर्वक वर्षो निभाया।

वनमाला को ख्याल गायकी के साथ साथ बनारस शैली की टप्पा, ठुमरी , दादरा, होली, चैती , कजली की गायन शैली सीखने की अदम्य उत्कठा थी, परन्तु पारिवारिक उत्तरदायित्व शैक्षिक कर्तव्य परायणता

के बोझ से दबी वनमाला को वर्षो तक किसी विद्वान से सीखने का अवसर नहीं मिल पाया किन्तु अचानक प्राप्त संयोग से काशी के मूर्धन्य विद्वान गायक छोटे रामदास मिश्र के सुयोग्य शिष्य नगर के प्रतिष्ठित राजवैद्य घराने के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि श्री शिवकुमार शास्त्री से आपका परिचय हुआ जिन्होने काशी की घरानेदार गायन शैलियो की विधिवत शिक्षा वनमाला को देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की और आज शिवकुमकार शास्त्री के निर्देशन मे वनमाला ख्याल के साथ–साथ अन्य शैलियों में साधिकार कार्यक्रम प्रस्तुत करने मे सक्षम हैं प० शिवकुमार शास्त्री के निर्देशन में वनमाला ने काशी में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिनकी श्रोताओं ने अत्यधिक सराहना की । 'शिवा भैरवी' 'ललित' आदि संस्थाओं से मंचप्रदर्शन के अतिरिक्त इन संस्थाओं के सहयोग से वनमाला द्वारा गए शिव स्त्रोत्र का कैसेट श्री निर्मित हुआ। शास्त्री जी के साथ अपनी विदेश यात्रा के दौरान अपने ब्राजील, मारीशस, आदि देशाो में अनेक कार्यक्रम भी दियें है।

आकाशवाणी वाराणसी की कलाकार बनमाला को काशी के अतिरिक्त गोवा, इलाहाबाद , मुम्बई, बंगलोर आदि नगरों में भी कार्यक्रम देने का अवसर प्राप्त हुआ है। मुम्बई की प्रमुख सगीत संस्था सुर सिंगार संसद द्वारा सम्पन्न 'कल के कलाकार' संगीत सम्मेलन के माध्यम से 'सुरमणि की उपधि प्राप्त बनमाला अत्यन्त निराभिमानी, हंसमुख, विद्याप्रेमी, संकोची, लगनशील एवं अध्ययन अध्यापन पारिवारिक उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभाते हुए अपनी संगीत साधना में रह है। आपका संगीत भविष्य अत्यन्त उज्जवल है।

शुभा मुद्गल

संगीत जगत में शुभा मुद्गल का नाम, आज किसी परिचय का मोहताज नही है । श्रेष्ठ गुरूजनों की शिक्षा, अपनी साधना एवं लगन से शुभा गुद्गल आज संगीत–श्रोताओं की प्रिय कलाकार के रूप मे स्थापित हैं, जिन्होनें देश –विदेश मे अपनी प्रभावशाली और आकर्षक गायकी द्वारा संगीत जगत मे अपना उच्च स्थान बनाया है ।

बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न शुभा मुद्गल का जन्म सन् 1959 ई0 में इलाहाबाद के एक संगीत प्रेमी परिवार मे हुआ था । इलाहाबाद में ही आपकी सगीत–शिक्षा नगर के वरिष्ठ संगीतज्ञ प0 रामाश्रय झा के कुशल मार्ग दर्शन में आरम्भ हुइ । विवाहोपरान्त दिल्ली में सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पं0 विनय चन्द्र मौदगल्य एवं पं0 वसंत ठकार नें आपकी गायकी को सजया तथा समृद्धि बनाने में अपना कुशल निर्देशन प्रदान किया । सुविख्यात गायक स्व0 पं0 कुमार गंधर्व की गायन शैली से प्रभावित होकर आपनें उनके शिष्यत्व ग्रहण किया तथा गायन की विशिष्ट तकनीकों एव उनकी गायकी को आत्मसात् कर अपनी गायकी को पैनापन प्रदान किया । ठुमरी गायन की शिक्षा लब्ध प्रतिष्ठित उपशास्त्रीय गायिका श्रीमती नैना देवी से ग्रहण की । इतने योग्य गुरूजनों की गायन शैलियो की विशिष्टताओ को आत्मसात् करती हुई शुभा मुद्गल वर्तमान समय की सुदक्ष, कुशल, प्रतिष्ठित गायिका हैं ।

यद्यपि आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पारम्परिक ग्वालियर घरानें मे हुई थी परन्तु आपकी खोजपूर्ण प्रवृत्ति अपनी गायकी मे अन्य प्रभावों को सम्मिलित करने के लिये प्रेरित करती रही और एक घराने की सीमाओं में सीमित न रह सकीं । **पं0 कुमार गंधर्व** के मार्गदर्शन ने संगीत के प्रति आपके दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन ला दिया । यही कारण है कि आपकी सगीतात्मक पहचान में पं0 कुमार गंधर्व जी की छाया सदैव परिलक्षित होती रही है ।

ख्याल, ठुमरी, दादरा, भजन गायन शैलियों की निपुण गायिका शुभा देश के सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोहो के अतिरिक्त विदशों मे भी अनेक अवसरों पर अपने उत्कृष्ट गायन द्वारा श्रोताओ के हृदय मे हिन्दुस्तानी संगीत की अमिट छाप छोडी है ।

गायिका के अतिरिक्त एक सगीतकार रूप मे भी आप नें अपनी पहचान बनाई है । आपकी सगीत रचनाओं के संग्रह मे गध्यकालीन भक्ति रचनाओं में दुर्लभ सुनाई देने वाली वैष्णव पुष्टि मार्ग क कवियों की रचनाओं के साथ–याथ कबीर, नामदेव, अमीर खुसरो की निर्गुण कविताएँ , नाथपंथी कवि एवं अन्य सूफी कविताएँ सम्मिलित हैं । इन कविताओं के अध्ययपन एव उन्ह सगीतबद्ध करने के परिणाम स्वरूप वे निम्न विषयो के पूरे वैचारिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में समर्थ है –

- कबीर पर्व अथवा कबीर के कार्य
- मीरा पर्व अथवा मीरा के कार्य
- तुलसी पर्व अथवा तुलसी के कार्य
- सूर पर्व अथवा सूर सागर की कुछ चुनिन्दा रचनाएँ
- रीता–ऋतु, सांसारिक संरचना की पृष्ठभूमि पर जेसा कि मालिक में वर्णित है ।
- 'जायसी' की पद्मावत एव अन्य मध्यकालीन रचनाएँ
- हमारे समय की आवाजें, संस्कृत तथा ब्रज एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी त्यौहारों जैसे होली, दिवाली, वसंत आदि पर पुष्टिमार्ग की रचनाओ का संग्रह–'उतसव' ।
- केसव दास की 'रसिक प्रिय' से एक सग्रह– 'रसिक प्रिया' ।
- विभिन्न स्रोतो से बारहों महीने गए जाने वाले गानों का संग्रह– "बारह मासा"

उपरोक्त संकलनों में से अभी तक कुछ की ही रिकार्डिंग हो सकी है । किन्तु यह सभी आपकी व्यापक सांगीतिक दृष्टिकोण को ही दर्शातें हैं । आपने

कभी भी सगीत को सकुचित दायरे मे बॉधना पसन्द नही किया वह चाहे आपकी गायकी हो, सगीत रचनॉ हो या फिर संगीत के शास्त्रीय दायरे के बाहर पॉप सगीत और फ्यूजन हो । शास्त्रीय गायन के अनेक सुप्रसिद्ध कैसेट्स तथा सी0 डी0 के अतिरिक्त आपने पॉपम्युजिक की दुनिया में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए एलबम निकाला है जिसमें आपके गाए गीत 'अब के सावन जम के बरसे' तथा अन्य गीत अत्यन्त लोकप्रिय हुए है । पॉप गायन में भी आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आधार नहीं छोडा । उक्त एलबम मे ही आपका गाया गीत, 'सीखो ना नैनो की भाषा पिया' जहाँ पॉप संगीत प्रेमी श्रोताओं का प्रिय गीत हुआ वहीं उसका आधार शास्त्रीय संगीत प्रेमियो ने भी उसकी सराहना की ।

शुभा सभी प्रकार के संगीत सम्बन्धित विषयों पर कार्य करना पसन्द करती हैं । आपने नार्तक नर्तकियों के लिये भी संगीत दिया है । मीरा, प्रिकर्माकृष्ण कथा पर बनी डाकूमेन्ट्री फिल्म में सगीत दिया जिसे सन् 1998 ई0 में सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का अवार्ड भी प्राप्त हुआ । इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित फिल्म 'मीरा दीवनी' तथा दूरदर्शन धारावाहिकों एवं फिल्म के लिये सांकेतिक संगीत निर्देशन भी किया है ।

विशिष्ट अवसरों पर जैसे ब्रिटिश संग्रहायलय के शुभारम्भ पर भी अपना सफल सगीत निर्देशन दिया । कुछ समय पूर्व ही मीरा नयार की फिल्म कामशूत्र तथा राजन खोसा की डॉस ऑफ द विंड, जो कि पनडोरा फिल्म्स द्वारा जर्मनी में रीलीज हुई, में भी संगीत–निर्देशन किया है ।

बहुआयमी व्यक्तित्व की धनी शुभामुद्गल के गायन से प्रभावित होकर प्रसिद्ध संगीत समीक्षक श्री राघव आर0 मेनन ने लिखा – (हिन्दी रूपान्तर)

शुभा मुद्गल की सांगीतिक उपलब्धियॉ विशेष चारित्रिक विशिष्टताएँ लिये हुए हैं जिसे पहचानने के लिये गहरी समझ की आवश्यकता है । मंच पर उनकी आवाज पहली श्वॉस में ही आकर्षित करती है । उनकी आवाज में गहराई है, विविधता तथा वह जानी मानी विशिष्टता हे जिससे वह जितना गाती हैं उससे कहीं अधिक कह जाती हैं उससे कहीं अधिक कह जाती हैं । यह केवल दैवी

उपहार नहीं वरन् साधना से अर्जित हैं । वह ऐसी स्पष्ट एवं बिना दोहरे अर्थ वाली बात कहनें में समर्थ जो संगीत रचना के मूल मे प्रसन्नता की खोज एव आश्चर्य की ओर इंगित करने के लिये पर्याप्त है । रागो को जिस प्रकार दमकते हुए ढंग से प्रकट एव छाया के साथ प्रर्दशन करती है वह केवल एक अभ्यासी के अभ्यास का प्रदर्शन ही नही होता वरन जागरूकता पैदा करने वाला होता है । "शुभा जी के संगीतिक विशिष्टता के सम्मुख उनकी विशिष्ट शिक्षा का बहुत कम योगदान लगता है । वह वास्तव में स्वय के लिए गाती हैं बिना सीमाओ मे बंधे, केवल उन्हें छोडकर जो उनके सगीतिक चरित्र का एक हिस्सा बन गये है ।"– **राघव आर मोनन, (संगीत समीक्षक)**

शुभा मुद्गल ने तानपुरा एव तबला वादकों के साथ स्थान ग्रहण किया । हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रेमियों द्वारा मुझे बताया गया था कि वे सर्वोत्तम कलाकारों में से एक हैं मगर अतिविशिष्ट नहीं । उनकी खुली आवाज़ ने मेरा हृदय भर दिया जो मैं अब तक महसूस करता हूँ । स्वर रचनाओं ने मेरे नेत्र ऑसुओं से भर दिये तथा मैं अचम्भित रह गया । कई बार मैंने ऊपर नीले आकाश की ओर बादलों की ओर देखा, जो इधर–उधर उड रहे थे और कल्पना हुई जैसे अकबर, जहॉगीर तथा शाहजहॉ की आत्माएं इस विशिष्ट आवाज को सुन रही हैं । मेरे लिए यह मेरे जीवन का विशेष अनुभव था । मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे रागों के सम्बन्ध मे ज्ञान नही है परन्तु मेरे लिए यही सर्वोत्तम था कि हिन्दुस्तानी संगीत को सुन सका । कौन कहता है कि वह सर्वोत्तम नही है ? – खुशवन्त सिंह, द सण्डे आबजर्वर 16 मार्च 1992 ।

शुभा मुद्गल को उनकी बहुआयामी संगीत प्रतिभा एवं व्यक्तित्व को देखते हुए उनके सांगीतिक योगदानों के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हें "पद्मश्री" अलंकरण से नवाजा गया है । शुभा मुद्गल का सदैव से नये का खोज में संलग्न रहना, कुछ अलग करने वाला व्यक्तित्व उन्हें भविष्य के महानतम संगीतज्ञों की श्रेणी में सम्मिलित करने में पूर्ण सक्षम है ।

श्रुति सादोलिकर

●

युवा पीढी की गायिकाओं में 'श्रुति सादोलिकर' ने एक जगमगाते सितारे के समान अभर कर, संगीत जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है । श्रुति का जन्म जयपुर घराने के सुप्रसिद्ध गायक प0 वामनराव सादोलिकर के यहॉ हुआ । स्वाभाविक ही है कि जन्म से ही पिता के गायन एव घर मे सगीतज्ञो के आनें-जाने के माहौल का प्रभाव श्रुति गहन रूप से पडा और वह सगीत शिक्षा अपने पिता श्री वामनराव सादोलिकर से प्राप्त करनें लगी । पं0 वामनराव सादोलिकर जो कि उ0 अल्लादिया खॉ साहब के बडे ही सुयोग्य शिष्य रहे, अन्होनें अपनी पुत्री के कंठ में जयपुर घराने की समस्त विशेषताएँ बडी लगन से आत्मसात कराई जिसकी पुत्री श्ने अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम से साधना की । अपने पिता के अतिरिक्त श्रुति जी नें उ0 गुलुभाई जसदान वाला से जयपुर घराने की दुर्लभ बंदिशों का 'खजाना' भी प्रात किया है ।

श्रुति जी ने अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय से 'संगीत विशादर' की परी क्षा उत्तीर्ण की है तथा एस0 एन0 डी0 टी0 विश्वविद्यालय की संगीत विषय में स्नाताकोत्तर भी हैं जहॉ उन्हें 'भास्कर बुआ बखले' पुरस्कार प्रदान किया गया । 'भुलाभाई मेमोरियल इन्स्टीट्यूट' की 'स्कॉलर' श्रुति सादोलिकर को 'नेशनल सेटर फॉर द परफॉर्मिग आट्र्स' की ओर से 'सुर श्री केसरबाई केरकर' की सम्मानित छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई है ।

श्रुति सादोलिकर के गायन से उनकी श्रेष्ठ तालीम और रियाज के साथ-साथ उनकी विलक्षण प्रतिभा का भी परिचय मिलता है । शस्त्रीय ख्याल गायन के साथ-साथ श्रुति, ठुमरी, गजल, भजन तथा नाट्य सगीत की भी सराहनीय प्रस्तुति करी है। । स्वदेश के विभिन्न सांगीतिक समारोहों में अपनी गायन प्रतिभा का प्रदर्शपन करनें के अलावा उन्होनें कनाडा तथा यू0 एस0 ए0 में अपने सुरीले गायन से लोगों को आकर्षित किया है । श्रुति सादोलिकर के अनेक

कैसेट्स तथा रिकार्ड्स भी निकाले गए है –

कैसेट्स / एल0 पी0 के नाम प्रकाशक – राग (चीज)

(1) 'श्रुति सादोलिकर काटकार–ए टू शिष्या' रिद्महाउस वृन्दावनीसारग, नन्द

(2) श्रुति सादोलिकर इन द जयपुर– अतरौली ट्रेडिशन

रिद्महाउस – भीमपलासी

(3) श्रुति सादोलिकर म्यूजिक–टुडे– अहिर भैरव, विभास, पटदीप और श्री ।

(4) एल0 पी0– भक्ति वर्षा सी0 बी0 एस0 – भजन

(5) एल0 पी0–साज–ए–दिल – सी0 बी0 एस0 – गजल

श्रुति जी के कुछ प्रचलित कैसेट्स

श्रुति सादोलिकर के गायन से उनमें एक सशक्त गायिका के सभी लक्षण स्प्ष्ट दिखतें हैं । भविष्य उनसे आशान्वत है ।

शान्ति शर्मा

वर्तमान समय में संगीत जगत में शान्ति शर्मा ने अपने सुमधुर, शास्त्रोक्त एव सुरीले गायन से अपनी प्रतिष्ठित जगह बना ली हैं । सुप्रतिष्ठत गायिका शान्ति शर्मा का जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार मे हुआ तथा संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा किराना घरानें के श्री संगमेश्वर गुडुर से प्राप्त की । सन् 1978 में उन्होने श्रीराम भारतीय कला केन्द्र में पं0 अमरनाथ की शिष्या बनकर प्रवेश किया और आज वह पं0 अमरनाथ की सर्वाधिक समर्पित एवं सुयोग्य शिष्याओ में अव्वल मानी जाती हैं । शान्ति जी नें पं0 अमरनाथ के अतिरिक्त श्री वसंत ठकार तथा श्रीमती शालिनीधर से भी मार्ग दर्शन प्राप्त किया है और आजकल किराना घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार उ0 कश्फूर अली खॉ जी के सुयोग्य निर्देशन मे साधनारत हैं।

शान्ति जी की मधुर–सुरीली आवाज में स्वरो की क्रमशः बढत द्वारा राग प्रस्तुतिकरण उ0 अमीर खॉ की परम्परा सघन साधना से निखार कर सगी जगत को अपनी विलक्षणता का परिचय दिया है । ख्याल गायन के साथ–2 शान्ति जी भजन तथा तराना की सुन्दर एव प्रभावक प्रस्तुति करती हैं ।

आकाशवॉणी एवं दूरदर्शन की नियमित कलाकार होने के अतिरिक्त शान्ति शर्मा ने देश के लगभग सभी महत्वपूर्ण सांगीतिक समारोहों यथा 'सवॉई गधर्व संगीत सम्मेलन' पुणे, 'हरिवल्लभ सगीत सम्मेलन–' जालन्धर, उ0 अमीर खॉ समारोह– 'इन्दौर', बेगम अख्तर समृति समारोह– 'लखनऊ' 'शंकरलाल समारोह'–दिल्ली, के अलावा भी विभिन्न शहरों में अपनी गायन शैली से लोगों को प्रभावित किया है ।

'स्पिक–मैके' की ओर से आयोजित –'वर्कशाप' तथा वाक–प्रदर्शन की श्रृॅखलाओं में भी अनेक बार शान्ति जी ने भाग लेकर अपनी कला का सफल प्रदर्शन किया है ।

शान्ति मे वह भी सम्भावनाएँ स्पष्ट लक्षित होती है जो एक महान सगीतकार मे होती हैं । इन जैसी कुशल गायिका को देखकर सगीत समाज अपने भविष्य की ओर से सदैव निश्चित एवं आशान्वत रहता है क्योकि यह वर्तमान के उन मजबूत खम्भों में से है। जिन पर संगीत के भविष्य की इमारत खडी होनी है ।

शुभ्रा गुहा

आगरा घराने की गायनशैली को आगे बढाती हुई, वर्तमान सगीत जगत की युवा–स्थापित कलाकार, सुश्री शुभ्रागुहा ने सुयोग्य गुरूजनो के निर्देशन मे अपने सुरीले कंठ को कठोर साधना के द्वारा उन सभी सागीतिक खूबियो का भण्डार बना लिया है, जिसके आकर्षण से विशाल जन समूह उनके कार्यक्रम में खिंचा चला आता है । शास्त्रीय गायन मे ख्याल, तराना, ठुमरी/दादरा, टप्पा, होरी की पूर्ण कुशलता से भावनात्मक प्रस्तुति में निपुण शुभ्रागुहा उन कुछ भाग्यशाली साधकों मे से एक हैं जिन्होने अपने सुयोग्य गुरूजनों का पूर्ण स्नेह युक्त मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त किया है ।

संगीत प्रेमी परिवार में जन्मी शुभ्रा जी की प्रारम्भिक शिक्षा बहुत ही कन आयु से स्व0 श्री सतीश भूवमिक के निर्देशन में आरम्भ हुई । उनके पश्चात् शुभ्रा जी ने सगीत रिसर्च अकादमी के माध्यम से आगरा घराने के सुप्रसिद्ध सगीतज्ञ पं0 सुनी बोस जी का शिष्यत्व ग्रहण किया तथा आज तक उन्हीं की देख–रेख में अपनी सगीत कला का नित नइ ऊँचाई दे रही हैं ।

गुरू के निर्देशानुसार सगीत साधना करते हुए शुभ्रा गुहा जी ने आगरा घराने की सभी विशेषताओ को आत्मसात् किया । आगरा घराने की विशेषता, जेसे मध्य लय की बदिश, मे कहन, बहलाव, जोरदार तथा मुक्त आवाज मे स्वर लगाव आदि सभी, शुभ्रा जी के कठ से अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ प्रकट होती हैं । इनके अतिरिक्त शुभ्रा जी ठुमरी मे भी गहरी रूचि रखती थी अत. स्व0 'ध्रुवतारा जोशी' जी से पूरब अग के उपशास्त्रीय गायन की भी विधिवत तथा गहन तालीम प्राप्त की । इस प्रकार दोनो प्रकार की गायन शैली के साथ पूर्ण ईमानदारी बरतते हुए उन्होने पूरी लगन के साथ उसमे पूर्णकुशलता प्राप्त की है और आज वह एक अनुकरणींय गायन शैली प्रस्तुत करती ह जिससे युवा पीढी के सगीत साधक प्रेरित और उत्साहित होते है ।

एस0 आर0 ए0 परिवार की 1978 से बनी सदस्या के रूप में हीं उन्होने पारम्परिक गुरूकुल पद्धति से ही अपने गुरू श्री सुनीलबोस से विधिवत शिक्षा प्राप्त की और वहीं स्व0 पं0 के0 जी0 गिण्डे, जो कि सगीत रिसर्च अकादमी के विजिटिंग गुरू थे, का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन भी प्राप्त किया । पं0 वी0 के0 किचलू जी का भी अमूल्य मार्गदर्शन उनकी गायकी निर्माण में सहयोगी रहा है । अपनी हम उम्र कलाकारों में शुभा जी का राग विषयक ज्ञान तथा बदिशों का भण्डार अत्यन्त विशाल है ।

आज शुभ्रा जी संगीत रिसर्च अकादमी की एकमात्र महिला स्कॉलर है जिन्हे गुरू का सम्मान भी प्राप्त है । शुभ्रा जी के अनेक सी0 डी0 और कैसेट्स निकाले गये हैं –आकाशवॉणी की नियमित कलाकार शुभ्राजी ने देश–विदेश में अनेक सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं । मंच पर उनकी शिष्टतापूर्ण सौम्य उपस्थिति, तैयार एवं आकर्षक गायकी तथा स्वाभाव में नम्रता अलग और अग्रणी बना देते हैं ।

अपने महत्वपूर्ण गायन द्वारा शुभ्रा जी हिन्दुस्तानी संगीत को निरन्तर समृद्ध बनाने में अपना स्नेहसिक्त योगदान दे रही हैं ।

डॉ० सुहासिनी कोरटकर

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में डॉ० सुहासिनी कोरटकर एक प्रतिभा सम्पन्न गायिका है, जो भिण्डी बाजार की गायकी को कुशलता पूर्वक प्रस्तुत करती है। गायन की तालीम उन्होने भिण्डी बाजार घरानें के सुप्रसिद्ध एव प्रतिष्ठित कलाकार प० टी०डी०जानोरिकर जी से प्राप्त की है। शास्त्रीय सगीत के अतिरिक्त सुहासिनी जी ठुमरी, दादरा, भजन एवं मराठी गीत तथा अभग की भी सुन्दर प्रस्तुति करती है।

राग प्रस्तुतिकरण के समय सुहासिनी जी आलाप के माध्यम से राग के स्वरूप का सुन्दर एवं प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुति , सरगम एव विविध प्रकार की तानों के द्वारा अपनी प्रभावशाली गायकी का प्रदर्शन करती हैं ख्याल, ठुमरी, भजन, अभंग आदि विभिन्न गायन शौलियों को गाने में उनकी विशिष्टता यह है कि सभी शैली की शुद्धता और पारम्परिकता बनाए रखते हुए उसकी भावमय प्रस्तुति करती है।

डॉ० सुहासिनी कोरटकर ने सगीत विषय से ही पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की है। यह आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की "ए." ग्रेड की कलाकार है तथा उनके राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी कार्यक्रम दिये है। इसके अतिरिक्त देश के अनेक शहरों में होने वाले विभिन्न संगीतिक समारोहों में भी अपनी प्रतिभा का सफल प्रदर्शन किया है।

सुहासिनी जी को सुर सिंगार संसद की ओर से "सुर–मणि " का अवार्ड प्रदान किया गया है।

कलापिनी कोमकाली

विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक स्व0 कुमार गधर्व के निवास स्थाल पर अक्सर जाने वाले उनके निकटवर्ती लोगों के गथनानुसार कुमार गंधर्व जी के घर मे दो इलेक्ट्रॉनिक तानपुरे अनवरत बजते रहते थे क्योकि गधर्व जी हर वक्त 'सुर' में ही खोए रहते थे । ऐसे संगीत को वमर्पित पिता एवं माता, श्रीमती कलापिनी कोमकाली जो एक उच्चकोटि की गायिका एव गुरू है, की गोद में जन्म लेने वाली पुत्री के तो संस्कार ही संगीतमय रहते हैं उस पर अगर सच्ची साधना का साथ हो तो निश्चय ही वह विशेष स्तर की कलाकार होगीं । ऐसी ही है आज की जानी–मानी गायिका सुश्री "कलापिनी कोमकाल" । जन्म से ही माता–पिता के संगीत को सुनते–2 वह बड़ी होने लगी और उनके स्वर में अपना स्वर भी मिलाने लगीं यहीं से कलापिनीं स्वर्गवास के पश्चात् माता के द्वारा आज तक अनवरत चल रही है ।

ग्वालियर घरानें की गायकी को स्वय कुमार गंधर्व जी ने ही अपनी सोंच से अपनें कंठ के अनुरूप ढाल कर एक नया स्वरूप प्रदान किया । उनकी गायकी सहज साध्य नहीं है और पुरूष कंठ के उपयुक्त है । कलापिनी जी नें अपने यिपता की गायकी को जैसे का तैसा अपने कंठ में उतारनें के बजाय अपनी बुद्धि एव अपने स्त्री कठ को ध्यान मे रखते हुए उस गायकी मे नवीन प्रयोग करते हुए अपनी गायकी का निर्माण किया जिसकी आज संगीतज्ञों एवं संगीत प्रेमियों द्वारा मुक्त कंठ से सराहना की जा रही है । आज के सांगीतिक समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकने वाली कलापिनी कोमकाली की संगीत समाज को सबसे महत्वपूर्ण देन उनकी गायकी ही है जो उन्होंनें अपने घराने, पिता की गायकी एवं अपनी बुव्द्धि और कल्पना के संयोग से निर्मित की है । उनकी गायकी में गहरी सांगीतिक समझ, तैयारी, माधुय्र एवं सतत् संगीत साधना का "ओज" स्पष्ट दिखता है । अपनी सधी आवाज में वह संगीत के साहितय एवं स्वर के अनुसार भावोत्पादक प्रस्तुति देती हैं । उनके संगीत में भावोत्पादकता का एक प्रमुख कारण लोकसंगीत का स्पर्श भी है और उनकी गायकी का यह अंग उनके

पिता की स्मृति को ताजा करता है ऐसा प्रतीत होता है कि अपने पिता एव गुरू से प्रोरणा लेकर कलापिनी संगीत के उसी अद्वितीय शिखर की ओर उन्मुख है जिसकी निर्माण उनके पिता सदृश्य सगीतज्ञो ने किया है ।

देवास स्थित कुमार गंधर्व संगीत अकादमी की सक्रिय ट्रस्टी कलापिनी कोमकाली जी ने सम्पूर्ण देश में अपनी कला की सफल प्रस्तुतियाॅ दी हैं । उनकी साधना एवं लगन यह स्पष्ट बता रही है कि वह आने वाले समय मे सगीत की उच्चतम् चोटी पर अवश्य ही आसीन होगी ।

डॉ0 (श्रीमती) सुनीता भाले

इलाहाबाद के संगीत को समर्पित कलाकार परिवार में जन्मी डॉ0 सुनीता भाले संगीत समाज में तेजी से अपनी पहचान बना रही है । उनके दादा स्व0 प्रो0 वी0ए0 कशाल्कर, पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के प्रथम शिष्यो में थे । सुनीता जी ने संगीत की सर्वप्रथम शिक्षा अपने पिता श्री शान्ता राम विष्णु कशाल्कर जीी से ग्रहण की । तदोपरान्त इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध एवं वरिष्ठ कलावन्त संगीतज्ञ पं0 रामाश्रय झा जी के सुयोग्य मार्गदर्शन मे संगीत साधना की । स्व0 प्रो0 बी0आर0 देवधर के शिष्य पं0 चन्द्रशेखर पी0 टेले जी ने भी सुनीता जी की गायकी मे सुनहरे रंग भरने में महत्वपूर्ण भुमिका निर्वाह की है ।

प्रतिभाशाली सुनीता भाले ने 16 वर्ष की आयु मे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित वार्षिक सगीत प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त किया । 1981 मे सगीत विषय से, इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया । 1996 में इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ मे डॉ0 अमरीश चन्द्र चौबे के सुयोग्य मार्गदर्शन में सुनीता जी ने शोध कार्य सम्पन्न किया और डॉ0 की उपाधि प्राप्त की । उसके बाद अभी वह 'ख्याल की स्वरचित बंदिशें – वाग्येकार' विषय पर दूसरा शोध कार्य कर रही हैं ।

सुप्रसिद्ध तबला वादक श्री मुकुन्द भाले की पत्नी सुनीता भाले ने विवाहोपरान्त भी अपनी संगीत साधना पूर्ण समर्पण की भावना से शिद्दत के साथ जारी रखी है और संगीत को गायन तथा शास्त्रात्मक दोनो क्षेत्रों में निरन्तर अपनी सेवाएं अर्पित कर रही हैं ।

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ में शिक्षिका के रूप में संगीत की युवा पीढी को शिक्षित कर रही सुनीता जी के 'बंदिश' विषय पर लिखे गये उनके विवरणों को अत्यधिक प्रशंसा मिली है ।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की B-high ग्रेड की नियमित कलाकार, सुनीता भाले जी ने देश के अनेक सम्मानित संगीत समारोहों – विष्णु दिगम्बर जयन्ती, नई दिल्ली, भारत–भवन, भोपाल, कुमार गन्धर्व जयन्ती समारोह, देवास, प0 भोलानाथ भट्ट स्मृति समारोह, इलाहाबाद आदि के अतिरिक्त भी कानपुर, मुम्बई, लखनऊ, होशगाबाद, रायपुर आदि नगरों मे सफल तथा सराहनीय कार्यक्रम दिये हैं ।

सुनीता जी की राग प्रस्तुति मुख्य रूप से ग्वालियर शैली में होती है जिसमें राग की शुद्धता बरतते हुए सौन्दर्य के विभिन्न रंग बिखेरती है । ख्याल गायन के साथ ही सुनीता जी भजन, ठुमरी और मराठी गीत भी भावपूर्ण और आकर्षक रूप से गाती हैं ।

डॉ0 (श्रीमती) सुनीता भाले अपनी संगीत साधना तथा गहन अध्ययन द्वारा निरन्तर अपनी सेवायें अर्पित कर रही है तथा तेजी से अपनी पहचान एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में बना रही हैं ।

श्रीमती अनिता रॉय

रामपुर घराने के सुप्रसिद्ध महान सगीतज्ञ स्व० उ० मुश्ताक हुसैन खॉ साहब की शिष्या श्रीमती अनिता रॉय ने संगीत के प्रति अपनी नैसर्गिक प्रतिभा एवं रूझान चार वर्ष की अत्यन्त अल्पआयु में ही प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया था। अतः तभी से उनकी संगीत शिक्षा प्रारम्भ की गई। दस वर्ष की ही आयु मे अनिता ने अपना प्रभाव शाली एवं तैयार गायन ' मसूरी संगीत सभा' मे प्रस्तुत कर श्रोताओं को चमत्कृत कर दिया था। तब से लेकर आज तक देश के विभिन्न सम्मानित तथा प्रतिष्ठित संगीत समारोहों मे अपना आकर्षक गायन प्रस्तुत कर संगीत मर्मज्ञों एवं संगीत प्रेमियों द्वारा सराहना प्राप्त की है। रामपुर घराने की ख्याल गायकी का अनुकरण एवं सम्बर्धन करती हुई अनिता जी की गायकी में गम्भीर आलाप, बोलआलाप, तथा आकर्षक और तैयार तान तथा बोलतानों विशेष प्रभावशाली बनाती हैं। विश्व प्रसिद्ध ध्रपद गायक बधु उ० नसीर फैजउददीन डागर एव उ० नसीर साहियद्दीन डागर का मार्गदर्शन भी अनिता जी ने ग्रहण किया है जिसका प्रभव उनकी आलापसे जोकि धुपद अंग से प्रभवित हैं स्पष्ट होता है इनके अतिरिक्त दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की डीन के रूप में डा० श्रीमती सुमति मुराअकर के सुयोग्य मार्गदर्शन ने अनिता जी की गायकी को और भी तराशा संवारा तथा पारस्परिक ध्रपद धमार गायकी की शिक्षा प्रदान की । दिली विश्वविद्यालय में ही आगरा घरोन के सुप्रसिद्ध गायक उ० यूनस खँ ने भी अनिता की गायनशैली के निर्माण में अपना सहयेग अर्शिवाद दिया। वर्तमान समय में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठित रामपुरा सहसावन घराने की तालीम उ० हाफिज अहमद खाँ साहब के निर्देशन के ग्रहण कर रही है। संगीत जगत के महान संगीतज्ञों के निर्देशन में संगीत साधना करते हुये श्रीमती अनिता राय ने देश की अनेक संगीत सभाओं में दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ, देहरादून मसूरी,

जयपुर तथा अहमदाबाद आदि शहरों में अपने प्रभावशाली तथा सधे हुये गायन के प्रस्तुतिकरण से श्रोताओं की सराहना प्राप्त की है। 'संगीत नाटक अकादमी अवार्ड' द्वारा सम्मानित श्रीमती अनिता राय के उत्कृष्ट गायन की विभिन्न प्रतिष्ठित समाचार पत्रो में संगीत समीक्ष मे द्वारा भूरि–भूरि प्रशसा प्रकाशित हुई है।

1 Bilask lanitodi was intelligently rendered by Anita Roy Her rapid ulterance was clear and comfirm able to Raga's form

- The Sundary Statesman July 30 1978

2 Anita Roy opened her recital with vilambit khayal in yaman exhibiting a pleasant.responsful style and bringing out the proper mood of the raga. Her attempts at modulation were creditable shewas perfected the falsetto style and will do well to pay more attention to a full throated and rendition of the form."

- The Hindustan Times Daily Nov. 27 th 1987.

3. Anita Roy's Khayals in the Tuesday Night concert of June 5 th in Behag and in Rageshwari were Pleasing as she rendered slow Khayal's sthayee and antra besides the first round of sargams which followed

- The sunday stateman. New Delhi Juna 10, 1984.

Anita Roy is disciple of the late ustad Mustaq Hussain Khan of Rampur. Later she continued to learn music from Hafeez Ahmed Khan of Rampur Shehwan Gharana. Anita Roy's speiality of the classical music lies in weaing beautiful and systematic patterns in Alap and Bal Alap. She also renders fast toans admirabley.

- The Fortnightly Journal of All India Radio, Akashbani June 1 - 15 , 1984.

देश के प्रतिष्ठित एव संगीत कोष धारी विभिन्न संगीतज्ञो के निर्देशन में सतत् संगीत साधना करती हुई श्रीमती अनितारॉय आज संगीत जगत में अपनी अलग ही पहचान बना चुकी है तथा अपने सुमधुर एव सम्पन्न गायकी द्वारा उत्तर भारतीय सगीत को समृद्ध बनाने में अपना सतत् योगदान प्रदान कर रही है।

श्वेता झावेरी

युवा पीढी की प्रतिभाशाली, तैयार तथा प्रभावपूर्ण गायिकाओं मे अग्रणी, 'श्वेता झावेरी' उन अल्प कलाकारो मे से हैं, जिन्होने अत्यधिक कम उम्र में ही अपनी कला साधना से देश–विदेश के श्रोताओ को रससिक्त कर अपनी पहचान कुशल गायिका के रूप में बनाई है ।

श्वेता झावेरी प्रथम महिला गायिका हैं जिन्होंने भारत के गुजरात प्रदेश का अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व किया है ।

ख्याल शैली की गायिका श्वेता, दस वर्ष की अल्पायु से ही ख्याल और भजन की रचना कर मच पर सफल प्रस्तुतियॉ देती आ रही है । इसके अतिरिक्त वह टप्पा और ठुमरी की भी तैयार तथा भावपूर्ण प्रस्तुति करती हैं । उनके गायन से उनकी संगीत साधना की गहनता, गहराई और आकर्षक आवाज में उनके गायन शैली का अनोखा अन्दाज, जिसमें शास्त्रीयता का मजबूत आधार स्पष्ट प्रलक्षित होता है, बरबस ही श्रोताओं का चित्र आकर्षित कर लेता है ।

'कॉस्मिक ख्याल' बैनर के अन्तर्गत श्वेता स्वरचित एवं स्वरबद्ध बंदिशें, प्रयोगात्मक गायन की दुनिया मे प्रस्तुत करती हैं जहॉ वह स्वयं एक सक्रिय प्रयोगात्री और सम्मानित शास्त्रीय कलाकार सदस्या हैं । उनके इस Experimental Music के दो C.D.s भी प्रकाशित हुए हैं –– (1) The Court Musician - by Waterlily, U.S.A. (2) Anahita - ("Cosinic Khayals" Music) - by Intuition, Germany.

इस नवीन शैली से अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा श्वेता संगीत जगत को कुछ नया, अलग हट कर अपना योगदान देती रही हैं, जो वास्तव में प्रशंसनीय है । इसके अतिरिक्त श्वेता के शास्त्रीय गायन के कई कैसेट्स और सी0डी0

भारत मे तथा विदेशो मे भी प्रकाशित हुये है --

कैसेट्स --

(1) रजनी गन्धा -- Indian Classical by Crecendo, India

(2) Heritage Gharana - Indian Classical by H M.V , India

सी०डी० --

(1) In various moods - Indian Classical by Biswas, U.S.A

(2) Ecstasy - Indian Classical by Biswas, U.S A.

(3) Dance by the Wind - Feature Filena CD by Navras, U K.

इस प्रकार कम आयु में ही अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं साधना के बल पर श्वेता झावेरी ने संगीत को समृद्धशाली बनाने में अपना आमूल्य योगदान प्रदान कर रही हैं ।

अनिता सेन

शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा लोक गीतों को समान दक्षता से प्रस्तुत करने वाली कलाकार 'अनिता सेन' आज देश की प्रतिभाशाली श्रेष्ठ गायिकाओ मे से एक हैं । राजनीति शास्त्र तथा सगीत गायन इन दोनों विषय से स्नातकोत्तर करने के बाद अनिता 'सितार' और 'वायलन' से 'विशारद' भी किया है । बहुमुखी प्रतिभा की धनी इन कलाकार ने लेखन क्षेत्र मे भी ''भारतीय शास्त्रीय संगीत में टैगोर का योगदान'' विषय पर महत्वपूर्ण शोधग्रन्थ प्रस्तुत कर डाक्टर की उपाधि ग्रहण की है । ग्वालियर से 'सगीत रत्न' की परीक्षा गायन विषय में उत्तीर्ण कर लखनऊ से सितार वादन की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है ।

अनिता सेन को कई महान सगीतज्ञों मार्गदर्शन द्वारा अपनी कला प्रतिभा को सजाने–सवारने का सुअवसर मिला जिसमे उन्होने रायपुर के पं0 विष्णुकृष्ण जोशी, पं0 लक्ष्मण प्रसाद जयपुर वाले, प्रो0 बी0आर0 देवधर, प0 हाल्केराम भट्ट, डॉ0 मनीश्वर दयाल और श्रीमती माधुरी सरीखे गुरुजनो का सुयोग्य निर्देशन ग्रहण किया । इतने सारे गुरुओं की गायकी को आत्मसात कर अनिता जी ने अपनी व्यक्तिगत गायन शैली का निर्माण किया और ख्याल, ठुमरी, कजरी, दादरा, भजन के साथ ही लोकसगीत में भी महारथ हॉसिल कर के संगीत को विभिन्न आयामों से अपनी सेवायें समर्पित कर रही हैं । उनका उपशास्त्रीय गायन पूर्वी अंग को प्रस्तुत करता है ।

देश के महत्वपूर्ण संगीत सम्मेलनों मे अपनी प्रभावशाली गायन शैली का परिचय देते हुए अनिता सेन विदेशो मे भी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं । वर्तमान समय में रायपुर के संगीत कालेज की अध्यक्षा के पद से अपनी संगीत सेवायें समाज को प्रदान कर रही हैं ।

अंजना नाथ

संगीत रिर्सच अकादमी सगीत की उस बगिया के समान है, जिसकी मिट्टी में खाद और पानी रूपी मार्गदर्शन प्राप्त करके अनेक सगीतज्ञ विभिन्न खूबसूरत एवं सुगन्धित फूलों के समान अपनी कला से विश्व में नाम रोशन करते है। इसी उपजाऊ बगिया की एक सुगन्धित पुष्प हैं " अंजना नाथ। संगीतज्ञों की युवा पीढ़ी में अजनानाथ का नाम अपना विशिष्ट स्थान एवं पहचान बना चुका है। अंजना का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ उसने ऑख खोलते ही रागो और चित्रो की सुन्दर दुनिया देखी। इनकी माता तथा पिता दोनो ही उच्चकोटि के चित्रकार है तथापि अंजना ने ब्रश के अपेक्षा तानपुर का चुनाव अपनी बहुत ही कम उम्र में किया और पूरी लगन से अपनी साधना स्व० उस्ताद बडे गुलाम अली खॉ साहब की सुयोग्य शिष्या श्रीमती मीराबनर्जी के संरक्षण में सात वर्षो तक की। श्री ललित मोहन सान्याल के सुयोग्य मार्गदर्शन में भी अपनी संगीत साधना को बढाने का अवसर अंजना को प्राप्त हुआ सन् १९८९ में अंजना का चुनाव संगीत रिर्सच अकादमी में "स्कॉलर " के रूप में हुआ जहाँ उन्हें सगीत रिसर्च अकादमी के वरिष्ठ गुरू एवं सुविख्यात कलाकार श्री अजय चक्रवर्ती का शिष्यत्व प्राप्त हुआ।

पटियाला घरानें के युग पुरूष उ० बडे गुलाम अली खॉ ने अपनी जादूई आवाज और साधना से पटियाला घराने की गायकी को जो पहचान दी उेस उस्ताद के बाद की चौथी पीढ़ी अपनी मेहनत लगन से किसी तरह मंजिल की ओर बढ़ रही है इसका सुरवद अनुभव अंजना के गायन से श्रेताओं को होता है। तीनों सप्तकों में आवाज का सहजता से घूमनरा, कठिन स्वर विन्यास, क्लिष्ट तानो की सहज एवं चित्ताकर्षक प्रस्तुति अंजना के गायन की विशेषता है।

कोलकाता विश्वविघालय की स्नातक अजना को भारत सरकार की ओर से "नेशनल टैलेन्ट सर्च" छात्रवृत्ति प्रदान की गई है। इन्हें विभिन्न राष्ट्रीय एव राज्य स्तरीय सगीत प्रतियोगिताओ में भी प्रथम स्थपन प्राप्त हुआ है यथा – द स्टेट म्यूजिक एकेडमी, गर्वन्मेन्ट ऑफ वेस्ट बंगाल , डावरलेन संगीत प्रतियोगिता आदि। अंजना आकाशवाणी एव दूरदर्शन की ख्याल एव ठुमरी दोनों शैली मे बी.हाई ग्रेड की कलाकार है। भविष्य मे सगीत क्षेत्र की अनुपम विभूति बनने का माद्दा रखनें वाली अंजना की कला दिन दूनी रात चौगुनी की गति से विकसित हो यही हमारी उन्हें शुभकामना है।

मीता पण्डित

ग्वालियर घराने के सुविख्यात 'पण्डित परिवार' की छठवी पीढी के रूप मे सुश्री मीता पण्डित अपने परिवार की प्राचीन परम्परा को और भी सुदृढ करते हुए आगे बढ़ा रही हैं । सांगीतिक परिवार मे जन्मी मीता ने, संगीत की सर्वप्रथम शिक्षा अपने बाबा पद्मभूषण पं0 कृष्णराव शकर पण्डित से प्राप्त की तदोपरान्त अपने पिता प0 लक्ष्मण राव पण्डित से ग्रहण कर रही है । उन्होंने अपने भाई स्व0 तुषार पण्डित से भी मार्गप्रदर्शन प्राप्त किया है । मीता अपने सगीतज्ञ परिवार की प्रथम महिला सगीतज्ञ के रूप मे उन महिला सगीतकारो मे अपनी विलक्षण स्थिति बना रहीं हैं, जो भविष्य के संगीत साधको की आदर्श साबित होंगी । वास्त्व में कम उम्र मे ही मीता पण्डित नें अपनी गायन कुशलता से लाखों सगीत प्रेमियों का आर्शिवाद एव प्रशसा प्राप्त कर रखी हैं और दिनो –दिन उनके सगीत प्रशसको की संख्या में वृद्धि ही होती जा रही है ।

मीता ने सर्वप्रथम कला प्रदर्शन सात वर्ष की अल्पायु में 'पं0 कृष्णराव शंकर पण्डित प्रसंग' समारोह में भारत भवन भोपाल मे किया था । तब से लेकर आज तक मीता नें अपने अद्भुत गायन द्वारा अनेक उच्च स्तरीय एवं सम्मानित सगीत समारोहो में लोगों को चमत्कृत किया है । मीता की अनोखी आवाज के तीनो सप्तक में सुगमता से घूमने की क्षमा भी प्राप्त है । उनकी गायकी एव प्रस्तुतिकरण का अपना अलग ही अन्दाज हैं । पारम्परिक अष्टांग गायकी गूढ सागीतिक समझ और सोच स्पष्ट होती है जो बरबस ही श्रोताओ को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है । जहॉ एक ओर जटिल तानों को सहजता से स्पष्ट प्रस्तुतिकरण श्रोताआं को चमत्कृत कर देता है वही दीर्घ श्वॉस नियन्त्रण द्वारा 'टप्पा' की सुन्दर प्रस्तुति श्रोताओं के हृदय को झकझोर देती है । ख्याल के समान दक्षता से ही मीता तराना टप्पा पद एवं भजन भी प्रस्तुत करनें में निपुण हैं । उनकी यह विलक्षण गायकी श्रोताआं का न सिर्फ मनोरजन करती है अपितु उनके हृदय पर अपनी कला क्षमता की अमिट छाप भी छोडती है । अपनी इस अद्भुत गायकी के

लिये मीता को विभिन्न अवार्ड भी प्रदान किये गए है –

'सुर–मणि' – सुर सिगार ससद, मुम्बई द्वारा 1992 ।

'एक्सीलेन्स इन म्यूजिक' अवार्ड– सेंटमेरी एण्ड लेडी श्री रामकॉलेज द्वारा 1992,1995

'युवारत्न' – 1999 ।

'पं0 निखिल बनर्जी समृति अवार्ड' – सगीत भवन, लखनऊ, 1998 ।

' द गोल्डेन वॉइस ऑफ इण्डिया' – द सिगर्स सोसायटी ऑफ इण्डिया, 1989 ।

मीता पण्डित आकाशवॉणी एव दूरदर्शन की 'ए ग्रेड' की कलाकार है और टी0 वी0 के अन्य विभिन्न चैनलो से भी इनके कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं । मीता के विभिन्न संगीत कम्पनियो द्वारा कैसेट्स भी प्रकाशित किये गये हैं । मीता जी ने देश–विदेश में विभिन्न सांगीतिक समारोहों मे अपने सशक्त प्रस्तुतीकरण के माध्यम से श्रोताओं के अत्यधिक सराहनार प्राप्त की है । उनके गायन के विषय मे विभिन्न संगीत समीक्षकों ने समाचार पत्रों में इस प्रकार टिप्पणी की है – पौरूष प्रधान गायकी में सक्षम हैं मीता पण्डित– हिन्दुस्तान, दिल्ली– 21, जुलाई 1996 ग्वालियर घराने के गायिकी पौरूष प्रधान गायिकी कही जाती है । इसलिए इस गायिकी को महिलाओं नें कम ही अपनाया है । लेकिन मीता पण्डित ने सिद्ध कर दिया कि अच्छी तालीम और साधना के बल पर महिलाएँ भी इस गायिकी को–––––– ।

'मीता पण्डित के गायन ने श्रोताओं का मन मोह लिया' – अमृत प्रभात, इलाहाबाद– 4 अक्टूबर 1996– ग्वालियर घराने के पितामह पं0 कृष्णाराव शंकर प0 की पौत्री और सुप्रसिद्ध गायक एल0 के0 पं0 की पुत्री तथा ख्याल गायिकी में कीर्ति स्थापित करने वाली कु0 मीता ने बिहाग .... श्रोताओं का दिल जीत लिया ।

'घराने की बिरासत को आगे बढा रहीं हैं मीता पण्डित'– ग्वालियर सांध्यावार्ता– 13 – 1994 ।

सुर सम्भावना

गगा यमुना–25 मई 1997– कुमारी मीता पण्डित ने कठिन परिश्रम और साधना से कम उम्र में आज अग्रणी कलाकारो के बीच स्थान बना लिया है । सुर सामझी मीता पण्डित के गायन मे ग्वालियन घराने के शुद्धता और रागो की सूक्ष्म पकड से रसिक श्रोताओं को बेहद प्रभावित किया । – स्वतंत्र भारत– 30 सितम्बर 1996 तुषार के निधन से परिवार ने जो खो दिया है, मीता उसकी छति पूर्ति करने में सक्षम साबित होगीं । – राष्ट्रीय सहारा, दिल्ली– 16 सितम्बर 1995 ।

उत्कृष्ट सांगीतिक समझ एव क्षमता रखने वाली सुश्री मीता पण्डित न सिर्फ अपने परिवार के दो सौ वर्ष पुरानी परम्परा को पोषित कर रही है अपितु उसे संवर्धित कर रहीं हैं । युवा गायिकाओं में अग्रणी मीता पण्डित से सगीत समाज भविष्य में संगीत को नई दिशा दिखाने की पूर्ण आशा रखता है और जिस आशा को पूर्ण करने में मीता पूरी तरह से सक्षम है । ईश्वर इनका मार्ग प्रशस्त करे ।

ललित जे0 राव

आगरा–अतरौली घराने का प्रतिनिधित्व करने वाली, विलक्षण प्रतिभाशाली हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायिका के रूप मे ललित जे0 राव का नाम सगीत जगत में अपनी पहचान बना चुका है । छोटी आयु से ही सगीत शिक्षा प्राप्त करने वाली इन युवा साधिका ने सर्वप्रथम बगलौर के प0 रामारावनाइक से और तदोपरान्त प0 दिनकर कैकिनी जी से संगीत शिक्षा प्राप्त की । ललित जे0 राव की गायन शैली की निश्चित आकार प्रदान करते हुए महान सगीतज्ञ पद्मविभूषण उ0 खादिम हुसैन ने बारह वार्षो तक गायन की गहन शिक्षा प्रदान की ।

शास्त्रीय सगीत की शुद्धता और सौन्दर्य का गूढ ज्ञान रखने वाली ललित जे0 राव अपनी आकर्षक तैयार आवाज में गायन कर आज संगीत प्रेमियों की प्रिय ख्याल गायिका के रूप में सामने हैं । ख्यान गायन के साथ उपशास्त्रीय संगीत मे भी वह समान रूप से ही गायन प्रस्तुत करने मे निपुण हैं ।

देश भरके संगीत सम्मेलनों में व्यस्त कलाकार ललित ने यूरोप तथा अमेरिका की भी सफल सांगीतिक यात्रा की है । आकाशवॉणी तथा दूरदर्शन कलाकार होने के साथ ही उनके भाई कैसेट्स भी प्रकाशित हुए हैं ।

श्वॉस पर अद्भुत नियन्त्रण और तीन सप्तकों में सुगमता पूर्वक घूमने वाली आकर्षक आवाज ने ललित जी की गायन शैली को विशेष प्रभावशाली बनाया है । मधुर गायन और लयकारी उनके गायन की विशेषता है । इन्हीं विशेषताओ की वजह से ललित जे0 राव आज की उत्कृष्ट कलाकारों में गिनी जाती हैं । अपने गायन द्वारा वह नई पीढ़ी को प्ररित कर उत्तर–भारतीय संगीत मे अपना योगदान अर्पित कर रहीं हैं ।

विजया जाधव गाटलीवार

युवा पीढी में जयपुर घराने की गायकी का कुशल प्रदर्शन करने वाली गायिका हैं, विजया जाधव गाटलीवर । विजया जी का जन्म मुम्बई के एक सगीतज्ञ परिवार में हुआ । उनके पिता श्री दिनकर वी0 जाधव, जो कि जयपुर घराने के कलाकार हैं, नें उ0 हबीब खॉ और उ0 नत्थन खॉ से तालीम प्राप्त की थी । इस प्रकार विजया की अत्यन्त कम उम्र में ही उच्च स्तर की सगीत शिक्षा मिलने लगी ।

अपने पिता से लम्बी तालीम लेने के बाद विजया ने विभिन्न सागीतिक प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमो मं भाग लेना प्रारम्भ किया और अपने प्रभावक गायन से संगीत समाज में अपना सम्मानित स्थान बनाया । 1978 मे विजया को नेशनल सेंटर ऑफ परफार्मिग आर्ट्स की ओर से सम्मानित 'केसरबाई केरकर छात्रवृत्ति' प्रदान की गई ।

विजया की गायकी मे परम्परा तथा समय की मॉग के अनुसार आवश्यक नवीनता का सुन्दर निर्वहन दिखता हैं । ईश्वर प्रदत्त सशक्त आवाज़ की मल्लिका विजया की 'ताने' विशेष प्रशसनीय है । उनकी तानों के विषय में ऐसा विद्वतजनों का कहना है कि आज की पीढी की गायिकाओं में विजया के समान उत्कृष्ट एवं प्रभावक तान लेनें वाली कम ही प्रतिभाएँ हैं ।

उनकी गायकी की एक अन्य विशिष्टता है, 'बहलावा', जो कि जयपुर गायकी को स्पष्ट करता है । श्वॉस पर जबंजस्त नियन्त्रण रखतं हुए स्वरों को कहा कितनें अनुपात में गाना है, इस कला मे वे बडी ही निपुण हैं । जयपुर घरानें की एक अन्य विशेषता है क्लिष्ट (वक्र राग) रागों का गायन । विजया अपने घराने की इस परम्परा का सम्वहन भी बडी ही दृढता से करती हैं तथा बिहागडा, जैतश्री और पट–बिहाग जैसे रागों को अतयन्त खूबसूरती तथा कुशलता

से प्रस्तुत करती है ।

विजया आकाशवॉणी की 'ए, ग्रेड की कलाकार हैं तथा देश के विभिनन सांगीतिक समारोहो मे अपनी कला का सफल प्रदर्शन करनें के साथ ही यू0 एस0 ए0 और कनाडा मे भी अपनें सुमधुर, सुरीलें तथा प्रभावक गायन से श्रोताओ को मत्र मुग्ध किया है ।

संगीत समाज के भविष्य को विजया जाधव से बहुत आशाएँ है जिन्हें पूरा करनें का सार्मथ्य उनके गायन मे भरपूर लक्षित होता है ।

श्रीमती मंजरी असनारे

प्रतिभा सम्पन्न मजरी असनारे आज युवा शास्त्रीय गायिकाओ मे अपना विशिष्ट स्थान बना रहीं हैं । ईश्वरीय वरदान मे प्राप्त सुप्रसिद्ध तबला वादक श्री आनन्द असनारे की पुत्री स्वरूप में हुआ । सगीत शिक्षा के प्रारम्भिक दिनो मे छ वर्ष की उम्र से ही कथक की शिक्षा प्रारम्भ हुई और इस क्षेत्र मे कई प्रतियोगिताओं मे अग्रणी भी रहीं । दस वर्ष से सोलह वर्ष की उम्र मे इन्होने गायन की शिक्षा पं0 सी0 टी0 महेस्कर, सागली जी से तदोपरानत 1988 से आज तक की सगीत साधना पं0 एम0 एस0 कनेटकर जी के मार्गदर्शन में कर रहीं है ।

शास्त्रीय गायन के खेत्र मे मजरी असनारे नें कई राष्ट्रीय एवं राज्यीय प्रतियोगिताओं में यथा आकाशवॉणी संगीत प्रतियोगिता– शास.त्रीय एवं उपशास्त्रीय दोनों वर्गों में एवं अन्य भी अनेक प्रतियोगिताओं मे प्रथम स्थान प्राप्त किया । इसके अतिरिक्त श्रीमती उंजनी को भार सरकार की ओर से 19991–92 एवं 92–93 वर्ष में शास्त्रीय संगीत गायन के क्षेत्र में छात्रवृत्ति और 1994–95 वर्ष में 'स्व0 केसरबाई केरकर' छात्रवृत्ति से भी सम्मानित किया गया है ।

अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय, मंडल से 'संगीतविशारद' श्रीमती मंजरी उसनारे आकाशवॉणी की बी हाई ग्रेड की कलाकार भी हैं । इनकी गायकी मे जयपुर गायकी के धरातल पर मास्टर कृष्णराव, बालगधर्व, पं0 गजानन बुआ जोशी श्रीमती बेगम अख्तर की गायकी के रग भी बिखरे हैं । यही कारण है कि मंजरी का गायन सभी श्रोताओं को अपनी ओर आकृष्ट कर बॉधे रखता है । 'तान अंग' विशेष तैयार है । अपने सुमधुर और तेयार गायन से मंजरी असनारे केलकर ने अनेक संगीत समारोहों मे श्रोताओं को आकण्ठ तृप्त किया है और भरपूर सराहना प्राप्त की है । इन्होनें देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों यथा– स्वामी गंधर्व संगीत उत्सव, मेघ–मल्हार 94 समारोह, जयपुर समारोह, आई0 टी0 सी0 संगीत समारोह, पं0 पलुस्कर समारोह, तानसेन संगीत समारोह,

बसन्त–बहार–1999, शंकर लाल उत्सव, मसूर पुण्यतिथि समारोह आदि में सफल कला प्रस्तुति की है ।

श्रीमती मजरी असनारे के विषय मे सुविख्यात गायक पं0 वामन राव देशपांडे का कथन है – "Manjari has been trained by me personally in the gurushishya parampara. She has been an excellent performer in the jaipur Atroli Gayki . She has to her credit her father's training in gwalior gayaki and she has made a very pleasent combination of jaipur and Gwailor gaykies which is obvious from the carious performances I have heared for many years. "

श्रीमती मजरी असनारे के ऑडियो कैसेट्स भी निकाले गए हैं । इस युवा कलाकार से वर्तमान समय की अनेक साधनारत गायिकाये प्रेरणा प्राप्त कर रही हैं ।

सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती

संगीत के क्षेत्र में एक कहावत प्रसिद्ध है कि, "सौ बात बने है तो एक बने," अर्थात् जब सौ बातों का संयोग होता है तभी वह एक उत्कृष्ट कलाकार का अभ्युदय सभव होता है । इन सौ बातो मे सर्वप्रथम ईश्वर प्रदत्त कठ अथवा संबन्धित क्षेत्र मे व्यक्ति की स्वाभाविक क्षमता, पारिवारिक वातावरण, सुयोग्य गुरू आदि महत्वपूर्ण तथ्य आते है । वास्तव मे उपरोक्त तथ्यों मे से यदि एक का भी अभाव होता है तो कलाकार नहीं बन पाता । इस प्रकार वे लोग बडे ही सौभाग्य शाली होते है जिन्हें ईश्वर की कृपा से उन सभी तथ्यो का सयोग प्राप्त होता है । ऐसी ही एक सौभाग्यशाली युवा गायिका है– सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती । सुमधुरकंठ, सांगीतिक परिवार, सुयोग्य गुरू, स्वाभाव में अपनें कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं लगन आदि सभी कुछ ईश्वर ने वरदान स्वरूप कौशिकी को प्रदान किया है यही कारण हे कि इतनी कम उम्र मे आज कौशिकी संगीत क्षेत्र की उन ऊंचाइयों को छू रहीं हैं जिसे पाना अत्यन्त दुर्लभ है ।

सुविख्यात कलाकार पं0 अजय चक्रवर्ती की पुत्री कौशिकी नें जन्म ले ही अपनें चारों ओर संगीत ही सगीत का वातावरण देखा, कारण है कोलाकाता की 'संगीत रिर्सच अकादमी' में उनका निवास । जहाँ चौबीसो घटो सिर्फ सगीत का ही माहौल छाया रहता है । संगीत की प्रारम्भिव शिक्षा माँ ने अपनी लोरियों मे ही प्रदान की और विधिवत् शिक्षा का प्रारम्भ सात वर्ष की अल्पायु से पद्मभूषण देशीकोट्टम गुरू जान प्रकाश घोष के सरक्षण में हुआ । वर्तमान समय में वह अपनें सुयोग्य पिता पं0 अजय चक्रवर्ती से "एस0 आर0 ए0 " में एक स्कॉलर जिसमें कि एक कलाकार की क्षमता की वास्तविक कसौटी का परीक्षण लेने के बाद ही प्रवेश दिया जाता है, के रूप में तालीम प्राप्त कर रही हैं ।

कौशिकी चक्रवर्ती नें अल्पायु मे ही देश–विदेश के अनेक संगीत समारोहों में अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता की छाप छोडी है । यू0 एस0 ए0, कनाडा,

कैलीफोर्निया, ऑरलेण्डो और हावर्ड आदि देशों के विभिन्न सांगीतिक जलसो में प्रशसा प्राप्त करने के साथ ही साथ कौशिकी अपनें दश मे भी होने वाले अनेक सम्मानित संगीत समारोहो मे अपनी कला प्रदर्शन किया है और अनेक वरिष्ठ संगीतज्ञो के आर्शिवाद के साथ लोगो में बहुचर्चित हो गई है । विभिन्न कलासमीक्षकों ने भी कौशिकी की प्रशसा मे अपनी लेखनी चलाई है ।

कौशिकी ने विभिन्न सगीत अवार्ड भी प्राप्त किये है । 'साल्ट लेक कल्चरल एसोशियेशन–कोलकाता' की ओर से "जादू भट्ट" अवार्ड से सम्मानित किया गया है । परम् विख्यात् गायक पं0 भीमसेन जोशी जी का विश्वास हे कि कौशिकी इक्कीसवीं सदी की उन गायिकाओं में होगी जो भविष्य मे स्मृति शास्त्रीय गायिका के रूप में अपनी पहचान बनाएंगी । स्वय उनके शब्दो में .–
Ques. to Pt. Bhimshen Joshi:- Who do you think are the Indians who will make a difference in the 21st century ?
Pt. Bhimsen Joshi's ans:- "I can Inly name people from the world of music. They are Rashid khan, Padma talwalkar, Ashwini Bhide(Deshpanday) , Ajay Chakrabarty's eldes daughter kaushiki and Arti Anklekar. I have observed flashes of brilliance in them. If they remain honest to their art and do their riyaz diligently, they are bound to make a mark. "

संगीत समीक्षक प्रकाश बढरा के शब्दों में – "Kaushiki chakarvarty sings in a voice that slices through every kind of musical situation, one that seeks to build a tonal arch on near or distant notes that scampers through a host of swaras in a twinkle. "

कौशिकी के विभिन्न संगीत कम्पनियों ने कैसेट्स भी निकलवाए हैं । प्रतिभा सम्पन्न कौशिकी चक्रवर्ती अल्पायु में ही वास्तव में अपने संगीत द्वारा उन अनेक संगीत प्रेमियों की प्रेरण बन चुकी हैं जो संगीत साधना शुरू कर रहे हैं । भविष्य में कौशिकी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में नये आयामों को श्रोताओं के स्म्मुख लाएँ और नयी दिशा प्रदान करें ऐसी मै ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ ।

उपशास्त्रीय गायन के क्षेत्र में महिला कलाकार

गायन शैलियों का परिचय

अन्तः हृदय की आधार भूमि पर उपजी संगीत की वह विधा जो शास्त्रीय सगीत का सहारा लेकर सुन्दर बेल के सदृश्य विकसित, पल्लवित और पुष्पित होकर चहुँ ओर अपनी मनमोहक सुगन्ध से लोगो को अपनी ओर आकर्षित करती है, वही विधा उपशास्त्रीय संगीत की कोटि मे आती है । यह राग ताल वद्ध तो अवश्य होती है किन्तु ध्रुवपद एवं ख्याल गायन के समान इस शैली में शास्त्र नियमों के पालन में कठोरता नही बरती जाती है । उपशास्त्रीय गायन भाव प्रधान होता है और इस भावप्रवाह में नियम बंधन बाधक नहीं होता । दूसरे शब्दो में उपशास्त्रीय गायन में राग नियमो का पालन उसी सीमा तक होता है जहाँ तक वह कलाकार की भावनाओ के प्रगटीकरण मे बाधक नहीं होता । इस पद्धति की भावप्रधानता ही इसकी अतिशय लोकप्रियता का प्रमुख कारण है ।

उपशास्त्रीय गायन के अन्तर्गत मुख्यरूप से ठुमरी, दादरा, टप्पा, तराना आदि गायन शैलियाँ आती है किन्तु कलाकार अपनी कुशलता से होरी, कजरी, चैती, पूर्वी तथा भजन भी उपशास्त्रीय सगीत की कोटि में लाकर गाते है । जब बात महिला सगीतज्ञों के योगदान की उठती हे तो उपशास्त्रीय गायिकाओं का एक बडा हुजूम ऑखों के सामने दृष्टमान हो उठता है । जब एक कुशल गायिका अपने मधुर, नाजुक, रसीले तथा भावोत्पादक कण्ठ से ठुमरी या दादरा गाती है तो श्रोता उसी भावना सागर में गोते लगाने को बाध्य हो जाता है, जिसमें गायिका चाहती है । यही तो वह विधा है जिसमें महिला ईश्वर प्रदत्त मधुर कण्ठ का पूर्णरूपेण सद्उपयोग कर पाती है । वास्तव में स्त्री कण्ठ के सर्वोपयुक्त गायन शैली उपशास्त्रीय संगीत ही है । रतीबाई, मैनाबाई से लेकर जदद्नबाई, विद्याधरी और सिद्धेश्वरी से होती हुई गिरिजा देवी, शोभा गुर्टू तथा सविता देवी तक असंख्य गायिकाओं ने इसी विधा द्वारा इतिहास के पृष्ठों में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है ।

उन महान गायिकाओं के उल्लेख के पूर्व मैं उपशास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन शैलियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रही हूँ ।

ठुमरी

ठुमरी का जन्म आज से लगभग डेढ सौ–दो सौ वर्ष पूर्व माना जाता है 'ठुम+री' से बना है 'ठुम' ठुमकने का द्योतक अर्थात पैरो का छन्द है तथा 'री' ठुमवाली क्रिया का द्योतक है । ठुमुक, ठुमक, ठुमुकि, ठुमकना आदि शब्दों की लुभावनी परिकल्पना के अनुसार साहित्यक भाषा के गेय पदो को जिनमे श्रृंगार, वात्सल्य, विरह, शान्त इतयादि विभिन्न रसो का सन्निवेश होता है, उसे 'ठुमरी' की संज्ञा दी गई है । अनेक सरस, सहृदय कवियों के असंख्य गेय पदो के एक–एक शब्दों का दिग्दर्शन, पदसंचालन, भृकुटी, नेत्र,हस्त, कलाई, ग्रीवा, हस्तक द्वारा पूर्ण हाव–भाव सहित गायन एव नर्तन ही इस अभिनव ठुमरी गायन शैली का मूल आधार रहा है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

ठुमरी गायकी की उत्पत्ति का मूल स्थान जो भी हो किन्तु प्राचीन सरस कवियों के रचित पदों का पूर्ण भाव सहित गायन, नर्तन एवं प्रदर्शन ही इसका मूलाधार रहा है । इस गायन शैली की मनमोहक बन्दिशो की रचनाकार के रूप में लखनऊ नृत्य घराने के विद्वान श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र, ठुमरी के लालित्य एवं भक्तिमय पदों की रचना करने वाले प्रथम जनक के रूप में सामने आते हैं, जिनकी समस्त रचनायें भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र से ओत–प्रोत और उन्हीं को समर्पित हैं । अपनी स्वरचित बन्दिशों को विभिन्न रागों एवं तालो में जाकर और नृत्य द्वारा एक–एक शब्द का अनेक कल्पनाओ से युक्त भावाभिनय बनाकर वह संगीत प्रेमियों को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर देते थे । इन्हीं के भतीजे एवं प्रसिद्ध नर्तक कालिका श्री बिन्दा जी ने भी हजारों ठुमरी बन्दिशों की रचना की और उन्हें अपने नृत्य अभिनय प्रदर्शन के माध्यम से प्रस्तुत कर अपने युग के अनुपम नर्तक होने का गौरव प्राप्त किया । इस घराने के सभी विद्वानों की समस्त रचनायें भक्तिपूर्ण एवं श्रीकृष्ण को पूर्ण समर्पित थी जिसमें अश्लीलता की रच मात्र झलक भी नहीं थी किन्तु उनकी

रचनाओं की गरिमा के विपरीत अनेक सगीतज्ञो ने सागारिक रचनाएँ भी की है ।

नाजुक मिजाज शहर लखनऊ को एक अत्यन्त रसभरी, नाजुक, रसीली और पुरअसर गायिकी की बेताबी से चाह थी । ठुमरी के साचे मे ढली रस भीनी गायिकी ने अपनी रेगत से सभी को मुग्ध किया और नवाबो की महफिल की शमा बनने का विशिष्ट गौरव प्राप्त किया ।

टप्पा की चंचल, चमत्कृत, लच्छेदार गायिकी एव ख्याल अग की शान्त, गम्भीर, तनमयता पूर्ण गायन शैली के युगल मोहक सम्मिश्रण से "ठुमरी" की सम्मोहक मधुर गायकी का जन्म हुआ । लखनऊ की नफासत व शराफत से भरी, निहायत सलीकेदार, सांगीतिक धरती पर जन्मी ठुमरी को काशी की पवित्र नगरी ने सजाने,सँवारने और अनुपम बनाने में इतना स्नेह लुटाया कि बनारस गायन शैली की वह चिरसंगिनी बन गयी । यहॉ के विशिष्ट रंगीले, रसीले, भावुक, उदार गुणी संगीतज्ञो ने ठुमरी बनारसी पैनेपन के विशिष्ट रग मे रंगकर, बोलबनाव, बोलबाट, बन्दिश की ठुमरी के रूप में श्रृंगार, करूण, तथा शान्त रस से ओत-प्रोत करके ऐसा ह्रदय ग्राही स्वरूप में प्रस्तुत किया जो कि पत्थर ह्रदय को भी पिघलाकर मोम बना देने की क्षमता रखने लगी, बशर्तें उसे गाने वाली गौहरजान, विद्याधरी, सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी सरीखी समर्पित गायिकाएँ हैं ।

ठुमरी गायन शैली मुख्यत दो प्रकार से प्रचलित है –

1. पंजाब अंग की ठुमरी 2. पूरब अग की ठुमरी

पंजाब की चपलता आदि गुणों की विशेषता लखनऊ ठुमरी गायन शैली में पायी जाती है । चंचलता, खनका, मुर्की, खटका की बहुलता एव स्वरों पर कम ठहराव आदि पंजाब अंग की ठुमरी की विशेषताएँ । गम्भीरता, शालीनता, स्वरों पर ठहराव, चयनदारी, सार्थक बोलों को लेकर भिन्न-भिन्न ढंग की मनमोहक उपज एवं विलम्बित लय में ठुमरी गायन की शैली का मौलिक रूप बनारस घराने की अपनी निजी विशेषता और विशिष्टता और विशिष्टता है । यही विशेषताएँ पूर्वी अंग की ठुमरी शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

ठुमरी गायन शैली के विकास मे बडी मैना, विद्याधरी, हुस्ना, राजेश्वरी, बडी मोती, काशी, सरस्वती, छोटीबीबी, सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई, गिरिजा देवी, बेगम अख्तर, शोभगुर्टू, सविता देवी, निर्मलादेवी आदि महान सगीत उपासिकाओ ने अपनी–अपनी विलक्षण साधना से महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं ।

दादरा

ठुमरी गायन शैली की ही छोटी बहन के समान दादरा गायन शैली है । दादरा ताल मे निबद्ध ठुमरी के ही समान बंदिश के गायन को दादरा कहते हैं । कभी–कभी दादरा गायन कहरवा ताल मे भी होता है । इनकी चाल ठुमरी के अपेक्षा कुछ चपल होती है । इनमें प्राय· श्रृंगार रस के गीत होते हैं ।

टप्पा

पंजाब, बंगाल राजस्थान, गुजरात आदि प्रान्तो मे ऊंटहारों के समूह में उन्हीं की भाषा में श्रृंगार युक्त प्रेमगीतों को लोकधुनो में गाने का प्रचलन सदियों से था । इन प्रेमगीतों के माध्यम से ये ऊॅटहारों के समूह रास्तो की भयंकरता, सन्नाटापन, मार्ग के ऊबापन और थकान को दूर कर अपने गतव्य स्थान पर पहुॅच जाते थे । मीलों लम्बे विस्तृत नखलिस्तानो, रेगिस्तानी इलाको मे जमीन की दूरी का पैमाना, एक टप्पा जमीन दो टप्पा जमीन, के रूप मे प्रचलित था । इन ऊॅटहारों के प्रेमगीतों में प्रदर्शित गले की विशिष्टतायुक्त लोकधुनों की रसमाधुरी नें शोरीमियॉ को विशेष प्रभावित किया और उन्हें नवीन शैली सृजित करनें की प्रेरणा प्रदान की जो –'टप्पा' गायकी के रूप में विकसित हुई ।

गुलामनबी उपनाम शोरीमियॉ के पिता लखनऊ निवासी नवाब आसफुद्दौला के समकालीन एवं नवाब के दरबारी गायक गुलाम रसूल खॉ थे । गुलामनबी की स्त्रियोपित पतली आवाज के कारण उनके पिता ने उन्हें पुरूपोषित गाकयी की शिक्षा नहीं दी, किन्तु कालान्तर मे गुलामनबी ने अपनी संस्कारगत विलक्षण सगीत प्रतिभा एवं साधना से पजाबी भाषा का अध्ययन किया और ऊॅटहारों के मध्य प्रचलित अद्भुत, ह्रदय स्पर्शी लोकधुनों के आधार पर एक नवीन गायन शैली 'टप्पा' को जन्म दिया । पजाबी भाषा मे ही असख्य श्रृगार एव विरहयुक्त गीतों की रचना अनेक रागो मे करके इन बंदिशो मे उपनाम 'शोरी' जोड दिया ।

शोरी मियॉ रचित टप्पा गायन शैली का चलन विचित्र है । द्रुतलय, कम्पित और थिरकती हुइ तानें टप्पा गाकयी की विशेषता है । इसमें आलाप की कोई जगह नहीं है । स्थाई और अन्तरा, यही दो विभाग होते हैं । टप्पा मे जनाजमानुमा तानों का प्रयोग इसकी विशेषता है । इसकी ताने कॉपती हुई, थिरकती हुई चलती हैं और इसमे दानेदार तानें ली जाती हैं । गीत के पश्चात् तान, बोलतान टप्पा गायकी को निराला रूप प्रदान करती है । इसमें स्वर तानो का और बोलतानों का रूप धारण कर द्रुतलय में भागते हएे से प्रतीत होते हैं । यह 'टप्पाताल' में ही गाया जाता है । ठुमरी अग के रागों यथा– काफी, भैरवी, खमाज आदि मे ही टप्पा गाया जाता है ।

शोरीमियॉ निःसंतान थे, फलस्वरूप उनके द्वारा अविष्कृत टप्पा गायकी को लोकप्रिय बनाने का एक मात्र श्रेय इनके विष्ठात् पटु शिष्य गामू खॉ को है । गानूखॉ ने इस शैली की शिक्षा अपने पुत्र शादी खॉ को दी । पिता एवं पुत्र दोनों ही लम्बे अरसे तक काशी में रहे । अस समय काशी नरेश महाराज उदित नारायण सिंह सिंहासनारूढ थे, जिनके शासनकाल में शादीखॉ दरबारी कलावन्त के रूप में प्रतिष्ठित थे । टप्पा गायकी की अभिनव शैली से संगीत नगरी काशी अभीभूत हुई और इस विशिष्ट गायकी को अपने मे आत्मसात् करते हुए शादी खॉ

से टप्पे की भरपूर शिक्षा लेकर बनारस की सुप्रसिद्ध गायिका चित्रा, इमामबॉदी ने इस गायकी मे अद्भुत वर्चस्व एव प्रसिद्धि प्राप्त की, जिनकी विलक्षण टप्पा गायकी ने पूरी काशी में धूम मचा दी । इन्ही सुप्रसिद्ध इमॉमबॉदी के पुत्र रमजान खॉ एव शिष्य नगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य द्वारा टप्पा गायकी 19वी शती के उत्तरार्द्ध में बगाल पहुॅची, एव लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध हुई ।

काशी के सुविख्यात गुणी गन्धर्वबन्धु प्रसिद्ध मनोहर जी, जब अयोध्या के अवाबसाद्त अली के दरबारी गायक नियुक्त हुए तो सौभाग्य से उन्ही दिनो इन दोनो भाइयों का परिचय शोरी मियॉ से हुआ । दोनो ही एक दूसरे की गायकी विद्वता से प्रभावित हुए, निःसंकोच गायनशैली का आपसी आदान–प्रदान हुआ और लगातार सात वर्षों के साथ से इन दोनों भाइयों ने टप्पा गायकी में महारथ प्राप्त की और वर्चस्व स्थापित किया ।

मध्यकाल की उपशास्त्रीय गायिकायें

बड़ी मैना

अपने युग की गायिकाओ मे उत्कृष्ट गायिका के रूप मे बडी मैना को विशेष सम्मान प्राप्त था । काशी नरेश महाराज ईश्वरी नारायण सिह एव उनके बाद महाराज प्रभु नारायण सिंह के शासनकाल मे उन्हे विशेष सम्मान एव राज्याश्रय प्राप्त था । बडी मैना को गाजा पीने की आदत थी । गांजे का लप्पा लगाकर ही गाती थीं । काशी के संगीत रसिको की अद्‌भुत परिकल्पना बुढवा 'मंगल संगीत मेला' की शोभा को अपने सुरीले, दमदार कठ माधुर्य से अनुपम और द्विगुणित बनाने में बडी 'मैना' का विशेष योगदान रहा । गगा की शान्त निर्मल धारा से रात के सन्नाटे मे रामनगर दुर्ग की प्राचीर से टकराकर आपकी आवाज गंगा के इस पार संगीत का आनन्द लेने वाली 8–10 हजार लोगों की भीड तक स्पष्ट रूप से पहुचती थी और लोग इस जादुई आवाज से रसमग्न हो जाते थे। काशी की ऐसी पारदार आवाज की धनी महिला गायिकाओं मे इनका महत्वपूर्ण स्थान था ।

इनके जीवन से सम्बन्धित एक रोचक घटना इनकी गायकी की जीवत्तता के स्पष्ट प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है – काशी नगरी के एक दबंग व्यक्ति बडी मैना की गायकी के इतने दीवाने थे, जो उनके हर कार्यक्रम में किसी न किसी प्रकार अवश्य ही उपस्थित रहते, चाहे वह कोई साधारण महफिल हो, व्यक्तिगत अथवा अत्यन्त विशिष्ट महफिल हो । उनके इसी दीवानेपन ने अन्त में बडी मैना को भी उनके प्रेम में बांध दिया । बिना उनकी उपस्थिति के बडी मैना अपना कार्यक्रम आरम्भ नहीं करती थीं । कतिपय सगीत प्रेमी रईसों को उनके उक्त प्रेमी की उपस्थिति महफिल में खलती थी किन्तु उनके दबग व्यक्तित्व तथा बडी मैना की उत्कृष्ट गायकी के लोभ में वे मन–मसोसकर रह जाते, कुछ नहीं कर पाते थे । बडी मैना एवं उनके कथित प्रेमी के विषय मे यह खबर उडते–उडते तत्कालीन काशी नरेश तक भी पहुंची । महाराज ने दोनो की परीक्षा लेने के लिए दुर्ग के अन्तःपुर में बडी मैना का कार्यक्रम आयोजित किया, जहां आमन्त्रित विशेष अतिथियों के अतिरिक्त किसी और का पहुचना टेढी–खीर ही था । निश्चित तिथि

एव स्थान पर मैना को महाराज के विश्वस्त लोगो द्वारा पहुचा दिया और इधर उनके प्रेमी ने गगा की ओर से दुर्ग के प्राचीर के साथ छत से नीचे तक लगे पाइप के नलुओ को अपना मददगार बनाया तथा उसी के माध्यम से दुर्ग की छत पर सकुशल पहुच ही गये और छत से नीचे उतरकर छिपते–छिपाते उस स्थान तक सुरक्षित पहुचने में सफलता प्राप्त कर ली जहा महफिल आयोजित थी । इधर मैना प्रेमी के इन्तजार में किसी न किसी बहाने से गायन शुरू न करते हुए जब उन्हें आया हुआ देख लिया तो बडे ही जोश और उमंग से हमेशा से भी अच्छा गायन प्रस्तुत किया । महफिल की समाप्ति पर महाराज ने मैना से व्यगात्मक वाणी मे कहा कि "आज आखिर तुम्हारी प्रतिज्ञा टूट ही गई जबकि बिना अपने प्रेमी की उपस्थिति के आज तुम्हारा मुग्धहारी गायन सुनने को मिला ।" मैना ने शालीनता युक्त दर्प के साथ बड़ी शिष्टता से निवेदन किया कि, 'यह सरकार का भ्रम है, मेरा कौल आज भी वैसे ही कायम है ।' मैना की यह गर्वोक्ति महाराज सहित सभी विशिष्ट मेहमानों को आश्चर्यचकित कर गई । अन्त में महाराज द्वारा क्षमादान का पूर्ण आश्वासन प्राप्त हो जाने पर मैना ने अपने कथित प्रेमी को सबके समक्ष प्रस्तुत किया । महाराज ने उनके साहस, मैना एव उनकी संगीत साधना के प्रति कथित प्रेमी के अनन्य प्रेम की भूरि–भूरि प्रशंसा की और ससम्मान दुर्ग से मैना और उनके प्रेमी की विदाई की ।

काशी एवं देश की प्रायः समस्त सगीत प्रेमी रियासतों मे अपनी रससिद्ध गायकी का सिक्का जमाकर मैना ने अपार धन, यश, लोकप्रियता प्राप्त की तथा काशी की प्रतिष्ठा बढाई । दर्शकों तक अपनी गायकी की विजय–पताका फहराकर बडी मैना 19वीं शती के पूर्वाद्ध में काशी में ही दिवंगत हुई ।

हुस्नाबाई

काशी की प्राचीन गायिकाओं मे विशेष आदर, लोकप्रियता, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वालियो मे विद्याधरी, हुस्ना तथा बडी मोती का नाम शीर्षस्थ रहा है । सगीत की सर्वप्रथम शिक्षा हुस्नाबाई को काशी के वरिष्ठ विद्वान श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र से मिली । उनकी मृत्यु के बाद काशी के अप्रतिम विद्वान सारगी वादक श्री शम्भूनाथ मिश्र से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र के संगीत–उत्तराधिकारी नाती श्री छोटे रामदास मिश्र से हुश्नाबाई ने टप्पा गायकी की उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त की और अपने युग की उत्कृष्ट टप्पा गायिका के रूप में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की । हुस्नाबाई ख्याल, ठुमरी गायन में भी उतनी ही सुदक्ष एवं निपुण थीं । गायन शैली के साथ–साथ अपनी शिष्टता, शालीनता, रुआब, अदब कायदे, साहित्य–अनुशीलन, सुलेख, रहन–सहन, वेष–भूषा आदि के लिये भी वह प्रसिद्ध रही हैं और 'सरकार' के सम्बोधन से जानी जाती थी । अपनी सगीत–साधना और प्रतिष्ठा के अनुरूप ही उन्होंने अपनी जीवन–पद्धति भी अपनाई तथा काशी की अत्यन्त रुआबदार गायिका की प्रतिष्ठा प्राप्त की ।

महात्मा गांधी ने देश मे सुधारवादी आन्दोलन–काल मे, समाज–सुधारको के विशेष सुझाव एवं आग्रह पर नैनीताल एवं काशी में इन गायिकाओं से भेंट की, जिसका उल्लेख सन् 1893 ई0 के 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' तथा 'दि लाहौर प्योरिटी सर्वेन्ट' आदि पत्रों एव 'वास्वधूविवेचन' नामक पुस्तकों में प्राप्त होता है । गाधी जी की प्रेरणा से काशी में एक 'तवायफ–संघ' की स्थापना हुई और हुस्नाबाई ही उसकी अध्यक्षा चुनी गईं । हुस्नाबाई के अध्यक्षीय भाषण की नकर 'वास्वधूविवेचन' ग्रन्थ में छपी, जिसमें हुस्ना ने अपने वर्ग के लोगों से मार्मिक अपील करते हुए उनमें आत्म–सुधार करने और राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने का विशेष आवाहन किया है । अपने भाषण के अन्त में हुस्ना ने काशी में 'तवायफ संघ' की स्थापना का पूर्ण श्रेय तत्कालीन प्रतिष्ठित गायिका विद्याधरी को दिया है जिन्होंने बापू का आशीर्वाद प्राप्त कर तथा अपने पूरे समाज

के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन मे विशेष जोश, उत्साह के साथ भाग लेकर अपनी सगीत–साधना के माध्यम से बापू के सदेश को जन–जन तक पहुचाने मे सक्रिय भूमिका निभाई है ।

चुन्नाबाई

स्व0 चुन्नाबाई उस युग की दरबारी गायिका थी जब राजदरबारो मे चहुँ ओर हद्दू खॉ, नत्थे खॉ, अमीर खॉ, तानरस खॉ सरीखे श्रेष्ठ सगीतज्ञो को बोलबाला था । इन श्रेष्ठ कलाकारो के बीच अपनी आकर्षक गायकी के बलबूते अपनी अलग ही पहचान बनाने वाली महन गायिका चुन्नाबाई महाराजा जयाजीराव के दरबार की गायिका के रूप मे सम्मानित थी ।

चुन्नाबाई का स्वर तथा उसका लगाव 'बीन' का आभास कराता था । उनका विवाह भी जयाजीराव के ही प्रसिद्ध दरबार–बीनकार उ0 बन्देअली खॉ के साथ हुआ था ।

संगीत के प्रति पूर्ण निष्ठा पूर्वक आजीवन अपनी कला से सगीत श्रोताओं को आकण्ठ तृप्त करती रहीं । उनकी खनकदार आवाज मे सधी हुई आलाप और तैयार गायन ने उस युग की महिलाओं को संगीत साधना के प्रति प्रेरित किया जब सर्वत्र अत्यन्त उत्चस्तरीय पुरूष संगीतज्ञों की धूम मची हुइ थी । उन श्रेष्ठ संगीतज्ञों के बीच चुन्नाबाई ने अपना सम्माननीय स्थान प्राप्त करने के लिये कितनी साधना की होगी यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है । आज जबकि संगीत शिक्षा सभी के लिये सहज उपलब्द्ध हो चुकी है और प्रतिदिन अनेक गायिकाएं अपनी कला एवं प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं तब वर्तमान की नींव मे चुन्नाबाई जैसी महान संगीतज्ञ के योगदान के प्रति सम्पूर्ण सगीत समाज श्रद्धान्वत हो जाता है जिन्होने संगीत के उस युग में भी महिला संगीतज्ञों की कडी को टूटने औ़श्र बिखरने से बचाए रखा जब स्त्रियॉ। घर की चहारदिवारी के अन्दर पर्दे में ही अपना जीवन यापन करती थीं ।

राजेश्वरी बाई

इनकी वंश–परम्परा में पूर्व मे रतीबाई और मैना बाई ने अपार ख्याति, यश और धन अर्जित किया । समय आने पर राजेश्वरी बाई ने अपनी कला–साधना से अपने पूर्वजों की कीति को उज्ज्वल करने में विशेष भूमिका निभाई और काशी की सुप्रतिष्ठित, कुशल गायिका की प्रतिष्ठा प्राप्त की । राजेश्वरी बाई को संगीत शिक्षा काशी के विद्वान श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र एवं उनकी मृत्योपरान्त विद्वान सारंगीवादक श्री सरजू प्रसाद मिश्र से मिली । काशी के ऐसे मूर्धन्य–विद्वानो से प्राप्त संगीत शिक्षा और अपनी निष्ठा, लगन साधना से राजेश्वरी बाई ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, होली, कजरी, चैती सभी शैलियो पर समान अधिकार प्राप्त गायिका के रूप में क्रमशः प्रसिद्ध होती गईं और काशी की प्रतिष्ठित गायिका के रूप में देश की अनेक रियासतों से इन्हे निमन्त्रण आने लगे । जहा भी गईं, अपनी सिद्धस्त गायकी से संगीत–सुधा श्रोताओं, नरेशों, नवाबो को प्रभावित किया और काशी का नाम उज्ज्वल किया । नवाब रामपुर सरीखे सगीत के अनेक पारखी, गुणग्राही रियासत प्रमुख आपके प्रशसकों में थे और बराबर बुलाकर आपकी गायकी का आनन्द लेते थे ।

अपनी गायिका की प्रतिष्ठा के साथ ही अपने रहन–सहन का ढंग भी स्तरीय रखा जिससे आपको आदर एवं सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिली । अपार ख्याति, धन तथा सम्मान प्राप्त कर साठ वर्ष की अवस्था मे अप्रैल सन् 1944 ई0 मे काशी के नारियल बाजार स्थित आवास मे दिवंगत हुईं । इनके बाद की इनकी वंश–परम्परा में पुत्री कमलेश्वरी, तारा तथा भतीजी सिद्धेश्वरी देवी और उनकी पुत्री शान्ता–सविता ने भी वंश–परम्परा की मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपना अपूर्व योगदान दिया ।

बड़ी मोती बाई

आपके दादा श्री विदेशी राय मूलत गोरखपुर की ओर के निवासी थे जो अपनी दो पुत्रियो क्रमश. राजेश्वरी एव शैलबाला को साथ लेकर काशी आए और यहा के संगीद–विद्वानो के ही मार्ग–निर्देशन में राजेश्वरी ने सगीत की विधिवत् शिक्षा ली । परिपक्व गायिका के रूप मे एक बार काशी के सिद्ध अघोपीठ कीनाराम स्थल के वार्षिक समारोह पर राजेश्वरी का गायन हुआ । राजेश्वरी की गायकी से तत्कालीन अघोर पीठाधीश्वर अत्यन्त प्रसन्न हुए और आशीर्वाद देते हुए विदेशी राय से बोले – कि, ''इसे दरभंगा ले जा । यह तो राजरानी का भाग्य लेकर आई है ।'' अघोरपीठाधीश्वर के अनुसार विदेशी राय ने सपरिवार दरभंगा के लिये प्रस्थान किया और साथ में राजेश्वरी की संगत के लिये काशी के धुरन्धर तबला वादक श्री भैंरो सहाय जी एवं सारगी वादक श्री मथुरा जी को साथ ले गये । दरभंगा नरेश एवं गुणग्राही सगीतप्रेमियो से राजेश्वरी को अत्यधिक धन, यश, सम्मान की प्राप्ति हुई और अपनी मनमोहक गायकी एव काशी के मूर्धन्य विद्वानों की संगति से राजेश्वरी ने विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की । वहीं राजेश्वरी की छोटी बहन शैलबाला का विवाह हुआ । विदेशी राय के दो पुत्रों में निरंजन राय को क्रमशः पांच पुत्रियां, पुट्टी, किशोरी, इन्दुमती, कमला और बडी मोती हुईं । पुट्टी और किशोरी को हैदराबाद के रईसो का सरक्षण मिला, इन्दुमती काशी के ही एक राजा और कमला दिल्ली के एक रईस की रक्षिता हुई । मात्र बडी मोती ने ही संगीत की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त कर देश की सुप्रसिद्ध गायिका होने का सम्मान अर्जित किया । बडी मोती जिस समय दरभंगा से काशी आईं, उनकी उम्र मात्र 4–5 वर्ष की थी । यहां आकर उन्होंने काशी के रससिद्ध गायक श्री मिठाई लाल मिश्र से ख्याल, टप्पा, तराना तथा ठुमरी की शिक्षा अप्रतिम ठुमरी गायक उस्ताद मैजुद्दीन खॉ से प्राप्त की । बडी मोती के कथनानुसार जिस समय 80 वर्ष के आसपास की उम्र में श्री मिठाई लाल मिश्र दिवंगत हुये उस समय बडी मोती की उम्र 20–22 वर्ष की थी । अपनी समकालीन गायिकाओं – मलका (आगरा), मलका (चिलबिले वाली), नवाब पुतली (अलीगढ), जानकी बाई (इलाहाबाद) के बीच

बासवारा, नाहन, कश्मीर आदि अनेक रियासतों मे सम्पन्न कार्यक्रमों मे बडी मोती ने अपनी मनमोहक गायकी से विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की । अपने पूर्वजों द्वारा अर्जित लाखो की सम्पत्ति की स्वामिनी भी बडी मोती हुई ।

एक बार घर के देखभाल करने वाले बडे–बूढो की मृत्यु के बाद बडी मोती बाई के घर में ऐसी भयानक चोरी हुई कि उनके शरीर पर पहने आभूषण, हाथों मे स्वर्ण चूड़ी एव नाक में हीरे की कील के अलावा सारी सम्पत्ति चोरी हो गई । दैनिक खर्च की पूर्ति के लिये वर्षों के अथक परिश्रम से अर्जित अचल–सम्पत्ति भी धूर्त लोगों की चतुराई और बेइमानी से औने–पौने दामो क्रमश. बिकती चली गई । अपनी दोनों बहनों की बेटियों को अपने पास रख, उन्हे उचित शिक्षा दिलाकर बडी मोती बाई ने उनका विवाह कर दिया ।

अपनी विशिष्ट एवं मनमोहक शैली की गायिका के रूप में आप उस्ताद मैजूद्दीन खॉ की शैली की जीवन्त मिसाल थी । अटूट गुरुभक्ति, विशिष्ट गायकी, विनम्रता, सरलता की प्रतिमूर्ति के रूप में बडी मोती बाई काशी की गौरवशाली गायिका थीं आकाशवाणी की विशिष्ट श्रेणी की कलाकार के रूप में आपने आकाशवाणी के अखिल भारतीय कार्यक्रम में अपनी कला का प्रदर्शन किया । आपकी वृद्धावस्था में कुछ प्रसारित कार्यक्रमों के अंश आकाशवाणी संग्रहालय में अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित हैं । आपकी गायकी के कुछ रिकार्ड्स 'काशी संगीत समाज' के पास भी सुरक्षित हैं, जिनसे आपकी मनमोहक गायकी की स्पष्ट झलक और उस युग की प्राचीन टप्पा–ठुमरी गायकी की विशिष्ट पहचान मिलती है ।

जीवन की अन्तिम बेला में उत्तर प्रदेश शासन से प्राप्त अल्प पेंशन, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली एवं आई0टी0सी0 संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता से प्राप्त आर्थिक सहायता की धनराशि से ही येन–केन–प्रकारेण बडी मोती बाई को अपनी वृद्धावस्था बडे ही कष्ट से व्यतीत करनी पडी । जिस बडी मोती ने अपने समय में लाखों कमाया, जिनकी कोठी के नीचे दरबान पहरा देते थे, उनका अन्तिम समय बड़ा ही कष्टप्रद रहा जो एक संगीत कलाकार की दैन्यावस्था

का प्रमाण है । आप श्री मिठाई लाल मिश्र की मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे श्री बग्गड मिश्र एव उनके पुत्र श्री जालपा प्रसाद मिश्र को भी गुरु सदृश सम्मान देती रही । गुरु घराने के किसी छोटे बालक के प्रति भी सम्मान की भावना प्रदर्शित करना बडी मोती बाई की विनम्रता और अतिशय गुरुभक्ति का प्रतीक है । आजीवन काशी की मिट्टी को गौरवान्वित करती बडी मोती बाई काशी मे ही सन् 1970–72 ई0 में 80–82 वर्ष की उम्र मे दिवगत हुईं । काशी की प्राचीन गायिकाओं में गौहरजान, हुस्ना, विद्याधरी एवं बडी मोती जैसी प्रतिष्ठित विरलो को ही मिलती हैं ।

छोटी मोती

बडे रामदास जी की शिष्या छोटी मोती का जन्म जौनपुर जिले के केराकत तहसील के अर्न्तगत तकिया ग्राम मे हुआ था । पिता रामेश्वर दास व माता हीगन देवी थीं । विवाह कम उम्र में ही हो गया था । इनकी सगीत शिक्षा रामापुरा निवासी प्रसिद्ध सारंगी वादक श्री कसेरू मिश्र जी के मार्गदर्शन मे हुई ।

श्रीमती छोटी मोती एक ऐसी कलाकार थीं जो बिना माइक के गायन प्रस्तुत करतीं थीं । उस समय भारत में रियासतों का दौर चल रहा था । ठुमरी, टप्पा, चैती, दादरा व सोहर की कलात्मक प्रस्तुति से छोटी मोती ने अपना अलग स्थान ही बना लिया था । बंगाल के जागीरदारों, राजघरानों तथा राजस्थान मे इन्होनें अनेक कार्यक्रम दिए । प्राय. सम्पूर्ण भारत के राजदरबारों को झंकृत करने के पश्चात् छोटी मोती नें अपना अन्तिम कार्यक्रम पूव्र काशीराज डॉ0 विभूति नारायण सिंह के विवाह के अवसर पर प्रस्तुत किया । इसी के बाद उन्होनें सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेना बन्द कर दिया । इसके बावजूद बनारस घराने के संगीतज्ञों में वह गुरू के समान आदरणीय सदैव रहीं ।

ये लम्बे समय तक आकाशवॉणी से भी जुडी रहीं और लाहौर तथा पेशावर केन्द्रो से उनके कार्यक्रम प्रसाारित होते रहे । छोटी मोती सन् 1930 मे बनारस आई और फिर यहीं की हो गई । 99वें वर्ष की अवस्था मे 25 दिसम्बर 1998 की भोर में लगभग तीन बजे काशी में श्रीमती छोटी मोती का स्वर्गवास हो गया ।

शिव कुँवरबाई

काशी की प्राचीन गायिकाओं मे सरस्वती बाई, गन्नो–बन्नो के बाद ख्याल गायकी में शिव कुँवरबाई अपनी कलासाधना में शीर्षस्थ थी । आपकी संगीत शिक्षा रामापुर निवासी विद्वान सारंगी वादक श्री बचाऊ मिश्र से हुई । बचाऊ मिश्र सारगी के साथ–साथ सभी गायन शैलियो के कुशल ज्ञाता थे । शिव कुँवरबाई ने अपनी लगन, निष्ठा, साधना से शीघ्र ही प्रसिद्धि प्राप्त करते हुए ख्याल, टप्पा, ठुमरी की पूर्ण पटु गायिका के रूप मे देश की लगभग सभी रियासतो मे अपनी सुमधुर प्रभावोत्पादक गायकी की कीर्ति पताका फहराकर काशी का गौरव बढाया तथा अपार धन, यश और लोकप्रियता प्राप्त की । शिवकुँवर बाई की गायकी के कुछ अंश 'काशी संगीत समाज' के सग्रहालय में सुरक्षित हैं जिन्हें सुनकर आपकी गायकी की उत्कृष्टता जानी जा सकती है । अपने युग की ख्याल गायकी में आपका विशिष्ट स्थान था । अपार ख्याति अर्जित कर उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में काशी में ही शिवकुँवरबाई का देहान्त हो गया ।

पूर्वार्द्ध आधुनिक काल की उपशास्त्रीय गायिकायें

गौहरजान

भरी हुई सुरीली व दमदार आवाज की गायिका गौहरजान ख्याल तथा होरी आदि की तो कुशल गायिका थी ही किन्तु ठुमरी गायन मे पारगत थी । ऐसा कहा जाता है कि ठुमरी गायन में इनकी समानता करने वाली दूसरी गायिका आज तक नहीं हुई ।

1870 ई0 के लगभग जन्मी गौहर जान ने रामपुर के सुप्रसिद्ध सगीतज्ञ उ0 नजीर खॉ तथा तत्कालीन लोकप्रिय गायक प्यारे खॉ सरीखे उच्च कोटि के संगीतज्ञों से विधिवत तालीम प्राप्त की । सगीत कला के प्रतिपूर्ण समर्पण, गहन साधना और लगन के द्वारा गौहर संगीत क्षेत्र मे दिनोदिन सफलता प्राप्त करते हुए शीघ्र ही उन अत्यधिक ख्याति प्राप्त तथा लोकप्रिय कलाकार के रूप मे स्थापित हो गई ।

जब किसी संगीत सभा मे गौहर जान भावाभिनय करते हुए ठुमरी सुनाती थी तो दर्शक बरबस ही मुग्ध होकर झूम उठते थे ।

तरूणावस्था में कुछ समय दरभगा मे दरबार गायिका के रूप में रहनें के पश्चात् वह कलकत्ता चली गई और वही रहने लगी । बम्बई, कलकत्ता, मद्रास तथा पूना आदि संगीत की गढ कहलाने वाले नगरों में अपने गायन से धूम मचा देनें वोली उत्कृट गायिका गौहर के अनेक रिकार्ड भी तैयार किये गये जो आज भी सगीत प्रेमियों को भावविभोर कर देते हैं ।

लखनऊ में एक अवसर ऐसा आया जब कई बडे–बडे सगीतज्ञों के बीच गौहर जान को भी अपनी कलाप्रदर्शन हेतु आमन्त्रित किया गया । वहाँ गौहर ने अपनी कला का इतना उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत किया कि सभी ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की और भारतीय संगीत की उच्चकोटि की गायिका के रूप में सम्मानित किया । अपना सम्पूर्ण जीवन कला को ही समर्पित करने वाली इन महान संगीत साधिका ने प्रौढावस्था में मैसूर–दरबार की सेवा स्वीकार कर ली जहाँ से अपनी कला द्वारा श्रोताओं की संगीत पिपासा को आकण्ठ तृप्त करती हुई सन 1930 में अंतिम श्वॉस ली ।

अपने उत्कृष्ट गायन के कारण सदैव से आदरणींय रही गौहरजान अपने रिकार्डस के माध्यम से आज भी संगीत साधकों की प्रेरणा स्रोत बनी हैं ।

जद्दनबाई

विद्याधरी बाई की समकालीन गायिकाओ में जद्दनबाई ने अपनी समोहक सुरीली, रसीली गायकी से संगीत–प्रेमियों के मानस–पटल पर अपनी विशेष छाप अंकित की । अपने युग की चलचित्र जगत की चर्चित, सम्मानित, लोकप्रिय अभिनेत्री नर्गिस की माता जद्दनबाई की संगीत शिक्षा काशी के विद्वान संगीतज्ञ दरगाही मिश्र एवं उनके सुपुत्र सुयोग्य सारंगीवादक श्री गोबर्धन मिश्र से मिली । श्री गोबर्धन मिश्र जद्दनबाई के प्रमुख सारंगी सगतकार भी थे । देश की अनेक प्रमुख रियासतों में अपनी गायकी का सफल प्रदर्शन कर जद्दनबाई ने काशी का नाम उज्ज्वल किया । जद्दनबाई के गायन के ग्रामोफोन रिकार्ड्स भी बने, जिनसे उनकी गायकी की विशिष्टता की स्पष्ट झलक मिलती है । अपार धन, यश, लोकप्रियता प्राप्त कर जद्दनबाई का देहावसान हुआ । ख्याल गायकी से लेकर गजल गायकी तक में विशिष्ट गायकी के रूप में जद्दनबाई ने अपनी पहचान कायम की ।

बेग़म अख्तर

ठुमरी, गजल, गीत, दादरा तथा कौव्वाली की अनन्य गायिका बेगम अख्तर ने अपनी विलक्षण गायन शैली द्वारा अपना नाम संगीत इतिहास में अमर कर लिया है । आपका जन्म 14 अक्टूबर, 1914 को हुआ था । पिता असगर हुसेन जज थे जिन्हें गायन से कोई लगाव नहीं था, माँ भी गायन की विरोधी थीं किन्तु बाद में उनके विचार बदल गये । बेगम अख्तर की संगीत शिक्षा अपने मामा के घर गुप्त रूप से चलती थी । आपको गायन शिक्षा देने का भार पटियाला घराने के उ0 अता मुहम्मद खाँ ने ग्रहण किया । सात वर्ष की आयु से ही आपको अपने गुरु के कठोर अनुशासन में कड़ा परिश्रम करना पडा किन्तु गुरु की अनिच्छा के बावजूद आपने सुगम संगीत की साधना भी जारी रखी । सन् 1938 में कलकत्ता में आयोजित सम्मेलन में आपके गायन–जीवन का सूत्रपात हुआ और उसके बाद ही हिज मास्टर्स वायस द्वारा रिकार्ड भरने का आमन्त्रण मिला ।

सन् 1943 में विवाह के बाद कुछ समय तक संगीत साधना रुक गई । आपने अता मुहम्मद खाँ के अतिरिक्त किराना घराने के प्रतिनिधि गायक उ0 वहीद खाँ साहब से भी संगीत शिक्षा ग्रहण की है । आपके जीवन में दो अनुभूतियाँ प्रबल रहीं – संगीत के प्रति अनुराग तथा ईश्वर में विश्वास । आपका गृहस्थ जीवन आडम्बर हीन था ।

आपने पंजाबी तथा पूर्वी अंग की गायकी का मिश्रण करके अपनी नवीन गायन शैली का विकास किया । आपके गायन में अद्‌भुत आकर्षण था जिससे श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे । आपने भीमपलासी और दरबारी जैसी गम्भीर प्रकृति की रागों में भी ठुमरी गाकर अपनी विलक्षण प्रतिभी सिद्ध की है । तथापि आपके प्रिय राग देश, खमाज, पीलू, पहाड़ी, काफी, सारंग तथा भैरवी थे । इसमें भी भैरवी, विशेष प्रिय थी । भारत रत्न प० रविशंकर के कथनानुसार ''अख्तरी बाई खुद ही एक संस्थागत रूप थीं । उनके कठ से एक ऐसा आवेदन निकलता था जो सीधे हृदय को प्रभावित करता था ।''

'खनक' तथा 'झंकार' आपके कंठ की विशेषता थी । आप हर समय नयी दिशा खोजती रहीं । गज़ल साम्राज्ञी बेगम अख्तर अपने आकर्षक, हृदयस्पर्शी गायन द्वारा देश–विदेश में छाई रहीं । आपकी गाई ठुमरी तथा दादरा में रस–माध ुर्य का सैलाब उमडता–सा प्रतीत होता था ।

आज आपकी अनेक शिष्याएं संगीत जगत में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी हैं । आपकी सांगीतिक सेवाओं के लिये सन् 1938 में आपको भारत सरकार द्वारा 'पद्‌मश्री' अलंकरण से सम्मानित किया गया । सन् 1972 में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार भी प्रदान किया गया । उ० बडे गुलाम अली खॉ तथा उ० अमीर खाँ जैसे दिग्गज संगीतज्ञ भी प्रशंसक रहे हैं ।

अहमदाबाद में गायन पेश करने के बाद दूसरे दिन 30 अक्टूबर, 1974 में आपका देहावसान हो गया । जीवन की आखिरी श्वॉस तक संगीत का समर्पित महान गायिका बेगम अख्तर को भारत सरकार द्वारा सन् 1975 में मरणोपरान्त 'पद्‌मभूषण' अलंकरण प्रदान करके सम्मानित किया गया ।

रसूलन बाई

बनारसी ठुमरी, दादरा, होरी, चैती तथा कजली की रसीली, लुभावनी, गायकी सक अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सुदक्ष रसूलनबाई काशी की सुप्रतिष्ठित गायिका एवं सिद्धेश्वरी देवी की समकालीन थीं । आपको संगीत की शिक्षा काशी के शम्भू खाँ साहब से मिली । आपकी संगीत शिक्षा के सम्बन्ध में शम्भू खॉ के पारिवारिक सदस्यों से मिली जानकारी अत्यन्त आश्चर्यजनक एवं प्रेरणाप्रद है – 'एक दिन खाँ साहब अपने आवास पर बैठे अपने शार्गिदों को संगीत शिक्षा दे रहे थे उसी बीच एक भिखारिन वृद्धा एक कम उम्र की बालिका के साथ उनके द्वार पर आ खड़ी हुई और जब शिष्यों को शिक्षा देकर खॉ साहब बाहर निकले तो उस बुढ़िया ने अपनी असहाय अवस्था का वर्णन करते हुए उस बालिका को किसी प्रकार संगीत शिक्षा देने तथा अपने आवास पर ही रखकर उसके पालन–पोषण कर देने की अनुनयपूर्ण याचना की । सुहृदय संगीतज्ञ खॉ साहब द्रवित हो उठे और बालिका को अपना संरक्षण एवं आश्रय देने के लिये राजी हो गये । युग पर भीषण मंहगाई का भयानक प्रकोप भी नहीं था । वह बालिका पारिवारिक गृह कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक करती हुई उनकी तन–मन से सेवा करती, खाँ साहब द्वारा शिष्यों को प्रदत्त संगीत शिक्षा को भी मन–ही मन आत्मसात् एवं कंठस्थ करती हुई युवा अवस्था की दहलीज पर आ पहुंची और 'होनहार–बिरवान के होत चीकने पात' कहावत को चरितार्थ करने में सफल हुई । जबकि खॉ साहब ने कभी किसी विशेष मनोयोग से उसे संगीत शिक्षा उस समय तक नहीं दी थी । अचानक एक दिन घर के एकान्त में उस बालिका कंठ–माधुर्य एव प्रतिभा से खॉ साहब प्रभावित हुये और उस बालिका की विधिवत् शिखा प्रारम्भ हुई । उपयुक्त अबोध अनाथ बालिका और कोई अन्य नहीं, रसूलनबाई थीं ।'

खॉ साहब द्वारा प्रदत्त संगीत शिक्षा एवं अपनी निष्ठा, लगन, साधना एवं सगीत प्रतिभा से रसूलनबाई ने शीघ्र ही सगीत जगत को प्रभावित किया और अपनी गायन शैली की अमिट छाप संगीत प्रेमियों के मानस पटल पर अंकित कर

सम्पूर्ण देश में काशी की सुप्रतिष्ठित गायिका होने का सुयश प्राप्त किया । तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री वी0वी0 केसरकर आपकी गायकी के अत्यन्त प्रशंसक थे, जिनके सहयोग और प्रभाव से आपको विशेष लाभ मिला और आकाशवाणी की विशिष्ट श्रेणी की कलाकार की प्रतिष्ठा प्राप्त कर देश के विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से कार्यक्रम करके आपने अच्छी लोकप्रियता अर्जित की । भारत सरकार एवं संगीत नाटक अकादमी ने आपको पुरस्कृत किया । आपके अनेकानेक गायन के रिकार्ड्स सरकारी सग्रहालय में सुरक्षित हैं । देश के अतिरिक्त नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों के सरकारी निमन्त्रण पर आपने उन देशों में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर काशी का नाम उज्ज्वल किया । आप कुछ अत्यन्त आत्मीय प्रशंसकों के विशेष आमन्त्रण पर अहमदाबाद गईं । वहीं पर आप पर पक्षाघात का आक्रमण हुआ । उसी हालत में रहती हुई इलाहाबाद में अपने सम्बन्धियों के बीच वह दिवंगत हुईं और इलाहाबाद के ही कब्रगाह में दफनाई गयीं । रसूलनबाई की अनेक शिष्याओं में नैना देवी (दिल्ली), से सभी परिचित हैं ।

सिद्धेश्वरी देवी

भगवान शंकर की नगरी का नाम लेते ही हृदय में दो चीजें साक्षात् हो जाती हैं – प्रथम, विश्वनाथ बाबा और द्वितीय, संगीत । संगीत के क्षेत्र मे वाराणसी का अद्‌भुत योगदान है । इस नगरी ने संगीत के क्षेत्रों में अनेक ऐसे विलक्षण कलाकार भेंट किये हैं जो सदैव संगीताकाश में दैदीप्यमान नक्षत्र की की तरह प्रकाशित होते रहे हैं । ऐसी ही एक अद्‌भुत, विलक्षण गायिका थीं स्व0 सिद्धेश्वरी देवी, जिन्होंने अपनी अनूठी गायन शैली के द्वारा श्रोताओं के हृदय मे अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों से लिखा है ।

स्व0 सिद्धेश्वरी देवी का जन्म एक ऐसे संगीतमय परिवार में हुआ जहॉ पीढ़ियों से संगीत विद्यमान था । लगभग दो सौ वर्ष पूर्व 'रती बाई' अत्यधिक प्रसिद्ध गायिका थीं जिनकी पुत्री मैनाबाई भी अपने युग की अत्यन्त लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित गायिका हुई । मैना की दो पुत्रियों राजेश्वरी और चन्दाबाई भी लब्ध प्रतिष्ठित गायिकायें थीं । चन्दाबाई की पुत्री थी, सिद्धेश्वरी देवी । आपके पिता का नाम श्याम जी था । बाल्यकाल से ही घर में संगीतमय वातावरण मिला और जन्मजात संगीत प्रतिभा तो विद्यमान था ही । जिसे सारंगी के देश प्रसिद्ध सुमधुर विद्वान वादक श्री सियाजी मिश्र जैसे कुशल शिल्पकार ने संगीत की रसभीनी शिक्षा से क्रमशः तराशते हुए संगीत की अद्‌भुत, अद्वितीय साकार प्रतिमा का स्वरूप प्रदान किया । सिद्धेश्वरी देवी ने अपनी गायकी को चतुर्मुखी स्वरूप में परिपक्व करने की अदम्य लालसा ने आपको देवास के सुप्रसिद्ध विद्वान गायक उस्ताद रज्जब अली खॉ, लाहौर के उ0 इनायत खॉ एवं काशी के गायनाचार्य पं0 बडे रामदास मिश्र से संगीत शिक्षा ग्रहण करने के लिये प्रेरित किया । उपर्युक्त मूर्धन्य विद्वानो द्वारा प्रदत्त शिक्षा ने आपकी गायनशैली एवं शिक्षा को विशेष मोड देकर आपको चारोपट की गायकी में निपुणता प्रदान की । ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, होली, कजरी, चैती एवं निर्गुण भजन तक की गायन शैली में पूर्ण पारंगत गायिका के रूप में आपने सम्पूर्ण देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई । बनारस

अंग की ठुमरी टप्पा, दादरा, कजरी, चैती, होली आदि गायन शैली की अनूठी, रससिद्ध सशक्त हस्ताक्षर सिद्धेश्वरी देवी पूरे देश की सुप्रतिष्ठित, संगीत प्रेमी रियासतों से लेकर आकाशवाणी केन्द्रों तथा जनसामान्य तक के बीच अतिशय लोकप्रिय गायिका रही हैं । काशी की मौलिक ठुमरी, टप्पा को जैसी जीवन्तता आपने अपनी साधना से प्रदान की, वह अनूठी तथा प्रशंसनीय है ।

सिद्धेश्वरी जी की युवावस्था में कलकत्ते में एक चिरस्मरणीय संगीत सम्मेलन हुआ । वहाँ बडे–बडे संगीतज्ञों के सम्मुख आपने अपनी संगीत साधना का इतना सशक्त परिचय प्रस्तुत किया कि आपकी ख्याति देश भर में फैल गयी । देश की अनेक रियासतों तथा प्रसिद्ध नगरों में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित संगीत–सम्मेलनों, आकाशवाणी केन्द्रों, विशिष्ट संगीत गोष्ठियों के माध्यम से आपने अनेक अविस्मरणीय कार्यक्रम प्रस्तुत कर अतिशय सुयश, सम्मान, धन, पुरस्कार एवं लोकप्रियता अर्जित कर देश के एक छोर से दूसरे छोर तक के संगीत प्रेमियों को अपना घोर प्रशंसक बना लिया । देश के अतिरिक्त नेपाल, अफगानिस्तान, इंग्लैण्ड आदि देशों की सरकार के आमन्त्रण पर अपनी सांगीतिक यात्रा में अपने प्रभावशाली, उत्कृष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत कर विदेशों में भी भारतीय संगीत के प्रेमी एवं पारखी श्रोताओं की अपार प्रशंसा प्राप्त की । साधारण संगीत रसिकों से लेकर अनेक संगीत प्रेमी राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, नरेश, नवाब, रईस, साहित्यकार, कवि, लेखक, कलाकार, विश्वकोकिला लता मंगेशकर, उ0 फैय्याज खाँ, पं0 कंठे महाराज, गंगूबाई हंगल, हीराबाई बडौदकर, उ0 अहमद जन थिरकवा सरीखे संगीत जगत के कीर्ति स्तम्भ कलाकार भी आपकी गायकी के घोर प्रशंसक रहे हैं । आपकी गायकी शुद्ध बनारसी थी । बोल–बनाव बनारसी शैली की ठुमरी की विशेषता मानी जाती है और आपकी शैली में बोलबनाव तथा तान–पल्टों का काम बेजोड़ था । स्वर को तीन सप्तक तक ऊँचा उठाकर मंद्र तक ले जाना आपकी शैली की विशिष्टता थी । यूं तो आपक ध्रुपद–धमार तथा ख्याल गायन में भी कुशल थी तथापि ठुमरी, दादरा, होली, टप्पा, कजरी, चैती तथा भजन गायन में आपकी गायकी बेजोड रही है ।

आपने दिल्ली स्थित 'भारतीय कला-केन्द्र' में ठुमरी शिक्षिका के रूप मे अपनी कला का शिष्यों में बीजारोपण किया । सन् 1973 में कलकत्ता के रवीन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय से डी0लिट0 की उपाधि भी ग्रहण की । आप संगीत नाटक अकादमी की सम्मानित सदस्या भी रही हैं । सन् 1966 ई0 में आपकी प्रभावशाली गायकी, अनूठी संगीत साधना एवं सगीत सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने आपको 'पद्मश्री' अलंकरण से सम्मानित किया तथा राष्टपति द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया । विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा आपको 'देशिकोत्तम' उपाधि से भी विभूषित किया गया है इसके साथ ही आपको 'राष्ट्रीय प्रोफेसर' होने का गौरव भी प्राप्त हुआ ।

देश के प्रमुखतम उद्योगपति परिवार, 'दिल्ली क्लॉथ मिल्टन समूह' द्वारा स्थापित संस्था 'भारतीय कला केन्द्र' (दिल्ली), में बनारसी शैली की टप्पा, ठुमरी आदि की मौलिक शिक्षा प्रदान करने हेतु जब आको दिल्ली आमन्त्रित किया गया तब काशी छोड़ते समय आप अत्यन्त खिन्नता महसूस कर रही थीं तथापि उक्त पद पर कार्य करते हुए अनेक प्रतिभावान शिष्य-शिष्याओं को सही मार्ग दर्शन करने के कल्याणकारी उद्देश्य को देखते हुए आप काशी छोड़कर दिल्ली जा बसीं और अनेक कलाकारों का मार्ग प्रशस्त किया । अपनी युवावस्था में आपने फिल्मों में अभिनय भी किया तथा कुछ चित्रों मे नायिका भी रही हैं ।

लखनऊ को ठुमरी की जननी अवश्य कहा जाता है किन्तु बनारसी ठुमरी का अपनी सरलता, सहजता, तथा भावपूर्ण बोल-बनाव के कारण उपशास्त्रीय संगीत में विशिष्ट स्थान है जिसे सिद्धेश्वरी देवी ने अपनी आदर्श गायनशैली के द्वारा और भी आकर्षण प्रदान किया एव सर्वप्रिय बनाया । आप स्वयं यह स्वीकार करती थीं कि बनारस अंग की सारी विशेषता होते हुए भी आपका ठुमरी गायन 'ख्याल' से प्रभावित है । बोल-बनाव के बाद मुखड़े का खूबसूरती से सम पर आना, जिसमें कहीं भी जोड या बिखराव नहीं आता है । बीच-बीच में ख्याल की छोटी-छोटी ताने और टप्पे की खटकेदार तानों का प्रयोग आपकी गायन शैली की निजी विशेषतायें थीं जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई । चौदह मात्रा की दीपचन्दी

ताल में वक्रगति होने के कारण, उस ताल में निबद्ध गायन करना आपको विशेष प्रिय था । आपके गायन के अनेक रिकार्ड्स विभिन्न संगीत कम्पनियो द्वारा प्रकाशित किये गये हैं ।

सम्पूर्ण जीवन संगीत साधना में तल्लीन, अत्यन्त गुरुभक्त, उदारमना, धर्मपरायण, कर्तव्यनिष्ठ संगीत जगत की सशक्त हस्ताक्षर सिद्धेश्वरी देवी पर दिल्ली में ही रहते हुए अचानक पक्षाघात के गम्भीर घातक आक्रमण के कारण 18 मार्च सन् 1976 ई0 को दिल्ली में स्वर्गवास हो गया । आपके निधन से संगीत जगत की जो अपूरणीय क्षति हुई है वह शायद ही निकट भविष्य में भरी जा सके ।

वर्तमान काल की उपशास्त्रीय गायिकायें

श्रीमती गिरिजादेवी

देश की सांस्कृतिक हृदय स्थली काशी नगरी में समय समय पर विभिन्न क्षेत्रों में एवं संगीत क्षेत्र में ऐसे ऐसे कलाकार उत्पन्न हुए है। जिन्हें सहज ही देश ने कला गौरव की श्रेणी प्रदान की है। इनमें एक नाम विगत पांच छः दर्शको से शास्त्रीय सगीत क्षितिज की दैदीप्यमान नक्षत्र देशक की सर्वाधिक लोकप्रिय सुप्रतिष्ठित गायिका काशी की श्रीमती गिरिजादेवी का है। जिनके कंठ माधुर्य से सम्पूर्ण देश ही नहीं अपितु विदेश के लाखों संगीत प्रेमी भी सुपरिचित एवं प्रशसक हो चुके है।

आपके पिता श्री रामदास जी संगीतकला क अनन्य रसिक प्रेमी थे तथा हारमोनियम वादन में विशेष रूचि रखते थे। ऐसे पिता की पुत्री के रूप में जन्मजात नैसगिक संगीत प्रतिभा सम्पन्न बालिका गिरिजा ने आठ मई सन् उन्नीस सो इक्कीस ई० में जन्म लिया । चार पॉच वर्ष की इस अबोध, नटखट तीक्षण बुद्धि शिशु की संगीत शिक्षा का गुरूता भार पिता रामदास ने अपने पित्र तुल्य पूज्य गुरू काशी के विद्वान सारंगी वादकों में प्रमुख , सारंगी सागर पं० सूरज प्रसाद मिश्र के सबल कंधों पर डाल कर निश्चिन्त हो गये । मिश्र जी ने उसी उम्र मे उस बालिका की सुसुप्त प्रतिभा को सहज पहचान लिया और चार – पांच वर्ष की उम्र से ही बड़े मनोयोग एवं आत्मीयता से पारिवारिक स्नेह प्रदान करते हुए इस अनगढ शिला खण्ड को बड़ी सूक्ष्मता तथा तत्परता से क्रमशः तराशना प्रारम्भ किया जो पन्द्रह वष की उम्र में आते आते काशी मे संगीत की सजी व प्रतिमा के रूप में पहचानी जाने लगी। विद्वान, अनुभवी, योग्य गुरु के कुशल निर्देशन एवं दस वर्षो की

निष्ठापूर्ण अनवरत संगीत साधना ने गिरिजा देवी को यौवन की दहलीज पर पॉव रखन की उम्र आते आते ख्याल टप्पा ठुमरी,दादरा आदि विभिन्न गायन शैलियों में कुशलता प्रदान की तथा संगीत कला क्षेत्र में पटुता प्राप्त करने की ललक एवं उत्साह के लिये ठोस आधार शिला प्रदान की। पं० सरजू प्रसाद मिश्र की तृत्यु के पश्चात् काशी के विद्वान गायक पं० श्री चन्द मिश्र में उत्कृष्ट चर्तुमुखी गायकी की शिक्षा देकर गिरिजा देवी के संगीत सान्दर्य में भी वृद्धि की। आपकी अनुपम बुरूभक्ति शिक्षा ग्रण करनें का अदम्य उत्साह, गुरू परिवार के प्रति तन–मन–धन से सदैव सहज तत्परात व्यवाहार कुशता, नसार्गिक संगीत प्रतिभा निष्कपट शसलीन स्मिति से आवेष्टित सहज आत्मीयता , संगीत कला के प्रति निष्ठा लगन तथा साधन से आपने शीघ्र ही देश की कुशल गायिका होने का गौरव अर्जित किया।

सार्वजनिक मंच से अपना सव्रप्रथम कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर आपको सन् १९५० ई० में आरा में आयोजित अखिल भारतीय संगीत सममेलन के माध्यम से प्राप्त हुआ, जिमें देश के अनेक वरिष्ठ सुविख्यात गायक वादक एवं नर्तक आमंत्रित थें। इस संगीत सम्मेलन के आयोजक बिहार के प्रतिष्ठित जमीदार संगीत पारखी रईस, सुप्रसिद्ध मृदंग वादक श्री लल्लन बाबा थे। गिरिजा देवी ने इस प्रथम संगीत सम्मेलन में ही अपनी उत्कृष्ट संगीत साधना का प्रभावशाली प्रदर्शन प्रस्तुत कर सुधी संगीत श्रोताओ के मानस पटल पर अपनी अमिट छाप अंकित कर ली। कुछ ही दिनो के उपरान्त दिल्ली में आयोजित एक विशिष्ट संगीत सभा में अपनी मधुर गायकी की सफल प्रस्तुति से महामहिम सहित उपस्थित श्रोता मण्डल को मत्र मुग्ध कर दिया। उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन आपकी कंठ माधुरी में इतना खो गये कि अपने व्यक्तिगत सविच द्वारा बार बार समय का ध्यान दिलानें पर भी उन्होनें गिरिजा देवी से पुनः कुछ और सुनने की इच्छा प्रकट की। इस संगीत सभा के इनके उत्कृष्ट कार्यक्रम ककी देश के

अनेक समाचार पत्रों ने भरपूर प्रशंसा की, जिससे सम्पूर्ण देश की संगीत प्रेमी जनता आपसे मात्र परिचित ही नही हुई अपितु आपकों सुनने के लिये ललायित भी हो गई आकाशवाणी लखनऊ द्वारा प्रसारित आपके कार्यम को सुनकर संगीत प्रेमी अत्यन्त प्रमुदित हुए और क्रमशः लोकप्रियता प्राप्त करती हुई श्रीमती गिरिजादेवी शीघ्र ही देश की सर्वाधिक लोकप्रिया गायिका के पद पर प्रतिष्ठित होती चली गई। सम्पूर्ण देश में आयोजित संगीत–सम्मेलनों, आकाशवाणी कार्यक्रमों में भाग लेकर आपने अखिल भारतीय स्तर की लोकप्रियता प्राप्त की ओर अपार यश धन सम्मान, आत्मीयता एवं प्रशंसा पाई। आकाावाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम रेडियों संगीत सम्मेलन, विशेष संगीत सभा आदि में अनेंक बार भाग लेकर आपने सफल कार्यक्रम देने का गौरव प्राप्त किया । देश के लगभग सभी आकाशवाणी केन्द्रो से आपके प्रसारित कार्यक्रमों ने काशी की गारिमा बढ़ाने से आपके प्रसारित बचपन में आपकों एक दो फिल्मों में भी कार्य करनें का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आपकी बहुमूल्य संगीत साधना सेवा और अपार लोकप्रियता से प्रभावित होकर भारत सरकार ने आपको ' पद्मश्रीं ' एवं सन् १९८१ ई० में 'पद्मभूषण ' के राष्ट्रीय अलंकरण से विभूषित किया हे। संगीत नाटक अकादमी उ० प्र० संगीत विद्यापीठ (कानपुर), प्रयाग संगीत समिति (इलाहाबाद) , सुर सिंगार संसद (मुम्बई) , संगीत श्यामला (कोलकाता), प्राचीन कला केन्द्र (चण्डीगढ़), उ० हाफिज अली खाँ सम्मान, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रतिष्ठापरक ' तानसेन पुरस्कार – १९९९ , प्रशस्तिपत्रा , एकलाख रू० की सम्मानित धनराशि, उत्तर प्रदेश द्वारा – यश भारती सम्मान, प्रशस्तिपत्र, एक लाख रूप० की सम्मनित ानराशि, श्री महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ –डी० लिट० की मानद उपधि से विभूषित श्रीमती गिरिजा देवी को ललित, संगीत परिषद, नाद वन्दना, रोटरी क्लब, नगर महापलिका, (वाराणसी) आदि के अतिरिक्त भी अनेक सामाजिक, साहित्यिक धार्मिक राजनैतिक एवं

सास्कृतिक संस्थाओं ने गिरिजा देवी को सम्मानित कर विशेष धनराशि, प्रशस्तिपत्र, स्वर कोकिला , गान सरस्वती, उत्तर प्रदेश कोकिला, कठ शिरोमणि आदि मानद उपाधियो से अलंकृत किया हैं। देश विदेश के अनेक राष्ट्राध्यक्ष राज्यपाल, मंत्री , साहित्यकार, चित्रकार, लेखक, पत्रकार, विद्वान, चिंतक, दार्शनिक, संत, महात्मा के समक्ष आपने सार्वजनिक रूप से संगीत कला का प्रदर्शन कर उनसे प्रशंसा स्नेह एवं आर्शिवाद प्राप्त किया है। देश के विश्वख्यिात चिंतक, दार्शनिक जे० कृष्णमूर्ति आचार्य विनोबा भावे, माता आनन्दमयी, गोस्वामी बिन्दूजी, स्वामी सीताराम शरण, जगतगुरू शंकराचार्य आदि आपकी प्रभावशाली गायनशैली के आत्मीय प्रशसको में रहे हें । आप अपने अत्यन्त निकट पारिवारिक सम्बन्धों एवं गुरूजनों के आवास को छोड़कर अनय व्यक्तिगत कार्यक्रमों बावजद भाग ने लेने के अपने निर्णय का बड़ी दृढ़ता मसे पालन किया है। भारत सरकार के सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल एवं विशिष्ट संस्थाओं की प्रमुख सदस्या के रूप में आपने समय समय पर विदेश की अनेक सफल सांगीतिक शात्राएं की हे। नेपाल, इग्लैण्ड, रूस, अमेकिरा आदि देशो में भारतीय संगीत की विजय पताका फहराकरा अर्न्तराष्ट्रीय ख्यााति अर्जित कर आपने काशी की गरिमा बढ़ाई है। रूस यात्रा के प्रवासकाल में गिरिजा देवी की सुरीली, ओजपूर्ण, प्रभावशाली, कंठमाधुर्य से प्रभावित होकर ' अजर बैजान ' प्रान्त की अत्यन्त लोकप्रिया लोक संगीत गायिका ने आपका शिष्यत्व ग्रहण किया। सन् १९८५ ई० में अमेरिका में आयागजित ' इण्डिया फैस्टिवल' में भारत की सम्मानित कलाकार के रूप में आपने भाग लेकर अपनी सुमधुर, प्रभावोत्पादक गायकी से अमेरिकी संगीत प्रेमियों को मत्र मुग्ध कर अत्यन्त प्रभावित किया जिसकी देश विदेश की अनेक पत्रा पत्रिकाओं ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

विगत लगभग बीस बाइस वर्षो से आइ. टी. सी. उद्योग समूह द्वारा कोलकाता में स्थापित 'संगीत रिसर्च अकादमी के आग्रह पर '

बनारस सेनिया घराना ' की प्रतिनिधि कलाकार के रूप में संगीत के होनहार प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को बनारस घराने की उत्कृष्ट गायकी की शिक्षा प्रदान कर उन्हें श्रेष्ठ कलाकार बनाने में संलग्न है। उपर्युक्त संस्था ने देश के संगीत के घरानों की परम्परा को अक्षुण बनाये रखने के महान उद्देश्य सं प्रत्येक घरानों के विशिष्ट मान्य विद्वानों की सेवाएँ प्राप्त करने का स्तुत्य प्रयास किया हैं समय समय पर गिरिजादेवी ने अनेक नाट्य नृत्य संसगीतिकामें अपने संगीत निर्देशन से भी अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दकर विशेष प्रशंसा अर्जित की है। संगीत की समुन्नति के लिये भारत सरकार की ओर से वर्षो पूर्व श्री डी. जी. खोसला की अध्यक्षता में गणित संसद सदस्यों की समिति में मनोनीत सदस्या के रूप में आपका चयन किया गया था। आकाशवाणी की केन्द्रीय श्रवण समिति की सदस्या एवं अपने गृहनगर एवं देश की अनेक सांस्कृतिक संस्थाअें से जुडऋी समाज की माननीय व्यवाहर कुशल विनम्र उदार, अतिथ्य सत्कार अनन्य गुरू भक्ति, अभिमान रहित किन्तु स्वाभ्मिान की जीवन्त प्रतिमूर्ति गिरिजादेवी में महान कलाकार के सभी सद्गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। नितान्त। उपरिचित भी पहली बार आपसे मिलने के बाद आजीवन आपका अत्यन्त पारिवारिक और आत्मीय बन जाता है। अपने स्वकीय वैशिष्ट्य से आप कलाकार, आयोजक, श्रोत्वमण्डल तथा शुभचितकों के विशल समुदाय में अत्यन्त लोकप्रिया एवं प्रअतष्ठित कलाकार मे है देयाकी अनेक पमुख ग्रमोफोन कम्पनियों ने आपके रिकर्डस एल. पी. ई पी . कैसेट्स निर्मित कर उपकी गायन प्रतिभ का सम्मन किया है।

'क्लैसिकल इनकाउन्टर्स ' – (टप्पा, चैती, सावन, दादरा होरी गायन) 'मैग्ना साउण्ड ' द्वारा "गिरिजा देवी सिंग्स गलोरीज ऑफ ' पूरबी गायकी ' (राग भूप एवं ठुमरी , दादरा एवं झूला गायन),

'टाइम्स म्युजिक ' द्वारा – ' गिरिजा देवी गोलडन रागा कलेक्शन ' आदि एकल गायन कैसेट्स एंव बेगम अख्तर और गिरिजा देवी दोनों के सम्मिलित कैसेट – ' चेयरमैन्स च्वाइस ग्रेट ठुमरी ' एवं उ० बिस्मिल्ला

खॉ के साथ गिरिजा देवी के गायन की ' ए रेअर जुगलबंदी' (एच. एम. वी. द्वारा) अतिशय लोकप्रिया हुए है।

अब तग के संगीत जीवन में देश के विभिन्न आयोजनों में अनेक चिरस्मरणीय कार्यक्रम प्रस्तुत कर आपने उपस्थित संगीत श्रोताओं के विशाल जनसमूह को सम्मोहित कर उनका सहज स्नहे प्राप्त किया हे। सगीत क्षेत्र में आपकी अनेक शिष्याओं में स्व. श्रीमती वीणा पाणि मिश्र (भुवनेश्वर उड़ीसा), श्रीमती डायलियाउत, आई. टी सी. कोलकाता की अनेक संस्थागत छात्राओं के अतिरिक्त श्रीमती मंजू सुन्दरम् और युवा गायिका सुनन्दा शर्मा ने उत्कृष्ट गायिकाओं के रूप में ख्याति अर्णित की है।

काशी नरेश महाराज विभूति नारायण सिंह (कुलधिपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के सत्परामर्श पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय विद्वत परिषद ने संगीत कला मंच संकाय में बनारस घराने की प्रतिनिधि गायकि के रूप में विद्याथियों , शिक्षकों को परिचित कराने के उद्देश्य से सवसम्मति से आपके नाम की आख्या संस्तुति की ओर एक वष के लिये इस पद को गौरवान्वित करने का साग्रह अनुरोध किया। इस अनुरोध को काशी की बेटी गिरिजा देवी ने अपना गौरव समझ कर स्वीकार किया। इस परिप्रेक्ष्य में होने वाली स्वकीय क्षति को उन्होने गौण समझ कर काशी के प्रति अपनी स्वाभविक निष्ठा नैतिक उत्तरदायित्व, सम्मानित अभिव्यक्ति, सहजशालीनता एव उदारता का परिचय देकर गर्व का अनुभव किया। अपनी जन्म भूमि , साधना भूमि, गुरूभूमि प्रणम्य भूमि , काशी के प्रति समर्पित साधिका गिरिजादेवी की निष्ठा निः संदेह प्रशंसनीय है। अपनी ओणपूर्ण, सुमधुर, प्रभावशाली गायकी, स्नेहिल सदव्यवहार, धर्म परायणता तथ उदारता से पूरे देश में संगीत जगत की प्रतिष्ठापरक लोकप्रियता अर्पित कर आपने अपने सुयश से काशी का गौरव बढ़ाने में अपना महनीय तथा सक्रिय योगदान दिया है।

बागेशवरी देवी

बिहारी प्रान्त के मुगेट नगर में जन्मीं पली और किशोरावस्था प्राप्त बालिका बागेश्वरी के मात: पिता दोनों ही संगीत प्रेमी थे, जिनकी छत्रछाया से निकलकर बागेश्वरी काशी आई और वहाँ के अनके गुणियों से संगीत शिक्षा प्राप्त की। इसी क्रम में काशी के गुणी गायक श्री गणेश प्रसाद मिश्र से आप विशेष प्रभावित हुई और उनकी शिष्यता ग्रहण की तथा आज भी उनका मार्गदर्शन प्राप्त कर रही है। अपनी निष्ठा, साधना एवं लगन से बनारसी, ठुमरी, दादरा, कजसी, होली चैती भजन की भावप्रधान गायकी की कुशल गायिका के रूप में बागेश्वरी ने अपनी विविष्ट पहचान बनाकर देश के संगीत प्रेमियों के राष्ट्रीय कार्यक्रमों , मंगलवासरीय, रविवारीय, विशेष संगीत सभाओं एवं सरकारी गैर सरकारी, सांस्कृतिक संस्थाओं के द्वारा आयोजितक प्रमुख कार्यक्रमों में क्रमशः भाग लेते हुए बागेश्वरी की कला साधना निखरती चली गई और ख्याति श्री बढ़ती गई। देश सशक्त प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के समक्ष भी प्रधानमंत्री आवास में कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर आपको मिला। अत्यन्ति विनम्र मिलनसार, हँसमुख बागीश्वरी देवी ने अपनी कलासाधना से काशी नगरी तथा देश का नाम उज्जवल किया है। प्रशंसा एवं स्नहे प्राप्त किया है। अपनी व्यक्तिगत इगलैण्ड यात्रा (सन् १६८१–८२) काल में इन्हें अनके नगरों में कई सफल कार्यक्रम देने और बी.बी.सी नन्दन से कार्यक्रमों प्रस्तुत करने का सुअवसर मिला।

श्रीमती निर्मला अरूण

देश की लब्ध प्रतिष्ठित गायिकाओं की श्रृखला में काशी की निर्मला अरूण की गायकी में कंठमाधुरी , प्रस्तुतीकरण की मौलिकता एव शब्द सहित्य के अनुरूप भावात्मक स्वर संयोजन का अद्‌भुत समिश्रण प्राप्त होता हैं जो सहज ही लोगो को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। काशी के गुणी तबलावादक श्री वासुदेव जी की होनहार पुत्री निर्मला अरूण को बचपन से ही घर में संगीतमय वातावरण मिला। ७ वर्ष से १५ वर्ष की उम्र तक अस्ताद अताखाँ एवं पंजाब पटियाला घराने के सुप्रसिद्ध उस्ताद अब्दुल रहमान खाँ से संगीत की शिक्षा निर्मला अरूण ने ग्रहण की। बीच में अस्वस्था के कारण आपकी शिक्षाक्रम विश्रंखलित रहा। काशी छोड़ आपने बम्बई को अपनी कार्यस्थली बनाया और बम्बई प्रवासकाल में २०–२५ फिल्मों में नायिका, पार्श्वगायिका, सहनयिका होने का अवसर प्राप्त किया। जिनमें से सवेश घूघॅट, साली , कानून, गीत, महालक्ष्मी, शारदा, जन्माष्टमी आदि फिल्में अधिक सफल हुई। आपके पति भी फिल्म जगत से सम्बन्धित रहे, जिनकी असामायिक मृत्यु से आपको विषेष आघात लगा। युवावस्था में पति विहीन, बच्चों के साथ निर्मला ने आर्थिक विपन्नता में बम्बई से मीलों दूर विरार में रहकर सभी प्रकार के संघर्षो से धैर्यपूर्वक जूझते हुए पुनः संगीत साधना की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। फिल्मों में कार्य करते समय आपने गुरू अर्जुन सिंह से भरतनाट्यम् तत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया, किन्तु कभी सार्वजनिक मच प्रदर्शन को ओर उन्मुख नहीं हुई। १०–१२ वर्षो तक फिल्म जगत् से जुड़ी रहकर आपने उस क्षेत्र से पूर्ण सन्यास ग्रहण कर लिया और पुन· आपकी संगीत शिक्षा का उत्तरदायित्व पटियाला घराने के उस्ताद अब्दुल रहमान खॉ ने ग्रहण कर लिया और पुनः आपकी गायकी को प्रभावशाली दिशा प्रदान की। शीघ्र ही आपने बनारसी शैली की ठुमरी , दादरा और पंजाब अंग की चपल

गायकी का अद्भुत समन्वय, सम्मिश्रण से एक नई प्रभावशाली गायन शैली सेसंगीत जगत् में अपना वर्यस्व स्थापित किया। धीरे धीरे अपने कंठ माधुर्य की चपलता , गति, कंठधर्मसीमा से प्रगति करती हुई निर्मला देवी ने देशव्यापी ख्याति एवं लोकप्रियता अर्जित कर अपनी एक अलग पहचान बनाई और देश की लोकप्रिय उपशास्त्रीय गायिका की प्रतिष्ठा प्राप्त की। बंदिशों की बोल आदयगी में उ० बड़े गुलाम अली खाँ एवं सुरों की बढत आदयगी में उ० अमीरखाँ आपके आदर्श रहे। निर्मला अरूण की गायकी में सुर, गमक, खटका, मुर्की, भीड़ आदि अवयवों का उचित समन्वय एवं प्रयोग संगीत श्रोतओं को प्रभावित करने में पूर्णतः सक्षम रहे।

आपकी अपार लोकप्रियता से प्रभावित होकर देश की प्रतिष्ठित ग्रामोफोन कम्पनी एच. एम. वी. एवं अन्य अनेक कम्पनियों ने समय समय पर आपके अनेक रिकड्सि बनाये जिनमें निर्मलार अरूण लक्ष्मी शंकर की युगलबंदी के एल.पी. रिकाड्र्स ने अपार लोकप्रियता प्राप्त की। लगभग २५–३० वर्षो से मुम्बई में अपने अभिनेता निर्देशक पुत्र परिवार के साथ रहती हुई निर्मला अरूण काशी से सहज अत्मीय सम्बन्ध अटूट यबना रहा और आपको काशी नगरी की कन्या होने का विशेष गर्व था। धर्म परायण निर्मला अरूण ने विगत् कई वर्षो से सार्वजनिक मंचों से कार्यक्रम देना बन्द कर दिया था। किन्तु संगीत जगत में काशी की लोकप्रिय गायिका के रूप में आपका योगदान सराहनीय था। सितम्बर १९९६ ई० में बम्बई में ही दिवंगत हुई।

श्रीमती शोभागुर्टू

स्वर–लय–सौन्दर्य के श्रेष्ठ सम्मिश्रण का साक्षात् करने वाली स्व0 श्रीमती मेनका शिरोडकर, जिन पर 'यथा नाम तथा गुण' की कहावत शत्–प्रतिशत चरितार्थ होती थी, ऐसी उच्चस्तरीय गायिका एवं नर्तकी, जिनके नाम की अपने समय में पूरे देश में धूम थी, की सुपुत्री श्रीमती शोभा गुर्टू ने भी अपनी माँ के गुणों को अपनाते हुए और अपनी सच्ची लगन से सतत् साधना करके, अपने ईश्वर प्रदत्त सुरीले कंठ में उन सभी खूबियों को आत्मसात् कर लिया है जिनकी वजह से कोई कलाकार शीर्षस्थ स्थान का अधिकारी बनता है ।

वर्तमान समय की वरिष्ठ प्रतिष्ठित एवं बहुनामधन्य उपशास्त्रीय गायिका शोभा गुर्टू का जन्म 1927 में बेलगांव में हुआ । जन्म से ही या यूं कहिये कि जन्म के पूर्व से ही उनमें संगीत के संस्कार जड पकड़ रहे थे । संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा स्वाभाविक रूप से अपनी माता श्रीमती मेनका बाई जी से ग्रहण की । शास्त्रीय संगीत की शिक्षा सुप्रसिद्ध स्व0 उ0 नत्थन खाँ जी जैसे महान संगीतज्ञों से ग्रहण की । अपने श्वसुर स्व0 पं0 नारायण नाथ गुर्टू जी का सुयोग्य मार्गदर्शन भी शोभा जी को प्राप्त हुआ इस प्रकार इतने उच्चस्तरीय संगीतज्ञों के स्नेहपूर्ण शिष्यत्व और मार्गदर्शन में अटूट एवं दीर्घ साधना करते हुए शोभा जी ने अपने गायन को इतना सुनियोजित, सुरीला, लोचदार और आकर्षक बनाया कि लाखों की संख्या में ना सिर्फ उनके प्रशंसक हैं अपितु अनेक नये सगीत साधक उनके गायन से प्रेरित होकर लाभान्वित हो रहे हैं और अपने गायन को प्रगति दे रहे हैं ।

शोभा जी की आवाज अत्यधिक भावपूर्ण और दमदार हे जिसमें नाजुकता और लोच का अद्भुत सम्मिश्रण है । शोभा जी पूरब अंग की बनारसी शैली में उपशास्त्रीय गायन प्रस्तुत करती हैं जिसमे स्वर की नजाकत और लोच के साथ शब्दों के अनुसार भावपूर्ण 'कहन' का विशेष महत्व होता है, ओर इस कला में शोभा जी की कुशलता लाजवाब है ।

उनके पास प्राचीन ठुमरी/दादरा की बंदिशों का विशाल भण्डार है । गजल गायन में भी वह पूर्ण दक्ष हैं अत. महफिल में उनके गायन का समा ऐसा बंधता है कि श्रोताओं का हृदय उसमें निमग्न हो ज़ाता है । उपशास्त्रीय संगीत की अन्य विधाएं यथा होरी, कजरी, चैती, भजन के अतिरिक्त मराठी नाट्य संगीत गायन में भी उन्हें समान महारथ प्राप्त है ।

आकाशवाणी और दूरदर्शन की लोकप्रिय कलाकार श्रीमती शोभा गुर्टू जी ने देश–विदेश के विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं । उनकी कला में फिल्म जगत भी लाभान्वित हुआ है । इनके अतिरिक्त **Music Today**, रिद्म हाउज आदि विभिन्न संगीत कम्पनियों द्वारा शोभा जी के अनेक कैसेट्स और सी0डी0 भी निकाले गये हैं जिसे संगीत श्रोताओं द्वारा सराहना मिली है ।

आज शोभा जी के कई शिष्य/शिष्याएं संगीत जगत में अपनी पहचान बना रहे हैं और साधनारत हैं इस प्रकार गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से शोभा जी अपनी कला अनेक शिष्यों को हस्तान्तरित कर संगीत समाज को समृद्ध करने में योगदान दे रही हैं ।

श्रीमती शोभा गुर्टू जी को उनकी संगीत सेवाओं के लिये 1987 में, 'संगीत नाटक अकादमी अवार्ड' द्वारा सम्मानित किया गया है ।

आज भी शोभा जी अपने हृदयस्पर्शी गायन द्वारा श्रोताओं की आदरणीय और प्रिय कलाकार हैं । वह अपनी गायकी द्वारा संगीत साधकों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं जिससे वे प्रेरित और उत्साहित होकर लाभान्वित होते हैं । उनके गायन से ऐसा लगता है जैसे कि कोई मूर्तिकार मूर्ति का निर्माण कर रहा है । उनके स्वरों में असीम प्रेम एवं माधुर्य प्रलक्षित होता है । इस प्रकार वह अपने अद्भुत गायन द्वारा संगीत को समृद्धशाली बनाने में निरन्तर और प्रशंसनीय योगदान प्रदान कर रही हैं ।

सविता देवी

वर्तमान समय की लब्ध प्रतिष्ठित, चर्चित उपशास्त्रीय शैली ठुमरी, दादरा, होरी, चैती, कजरी, भजन,गीत, गजल आदि को अपने अनूठे मंचचतुर अदाज में प्रस्तुत कर प्रशम्नीय ख्याति अर्जित करने वाली , आकाशवाणी, दूरदर्शन सरकारी गैरसरकारी, सास्कृतिक उत्सवों में समिमलित देश के विभिन्न नगरों क सागीतिक आयोजनो की सशक्त हस्ताक्षर सविता देवी अपने युग की काशी की रससिद्ध गायिका स्व० श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी की सुपुत्री हैं बनारस अंग के उपशास्त्रीय गायन में निष्णात कलाकार सविता देवी नं अपनी आकर्षक गायन शैली से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठापरक लोकप्रियता अर्जित की हैं आपकी स्वाभविक सरलता और सहजता से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है।जिस प्रकार आपके गायन में कोमलता और स्वरों की दृढता का मिश्रण है उसी प्रकार आपके व्यक्तित्व में भी कोमलता और दृढता का संगम हैं आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व आपके गायनशैली का परिचय देता है और यही एक सच्चे कलाकार की पहचान है।

सविता देवी अपनी मातृपरम्परा से उत्तर प्रदेश के तूरवा ग्राम की गंधर्व'जाति से सम्बन्धित है जिनका कार्य गाना बजाना अर्थात् गंधर्व विद्या ही था। इसी जाति की महिला कलाकार थी मैना देवी जिन्होने अपना गाँव छोडकर बनारस में स्थायी निवास बनाया। मैना देवी की पुत्री श्यामा देवी और श्यामादेवी की पुत्री थी, सुप्रसिद्ध उपशास्त्रीय गायिका स्व० सिद्धेश्वरी देवी, जो सविता देवी की माता थी। इस प्रकार लगभग दो सौ वर्षो से अपने वंश को ठुमरी गायन की अक्षुण परम्परा की कुशल निर्वाहक एवं उत्तरदायी सविता देवी हैं।

सविता देवी को संगीत विरासत में मिला प्रारम्भ से ही अपने घर में आने वाले अनेक छोटे बड़े कलाकरों का गाना बजाना सुना ओर समझा । स्वर ओर ताल के इस अनवरत माहौल ने आपके बाल सुलभ मन पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि वह संगीत को अपने जीवन का मकसद समझ कर साधना में ललीन हो गई । सितार वादन की ओर सविता जी की अभिरूचि देख कर माता सिद्धेश्वरी देवी ने आपको सितार वादन की शिक्षा दिलाने की समुचित व्यवस्था, तंत्र वाद्य के गुणी विद्वानों द्वारा की। क्रमशः प्रगति एवं अभ्यास के अनन्तर आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संगीत कला मंच संकाय से सितार वाद्य की उच्च स्तरीय परीखा विशेष अंको के साथ सम्मान सहित उत्तीर्ण की यहा आपको प्रो० लालमणि मिश्र सरीखे संगीत के गुणी विद्वानों से शिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। समय समय पर देश के अनेक नगरों में आयोजित प्रमुख संगीत कार्यक्रमों में अपने सितार वादन के सफल कार्यक्रम प्रस्तुत कर संगीत जगत में सितार वादिका के रूप मे पदार्पण किया शिक्ष एवं संगीत दोनो ही क्षेत्रों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त सविता देवी गत अनेक वर्षे से दिल्ली को दौलतराम कालेज में सितार विषय की व्यख्याता के रूप में कार्यरत होकर अपनी सेवाए संगीत जगत को अपिर्त कर रही हैं।

सितार वादन के साथ ही गायन की शिक्षा अपनी माता से ग्रहण कर रही थी किन्तु आत्मनिर्भर एवं स्वालंबी होने के बाद से पूर्ण तन्मयता से अपनी परम्परा गत गायकी की तालीम लेने और साधना में जुट गई। मॉ पुत्री की आवाज में बड़ा अन्तर हैं इसी कारण दोनो की गायकी में भी अन्तर ने स्थान लिया। सिद्धेश्वरी देवी के गायन में अलौकिक आलम्बन के प्रति एक पुकार थी जिसकी झलक सवितादेवी के गायन में भी दिखती हैं माता की आवाज में जहा भरीपन था वही आपकी आवाज पतली मधुर और ठुमरी गायन, हेतु सर्वोपयुक्त है। स्वर

लगाव में स्वाभाविकता है। मधुर आवाज में स्वाभविक स्वर लगाव द्वारा भावों के स्वच्छ और वास्तविक प्रगतीकरण के कारण आज सविता देवी करोड़ो श्रोताओं के ह्रदय से सम्मनित एवं प्रिय कलाकार है।

ठुमरी के साथ– साथ आप उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकगीतो के प्रकारो चैती कजरी पूर्वीधुन और गजल भजन आदि की भी अत्यन्त भावपूर्ण प्रस्तुति करती है। शास्त्रीय ख्याल गायन में भी सुरक्ष है। आपने अपनी माता के अतिरिक्त पं० मणी प्रसाद एवं पं० डाल चन्द्रदेवी जी से भी संगीत की विधिवत शिक्षा ली है। अतः ठुमरी गायन में जहा मा का प्रभाव दिखता हैं वही ख्याल गायकी में किराना घटाने के रंग अपनी छूटा बिखेरते है।

आपको सितार वादन हेतु भारत सरकार की ओर से छात्रवृति प्रदान की गई थी जिससे आपको पं० रविशंकर के संगीत विद्यालय किन्नर में सितार वादन की शिक्षा ग्रहण करनेका सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की नियमित कलाकार होने के अतिरिक्त देश के लगभग सभी सममनित संगीत सम्मेलनों में एवं विदेशों में भी अनेक अवसरों पन अपनेसुमधुर एवं भाव प्रवण गायन से आपने श्रीताओं को भावविह्वल किया है आपके अनेक कैसेट सी० डी. भी विभिन्न संगीत कम्पनियों द्वारा प्रकाशित किये गये हैं जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए है।

आपने अपनी माता श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी की स्मृति में श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी संगीत अकादमी ' की स्थापना की है। जिसमें गुरू शिष्य परम्परा के अन्तर्गत शिक्षार्थियों को संगीत शिक्षा दी जाती है तथा साथ ही साथ विद्याथियों को शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त हो

सके। इस उद्देश्य से उच्चस्तरीय शोधकार्य की सुविधा भी उपलब्ध कराई हैं निश्चय ही यह सस्था सविता देवी की संगीत जगत को अमूल्य भेट है। जो निरन्तर युवा पीढी का मार्ग दर्शन कर रही है।

वास्तव में हमारा संगीत ऐसी ही महान विभूतियों के माध्यम से निरन्तर विकसित एवं समृद्धशाली होता रहा हैं हम ऐसे संगीतज्ञों के प्रति सदैव श्रद्धान्वत रहेंगे।

पूर्णिमा चौधरी

संगीत कला और संस्कृति की आदि नगरी 'वाराणसी' पूरे विश्व में अपनी इन्ही खूबियों के कारण वर्षो से आदरणीय है। अनेक संगीतज्ञ इस शहर की नदी के किनारे मंदिरों में तथा गलियों में रियाज कर के आज विश्व के महानतम् संगीतज्ञ बन चुके हैं। आज भी भविष्य के अनेक महान संगीतज्ञ उन्ही स्थलो पर साधनारत हैं उपशास्त्रीय संगीत अर्थात् ठुमरी दादरा टप्पा आदि तो वाराणसी के कण कण में समहित हें हया की ठुमरी पूर्वी अंग की कहलाती हैं इसी पूर्वी अंग के उपशास्त्रीय गायन की आज की सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती पूर्णिमा चौधरी भी संगीत जगत को वाराणसी द्वारा ही प्रदत्त अनमोल रत्न हैं ।

कोलकाता के कुलीन बंगाली परिवार की कन्या पूर्णिमा में बचपन से ही संगीत के प्रति स्वाभाविक रूचि को देशकर अभिभावकों ने आपको पूर्ण प्रोत्साहन दिया जिसके फलस्वरूप जब तक आप वहाँ रही तब तक देश के सुप्रसिद्ध गायक श्री ए.टी.कानन से संगीत शिक्षा प्राप्त करती रही। विवाहोपरान्त काशी आने पर पतिग्रह से भी आपको भरपूर सहयोग एवं प्रोत्साहन मिला जिसके फलस्वरूप नगर के वयोवृद्ध पिद्वान सगीत शिक्षक एवं लोकप्रिय गायक श्रीह महादेव प्रसाद मिश्र से बनारस शैली की ठुमरी,दादरा, होली कजरी चैती आदि सीखने का सौभाग्य मिला। अपनी मिन्ष्ठा लगन एवं दैनिक अभ्यास से पं० महादेव मिश्र की गायन शैली को आत्मसात् करती हुई आप क्रमशः प्रगति पथा पर अग्रसरित होती गई ओर नगर की लोक प्रिय तथा चर्चित होती गई। देश की उपलब्ध प्रतिष्ठित ग्रायिका श्रीमती गिरिजा देवी की प्रभावो त्पादक गायनशैली एवं व्यक्तित्व से आप अत्यन्त प्रभावित हुंई और अपने पूज्य गुरू पं० महादेव मिश्र की सहर्ष स्वीकृति पाकर आपने श्रीमती गिरिजादेवी का शियत्व भी ग्रहण किया।

श्रेष्ठ शिक्षा एवं सतत् अभ्यास के द्वारा आज पूर्णिमा जी संगीत जगत में अपना सराहनीय तथा प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर चुकी है। सार्वजनिक मंचों के अतिरिक्त आकाशवाणी से भी अनेक वर्षों से आपके कार्यक्रम प्रसारित होते आ रहे। आकाशवाणी की मंगलवासरीय संगीत सभा में सफल गान प्रस्तुति से शीघ्र ही आपको आकाशवाणी दूरदर्शन की प्रथम श्रेणी की कलाकार होने का गौरव मिला तथा दिल्ली मुम्बई,कोलकाता, इन्दौर, भोपाल, पटना, लखनऊ, इलाहाबाद ग्वालियार, जबलपुर, गोरखपुर, वाराणसी आदि नगरों के आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रो से आपके कार्यक्रम प्रसारित होते रहते है।

सुर सिंगार संसद मुम्बई, सदारंग संगीत सम्मेलन कोलकाता संगीत नाटक अकादमी दिल्ली उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ , लखनऊ फेस्टिवल, तानसेन संगीत समारोह.ग्वालियर, आई. टी.सी. संगीत समारोह.वाराणसी बादरी केदार उत्सव, गंगा महोत्सव, श्रुति मंडल संगीत सभा जयपुर पं० कुमार गंधर्व जन्मदिवस के उपलक्ष्य में देवास में आयोजित संगीत सभा, 'सप्तक' सांगीतिक उत्सव अहमदाबाद, नवरंग संगीत समारोह, उत्तर मंद्र संगीत सर्किट स्वामी,हरिदास, संगीत सम्मेलन, नेशनल सेटर आफ परफामिग आट्र्स (N.C.P.A.) मुम्बई, आदि देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोहो तथा विदेशों में भी कैलीफोर्निया के विश्व विद्यालय में Indian Council for cultural Relation(I.C.C.R) द्वारा सह प्रायोजित अर्न्तराष्ट्रीय कला और संस्कृति समारोह,भारतीय विद्याभवन लंदन– ऑक्यफोर्ड एवं सुसेक्स विश्वविद्यालयों (U.K.) वृन्दावन अकादमी हॉगकॉग आदि में भी अपने कुशल गायन से श्रोताओ को तृप्त किया और हिन्दुस्तानी संगीत का प्रभाव बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

आपके कार्यक्रम बी बी.सी. द्वारा भी प्रसारित किये गये हैं तथा

एन.एफ.डी.सी. द्वारा प्रायोजित उ० बिस्मिल्ला खाँ पर बनी फिलो 'मीटिंग ए माइल स्टोन' में भी आपने अपने सुरीले क० द्वारा लोगें से सराहना प्राप्त की है।

आपके गायन में अपने गुरू पं० महादेव मिश्र के समान ही खूबसूरत लयकारी प्रलक्षित होती है। उपशास्त्रीय संगीत के माध्यम से हृदय की कोमल भावनाओं उसकी पूर्ण नजाकत से प्रस्तुत करने में भी आप पूर्ण दक्ष हैं जिससे आप श्रोताओं की प्रिय तथा प्रशंसनीय कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं आके सुमधुर गायन की देश के प्रमुख अखबारो में प्रशंसा की गई है जिनमें से कुछ का उल्लेख मैं यहाँ आपकी गायन कुशलता एवं लोकप्रियता के प्रमाण स्वरूप कर रही हूँ।

H"Purnima Chaudhary's Thumri and Dadra were very well rendered,. She has attained a cansiderable maturity in this mode of Hindustani music and has bright future."

The Hindustan Times New Delhi.

"Purnima enthrals auidience . "

Pioneer Varanasi

"Purnima Chaudharis Thumari and Dadra in Gara held the auidence spell bound by her near fortnight and melodious singing.

The Hindu - N ew Delhi.

" An artist Par excellence Thumri, Chaity and horiwere sung soulfully"

The States man Calcutta.

Purnima Chaudhary of Banaras rendered a number of light classical songs revelaing her Guru Mahadev Prasad's Gayeki . her tuneful voice was perfectly suited to display her flair for singing Khamaj Thumari , Hori and Dadra in Kafi and Mishra Desh "

The Statesman Calcutta.

"ठुमरी में विरह की पूरी पीडा उभरकर सामने आई । दादरा में वर्षा की पूरी रंगत औरनायिका की संवेदना ने प्रवाहित किया । कजरी को भी बाखूबी प्रस्तुत कर वर्षा की पावस संध्या में रस घोला । दैनिक जागरण वाराणसी "श्रीमती पूर्णिमा चौधरी ने अपने गायन से श्रोताओं का मन मोह लिया। पूर्णिमा चौधरी ने नए अंदाज से ठुमरी प्रस्तुत करके श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

नवभारत, रामपुर. (म० प्र०)

पूर्णिमा चौधरी ने अपनी सुमधुर आवाज से शास्त्रीय गायन आरम्भ किया........ आपने बनारसी शैली में उपशास्त्रीय संगीत प्रस्तुत कर श्रोताओं की वाहवाही लूटी आपकी प्रस्तुति में चैती उल्लेखनीय रही।"

नवभारत इन्दौर

"प्रकृति की गोद में बसे इस बेहट की शन्तिपूर्ण वातावरण में पूर्णिमा चौधरी की सुमधुर आवाज तैरती रही और श्रोतागण उनके गायन का आनन्द लेते रहें

– (तानसेन महारोह) दैनिक भास्कर

'माकर नाम फ्रांस की कम्पनी ने पूर्णिमा जी के उपशास्त्रीय गायन की एक सी.डी.पेरिस में ' द लिरिकल ट्रेडिशन आफ ठुमरी ' नाम से प्रकाशित की है कुछ समय पूर्व कोलकता की कॉन कार्डस कम्पनी द्वारा एक कैसेट मेलोडियस ऑफ बनारस अरज मोरी मान जो कि ठुमरी दादरा, चैती , कजटी और टप्पा पर आधरित है निकलाा गया है इनके अतिरिक्त भी आपके उत्कृष्ठ गायन क तीन कैसेट बाजार में उपलब्ध है जो कि संगीत श्रोताओं एवं साधकों के लिये पूर्णिमा जी की स्थायी एवं बहुमूल्य देन हैं।

अत्यन्त सहज सरल विनम्र,व्यवहारकुशल, हॅसमुख, मिलनसार, गुरूभक्त, अतिशयप्रेमी , कुशल गृहिणी एवं लोकप्रिय गायिका श्रीमती पूर्णिमा चौधरी का संगीत मय भविष्य अत्यन्त उज्जवल है।

वर्तमान समय में पश्चिम बगाल में रह रही पूर्णिमा चौधरी के शिष्यत्व में भविष्य के कई श्रेष्ठ कलाकार सघन साधनारत हैं । अत्यन्त सहज सरल विनम्र व्यवहार कुशल गुरूभक्त, सच्ची संगीत साधिका एवं लोकप्रिय गायिका श्रीमती पूर्णिमा चौधरी अपनी साधना द्वारा हिन्दुस्तानी संगीत को समृद्धशाली तथा देश विदेश में लोक प्रिय बनाने में संलग्न है।

श्रीमती शान्ती हीरानन्द

उपशास्त्रीय संगीत में श्रीमती शान्ती हीरानन्द का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है । सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका बेगम अख्तर की सुयोग्य शिष्या श्रीमती शान्ती हीरानन्द अपनी गुरु की गायकी की सच्ची उत्तराधिकारी हैं । स्वयं स्व0 बेगम अख्तर ने वदोदरा के एक संगीत सम्मेलन में अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले कहा था – 'यदि आप मेरी मृत्यु क बाद संगीत सुनना चाहते हैं तो शान्ती के गायन से सुनियेगा ।' श्रेष्ठ गुरु की सुयोग्य शिष्या ने अपनी साधना से अपने कंठ में गुरु की गायकी को कुछ इस तरह आत्मसात् किया कि स्वर लगाते ही लोग जान जाते हैं कि यह बेगम अख्तर की सच्ची शिष्या हैं ।

शान्ती हीरानन्द का जन्म सन् 1920 में लखनऊ में हुआ । बचपन से ही इनकी रुचि संगीत में हो गई थी अतः इन्हें लखनऊ के संगीत विद्यालय में भेज दिया गया किन्तु पढ़ाई में व्यवधान न हो, इस हेतु शीघ्र ही वहां जाना रोक दिया गया । जब वह दस वर्ष की थीं तब उनके माता–पिता लाहौरा में जा बसे जहां उन्होंने एक अंधी महिला से संगीत सीखना प्रारम्भ किया । उन महिला के साथ शान्ती जी ने अनेक सांगीतिक जलसों में भाग लिया जिससे उनकी विधिवत् संगीत सीखने की ललक जन्म लेने लगी और संगीतानुराग बढ़ता ही गया । सन् 1947 में शान्ती जी का पहला आकाशवाणी कार्यक्रम लाहौर केन्द्र से ही प्रसारित हुआ ।

देश–विभाजन के बाद शान्ती जी सपरिवार पुनः लखनऊ आ गईं और शास्त्रीय तथा सुगम संगीत के छोटे–छोटे कार्यक्रम देना शुरू किया । इसी समय आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों, इलाहाबाद, वाराणसी, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, धारवार, हैदराबाद, इम्फाल, जम्मू, जालन्धर, नागपुर, पटना, पुणें, राजकोट, रांची, श्रीनगर आदि से भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये । युवा शान्ती को 'मरफी कॉन्टेस्ट में 'ट्रॉफी' प्राप्त हुई और उसी आधार पर उन्हें फिल्म में भी अवसर मिला ।

सन् 1952 ई0 में शान्ती हीरानन्द को महान उपशास्त्रीय गायिका बेगम अख्तर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । जिनसे शान्ती इतनी प्रभावित हुई कि उनकी संगीत की शैली के साथ-साथ व्यक्तित्व में भी एकदम से परिवर्तन आ गया और उन्होंने महसूस किया कि ईश्वर ने उन्हे बेगम अख्तर जी से शिक्षा प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया है । बेगम अख्तर ने भी उन पर निःसंकोच अपने स्नेह की वर्षा प्रारम्भ कर दी और हर जगह अपने साथ शान्ती को ले जाने लगीं ।

शान्ती जी ने अपनी गुरु के साथ आकाशवाणी के अनेक संगीत सम्मेलनों में भाग लिया । 1961 में वह बेगम साहिबा के विज्ञान भवन, नई दिल्ली के राष्ट्रीय कार्यक्रम में दिया । अमृतसर दूरदर्शन के उद्घाटन के अवसर पर भी अपनी गुरु का गायन में साथ दिया था । 30 अक्टूबर सन् 1974 में गुरु की की मृत्यु के बाद से शान्ती जी प्रतिवर्ष अमीनाबाद में अपनी गुरु की स्मृति में कार्यक्रम करती हैं ।

शान्ती जी ने आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के अनेक केन्द्रों यथा – मुम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, बनारस, इलाहाबाद, आदि से कार्यक्रम प्रसारित करने के अलावा देश-विदेश के अनेक सांगीतिक जलसों में अपनी गुरु स्व0 बेगम अख्तर की गायकी को विशुद्ध रूप से प्रस्तुत कर श्रोताओं को उपशास्त्रीय संगीत रस में सराबोर किया है । ठुमरी, दादरा एवं गजल की इन कुशल गायिका के गायन का प्रसारण आकाशवाणी द्वारा पश्चिमी एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं अफ्रीका देशों मे भी नियमित रूप से किया जाता है । वह आकाशवाणी के स्वर-परीक्षण समिति की सदस्या भी हैं । 'इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय – खैरागढ' में वह सन् 1982 से 'परीक्षक' हैं तथ्का 'श्री राम भारतीय कलाकेन्द्र, नई दिल्ली' में उपशास्त्रीय संगीत के 'प्रोफेसर' पद पर कार्य करते हुए भी संगीत जगत को अपनी सेवायें अर्पित की हैं । सन् 1981 में भारत सरकार की ओर से सांस्कृतिक सम्बन्ध हेतु श्रीमती शान्ती हीरानन्द जी को पाकिस्तान में एक सांगीतिक यात्रा में भेजा

गया । इस यात्रा में शान्ती जी ने लाहौर, रावलपिण्डी, इस्लामाबाद और करांची में अपने गायन से श्रोताओं को आकण्ठ तृप्त किया । इस कार्यक्रम के नजबानी पाकिस्तान द्वारा दो देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने हेतु की गई थी ।

शान्ती जी ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्म सिद्धार्थ में **Back ground humming** में राग पीलू में ठुमरी भी गायी । इनके अतिरिक्त आई0टी0सी0 संगीत सम्मेलन दिल्ली में तथा 'याद–ए–बेगम अख्तर' और 'जमात–ए–बेगम अख्तर' – (जो कि उनकी गुरु की स्मृति में आयोजित किये गये थे) में भी अपनी कला की सराहनीय प्रस्तुति की । शान्ती जी के गायन के कुछ 'कैसेट्स' तथा रिकार्ड्स भी निकाले गये हैं ।

अपनी गुरु की परम्परा का कुशल निर्वहन करते हुए शान्ती हीरानन्द जी ने आजीवन संगीत जगत को समर्पित रही हैं । उपशास्त्रीय गायन की श्रेष्ठ गायिका श्रीमती शान्ती हीरानन्द जी लम्बे अरसे तक अपने भाव प्रवण गायन से हम सभी को सराबोर करती रहें हमारी ईश्वर से यही कामना है ।

पारूल बनर्जी

परम्पराओं के निर्वहन की दो शैली स्पष्ट होती हें, एक, परम्परा का ज्यों का त्यों पालन करते हुए आने वाली पीढ़ियों तक सम्वहन करना और दूसरा परम्परा में समयानुसार नये प्रयोग करते हुए और अपनी मानसिकता के अनुरूप ढालते हुए, पालन करना । संगीत के क्षेत्र म भी गायन की परम्परा का प्राचीनकाल से लेकर आज तक इन्हीं दोनो शैलियों म सम्वहन होता आया है । प्रथम शैली परम्परा के प्राचीन रूप को सुरक्षित रखती है तो द्वितीय शैली उसे नये आयाम देकर समय के अनुरूप ढालते हुए, उसमें नवीनता का संचार करती है और उसका आकर्षण बनाए रखती है । दोनों ही शैलियों का अत्यधिक महत्व है । हमारे संगीत जगत में दोनों ही शैलियों द्वारा संगीत की परम्परा योगदान देते आए हैं । महिलाएँ भी पीछे नहीं है और फिर जब बात उपशास्त्रीय संगीत की चलती हो तो वह तो महिला संगीतज्ञों के बाहुल्य का ही क्षेत्र है । इसी प्रकार उपशास्त्रीय संगीत की परम्परा का दूसरी शैली से पालन करने वाली एक विदुषी महिला कलाकार है, श्रीमती पारूल बनर्जी । 1940 में हावड़ा में जन्मी, आज की प्रसिद्ध उपशास्त्रीय गायिका श्रीमती पारूल बनर्जी ने ऑख मूँद कर अपने गुरूजनों का अनुसरण ना करते हुए अपनी व्यक्तिगत सोच और हृदय की कल्पना को अपने गायन में समाहित किया है । प्रतिभाशाली पारूल बनर्जी के नैसर्गिक गुण को उभारने संवारने में सर्वप्रथम योगदान गुरू श्री के0 आर0 बनर्जी ने दस वर्षों तक दिया । उनके पश्चात क्रमशः पं0 चिनमय लाहरी ने पॉच वर्ष, पं0 वी0 एन0 पटवर्धन और पं0 एन0 वी0 पटवर्धन ने पॉच वर्ष दिया । अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान उपशास्त्रीय गायिका विदुषी नैना देवी जी से भी दस वर्षों तक गहन तालीम प्राप्त करने का सुअवसर पारूल जी को प्राप्त हुआ है । इन्होंने गन्धर्व महाविद्यालय से सगीत विशारद की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है ।

अपनी स्वतन्त्र एवं आधुनिक विचारधारा को स्पष्ट करते हुए उन्होने मुझे बताया कि वह ठुमरी या दादरा गायकी को 'उपशास्त्रीय सगीत' कहनें

के पक्ष में नहीं हैं क्योकि उसे गाना ख्याल, ध्रुपद/धमार गानें की अपेक्षा कठिन है, कारण है कि ठुमरी/दादरा श्रृंगार रस और अभिनय पर आधारित होती है और इन भवों को उसकी नाजुकता के अनुसार गायन के माध्यम से प्रगट करना मुश्किल कार्य है । श्रीमती बनर्जी पूर्वी अंग की उपशास्त्रीय गायकी में विशेष दक्ष हैं तथापि वह ख्याल गायकी में भी निपुण हैं । उपशास्त्रीय ठुमरी एवं दादरा के विषय में अपनी धार्मिक भावना को प्रगट करते हुए वह बताती हैं कि ठुमरी/दादरा श्रीकृष्ण एवं राधा अथवा नायक–नायिका की पवित्र प्रेमलीला पर आधारित होतें है । यह प्रेमलीला वैष्णव विचार धारा पर आधारित होती हैं । जिसमें किसी भी प्रकार का छिछलापन नहीं है । गुलाम भारत के राजदरबारों एवं नृत्यशालाओं में ठुमरी एवं दादरा में भक्तिभावना से दूर जिस सस्ते श्रृंगार रस का समावेश किया गया था उसे वह अपनी गायन शैली से निकाल चुकी हैं । वह अपनी संपूर्ण गायकी मे भक्तिभाव की प्रधानता ही रखती हैं । और यही शिक्षा वह अपने शिष्य –शिष्याओं को भी दे रहीं हैं ।

श्रीमती पारूलबनर्जी ने देश लगभग सभी शहरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है और श्रोताओं की सराहना प्राप्त की है यथा–जयपुर, अजमेर, अहमदाबाद, इलाहाबाद, कोलकाता, भोपाल, दिल्ली आदि ।

अपनी गायन शैली को अगली पीढी तक विस्तारित करने के लिये पारूल जी ने कई शिष्य–शिष्याओं को गायन में दक्ष किया है और कर भी रहीं हैं जिनमें से प्रमुख हैं – श्रीमती पल्लिका बनर्जी, श्रीमती प्रियदर्शिनी, अनिता विश्वास, चन्द्रा मित्रा, सुब्रतो बनर्जी, कोया भट्टाचार्या ।

श्रीमती पारूल बनर्जी नें अनेक गीत एवं भजन की धुनें बनाई हैं । और चूँकि वह एक शिक्षिका हैं अतः विद्यालय हेतु उन्होनें अनेक पोलियो गीत आदि लिखें और उनकी धुनें भी तैयार की हैं जिनके द्वारा कैसेट्स भी निकाले कए हैं और वे गीत अनेक सरकारी विद्यालयों गाये–सिखाये जाते हैं । यह उनका अन्य संगीतज्ञों से अलग हट कर समाज को सांगीतिक योगदान है ।

अपनें जीवन की अविस्मरणीय घटना के बारे में बताते हुऐ वह आज भी उतनी ही रोमांचित होकर कहती हैं कि जब वह अपने विद्यार्थी जीवन में भी तो किसी प्रतियोगिता में उन्होनें भाग लिया और स्थान प्राप्त किया था । उस प्रतियोगिता का पुरूस्कार देने हेतु महान संगीतज्ञ पं0 डी0 वी0 पलुस्कर जी पधारे थें उन्होनें पारूल जी का गायन सुनने के बाद उनके सिर पर हॉथ रखकर आर्शिवाद देते हुए कहा कि हमेशा अपने गुरू की आज्ञाओं का पालन करो, उनके पद चिन्हों पर चलो, उनका अनुसरण करों और जो कुछ भी करना हो पहले गुझ से आज्ञा लो या पूँछो क्योंकि वह ही तुम्हारा सच्चा मार्गदर्शन करेंगे ।

उन महान संगीतज्ञ के उक्त कथान का पालन करते हुए श्रीमती पारूल बनर्जी ने आज संगीत जगत में अपना प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है । संगीत समाज को अपनी विभिन्न अमूल्य सेवाएँ भी अर्पित की हैं । जिनकी वजह से हम सभी सदैव उनके ऋणी रहेंगे ।

अध्याय – पंचम

लेखन के क्षेत्र में योगदान प्रदान करने वाली महिला संगीतज्ञ

लेखन के क्षेत्र में योगदान प्रदान करने वाली महिला संगीतज्ञ

प्रभाअत्रे

'जहाँ चाह वहाँ राह' इस कहावत को शत्–प्रतिशत चरितार्थ करती हुई आज की आदरणीय सुप्रसिद्ध एवं वरिष्ठ गायिका एव लेखिका डॉ0 प्रभा अत्रे, वर्तमान समय के संगीत –साधकों की आदर्श है।आपका जन्म ना तो किसी संगीतज्ञ परिवार में हुआ और ना ही आपके अभिभावक आपको संगीतज्ञ बनाना चाहते थे, बल्कि वे तो आपको संगीतज्ञ परिवार में हुआ और ना ही आपके अभिभावक आपको संगीतज्ञ बनाना चाहते थे, बल्कि वे तो आपको एक वकील के रूप में देखना चाहते थे। यही कारण था कि आपने विज्ञान और कानून विषय से ग्रेजुएट किया। यह तो मात्र संयोग था माता की अस्वस्थता के इलाज के लिये वैद्यों ने औषध के रूप में उन्हें गाना बताया और वहीं से प्रभा जी के हृदय में सगीत–प्रेम का अंकुर फूटा। माता ने तो थोड़ा गाना सीखा और फिर गाना सीखना बंद भी कर दिया किन्तु इसी सूत्र में प्रभा अन्ने ने संगीत अपनाया और संगीत सीखना प्रारम्भ किया।

तेरह वर्ष की उम्र में आपकी संगीत शिक्षा श्री विजय करदीकर से प्रारम्भ हुइ जो पाँच वर्षो तक चली। इसके पश्चात् अग्रिम शिक्षा किराना घराने के विख्यात गायक स्व. सुरेश बाबू माने के शिष्यत्व में तीन वर्षो तक विधिवत चली। सुरशबाबू पूर्णता के जबर जस्त पक्षपाती थे। उन्होने पूरे एक वर्ष तक आपको 'यनन' राग की साधना करवाई। 'एकै साधै सब सधै............................ लोकोत्ति के अनुसार ही एक वर्ष तक राग यमन की सधन साधना तथा अभ्यास से उसके बाद अन्य रागो परसहजता से अधिकार प्राप्त कर लिया। सुरेश बाबू के निधन के बाद, केन्द्रीय सरकार द्वारा संगीत साधना हेतु छात्रवृत्ति प्राप्त होन पर आपको किराना घटाने की वरिष्ठ गायिका पद्‌भ–भूषण हीराबाई बडौदकर से संगीत शिक्षा ग्रहण करनें का सुअवसर प्राप्त हुआ। गुरू शिष्य पद्धति में गायन की शिक्षा के

साथ ही साथ आपने विद्यालयी शिक्षा को भी महत्व दिया। गन्धर्व महाविद्यालय मंडल से 'संगीत–समिति से 'संगीत –प्रवीण' की परीक्षाए उत्कृष्ट अंको में उत्तीर्ण किया और पत्राचार पाठ्यक्रम से ट्रिनटी कॉलेज ऑफ म्यूजिक, लन्दन से पश्चिमी संगीत थियरी ग्रेड 4 किया तथा संगीत विषय में शोध करके पी.एच.डी. की डिग्री भी प्राप्त की।

गायन के साथ–साथ आपकी संगीत के शास्त्र पक्ष में भी गहन रूचि हें आपका मानना है कि संगीत के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने से गायन में सृजन क्षमता बढती है। शैक्षणिक पृष्ठ भूमि के कारण हम विषय को व्यापक रूप से देख व समझ सकते है। प्रभा जी के विभिन्न संगीतिक लेख समय समय पर पत्र पत्रिकाओं में हिन्दी मराठी तथा अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित होते रहें है। 'स्वरमयी ' एवं 'स्वस्श्री' नाम से दो उत्कृष्ट पुस्तकों का लेखन कर प्रभी जी ने संगीत जगत को अपनी अमूल्य भेट प्रदान की है। 'स्वरमयी ' पुस्तक की उत्कृष्टा के लिये इस पुस्तक को महाराष्ट्र की राज्य सरकार द्वारा सन् 1999 में अवार्ड द्वारा सम्मानित भी किया गया है। संगीत के क्रियात्मक क्षेत्र को समृद्ध करते हुए आपने दो सौ से भी अधिक बंदिशों की रचना करके उत्तर भारतीय संगीत में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है। आपके अनेकं केसेट्स विभिन्न संगीत कम्पनियों द्वारा प्रकाशित हुए है जो संगीत सुधियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुए है। एच.एम.वी. द्वारा प्रकाशित आपके गायन का कैसेट जिसमें मरूबिहाग, कलावती, में ख्याल तथा मिश्र खमाज में ठुमरी का संकलन है , की संगीत प्रेमियों ने अत्यधिक सराहना की है।

आपने आकाशवाणी में सहायक प्रोडयूसर के पद पर कार्य किया। इस पद पर आप कपोजर का काम करती थी। जहॉ आपने नई–नई धुनों की रचना करतनी सीखी । आपके ही शब्दों में " मुझे वह कार्य बहुत पसंद आया। वहॉ लोक संगीत, फिल्म संगीत तथा कर्नाटक सगीत की जिम्मेदारी मुझे दी गई थी। वहॉ मुझे पश्चिमी संगीत भी सुनने का अवसर मिला और ध्वनि सस्कृति को समझने नए कार्यक्रम तैयार करने तथा रिकार्डिग और एडिटिग की तकनीक समझने का भी

अवसर मिला। फिर भी उन्नत जीवन की बात तो सभी सोचते है, इसलिये मैने स्वतन्त्र गायिका बनना पसन्द किया और वह नौकरी छोड दी।"

प्रभा अत्रे ने किराना घराने की गायकी की तालीम ग्रहण कि किन्तु आपको स्व0 उ0 अमीर खॉ के साथ ही स्व0 उ0 बडे गुलाम अली खॉ जी की गायकी ने भी अत्यधिक प्रभावित किया और उनसे प्रेरणा ग्रहण कर आपने उन्ही के अनुरूप अपनी गायकी में सरगम तथा तानें का विकास किय। इस प्रकार मुख्य रूप से किराना घराने की गायिका होते हुए भी आपने अन्य गायिकायो के गुणों को आत्मसात् करके अपनी व्यक्तिगत गायकी को समृद्ध किया। किराना घराने की गायकी के विषय अपने विचार प्रकट करते हुए आपने बताया कि " सामान्य रसिक के लिये किराना की विशेषता है स्वर माधुर्य और भावनाओं का उद्बोधन आवाज लगाने का ढंग सीधे अन्तर को स्पर्श करता है और आप अपनी देह में एक प्रकार की सिहरन अनुभव करने लगते है। किराना संगीत का आनन्द उठाने के लिये शास्त्र ज्ञान आवश्यक नहीं। यह अर्न्तमुखी हैं इसमें राग का धीर भाव से उमीलन होता है। इसके स्वर की सहज शांत गति ताल अर्न्तआत्मा को प्रभावित करते है। इइसमें प्रत्येक स्वर के साथ भावना मूर्त होती है। माधुर्य के साथ–साथ इसमें निरूद्विग्नता और निर्मलता है।"

आपकी गायनशैली मुख्य रूप से किराना घटानें की ही है किन्तु आप अन्य प्रकार के संगीत चिन्तन से भी प्रभावित हैं यही कारण है कि उ0 अमीर खॉ तथा उ0 बडे गुलाम अली खॉ की गायकी से आर्कषित होकर आपने अपनी सरगम तथा तानों का विकास उसी प्रकार किया । अपनी गायकी के विषय में समझते हुये आपने बताया कि मेरी शैली का आधार किराना है किन्तु यह आधुनिक संदर्भ से पुष्पित हैं। हर प्रकार के संगीत से मेरा चिन्तन समृद्ध हुआ है। इसके अलावा समृद्ध शैक्षणिक पृष्ठभूमि, प्रशिक्षण एवं अनुभव के कारण मैं कोई भी बात परम्परा के नाम पर वैसे ही नहीं स्वीकार कर लेती। वस्तुपरकता, विश्लेषण, योग्यता और चयन क्षमता ही मेरी सृजनता में प्रतिबिम्बित होती है। भावपूर्ण ध्वनि सौन्दर्य, कण एव गमक का प्रयोग, परम्परा व तर्क के आधार पर राग का विस्तार राग रूप के

अनुसार असामान्य फिर भी सरल व जटिल स्वर संगतियों पर बल, कर्नाटक शैली (राग व सरगम) के प्रति आसक्ति आदि मुख्य बाते है।'

प्रभा जी ख्याल, तराना, टप्पा ठुमरी दादरा और अन्य सुगम लोकगीतो की प्रस्तुति समान दक्षता से लुभावने अंदाज में करती है। संगीत में आपकी जर्बजस्त कल्पना शक्ति आपके गायन को और भी समृद्ध एव आकर्षक और श्रोताओ को बाधने रखने वाली बनाती हे आवाज के घुमाव एवं फेक पर पूर्ण नियन्त्रण आपकी आलाप एवं तानों में सौन्दर्यवर्धन करता है और इस प्रकार आपकी गायकी श्रोताओ पर अपना अलग ही अमिर प्रभाव डालती है।

प्रभा जी अपनी गायन साधना के लिये अनेक छात्रावृत्ति तथा अवार्ड समय समय पर प्रदान किये जाते हरे है। 1955 मे केन्द्रीय सरकार से छात्रवृत्ति मिली। 1975 मे जगद्गुरू श्री शंकराचार्य ने आपको 'गान प्रभा' तथा सन् 1975 में ही आचार्य क्षेत्र अवार्ड प्रदान किये गये। इसी वर्ष 11 अक्टूबर को केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा भी आपकां पुरस्कार एवं फेलोशिप हेतु चुना गया। सनृ 1983 में कगलगिरी विश्वविद्यालय अमेरिका में आप विजिटिंग प्रोफेसर भी रही है।

आकाशवाणी की टॉप ग्रेड कलाकार होने के साथ ही सन् 1955 से लेकर आज तक में आपने देश विदेश में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये है जिसमें आपके उत्कृष्ट गायन एवं कहरी सागीतिक सोच समझ की भूरि भूरि प्रशंसा की गई है।

वर्तमान समय में एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की प्रोफेसर एव अध्यक्षा पद से अपनी साानना एव ज्ञान को संगीत जगत की युवा पीढी को हस्तातरित्र कर रही है और इस प्रकार सगीत के भविष्य को सुद्ढ बना रही है।

श्रीमती सुलोचना बृहस्पति

सास्कृतिक, सहित्यिक और कला की नगरी इलाहाबाद मे जन्मी आज की लब्ध प्रतिष्ठित गायिका श्रीमती सुलोचना बृहस्पति उन गिने चुने भाग्यशाली कलाकारों में से है जिन्हे ईश्वरीय अर्शिवाद के रूप मे प्राप्त सुरीले कंठ प्राप्त होने के साथ सुनियोजित बुद्धि लगन, श्रेष्ठ गुरू और सगीतिक वातावरण भी मिला।

गायन मात्र से ही नही अपने तथ्यपरक लेखन के माध्यम से श्री श्रीमती सुलोचना बृहस्पति जी ने संगीत समाज को समृद्ध शाली बनानें में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। उनकी लिखी पुस्तक "खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार" को 1977 में सवोत्तम पुस्तक अवार्ड से नवाजा जा चुका हैं उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी अवार्ड 1984 और संगीत अकादमी अवार्ड 1994 के द्वारा भी सम्मानित किया गया है।

'राग–रहस्य' नामक श्रेष्ठ पुस्तक का सृजन भी सुलोचना जी द्वारा ही हुआ हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय से परास्नातक की डिग्री प्राप्त सुलोचना जी ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद के सुप्रतिष्ठित संगीतज्ञ स्व0 प0 भोलानाथ भट्ट जी से और रामपुर के उ0 मुश्ताक हुसैन खॅ जी से ग्रहण की महान संगीताचार्य और संगीतज्ञ स्वं डॉ0 आचार्य के.सी.डी बृहस्पति से विवाह के पश्चात उनके सागीतिक जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। आचार्य जी ने उन्हें सागीतिक के दृष्टि प्रदान की जिससे उन्होंने शास्त्रीयता की नीव पर राग को उसके पूर्ण सजीवीकरण और सौदर्य के साथ उभारकार श्रोद्धाओं के समझ प्रस्तुतिकरण का मार्ग दिखा और उनकी गायकी में आश्चर्य जनक आकर्षण आया। और चूकि उनकी गायकी की आधार शास्त्रीयता पर मजबूती से टिका हुआ था

अतः उनका गायन दिन इनी रात चॉगुनी की गति से प्रगतिशील होता गया। यह सब कुछ आचार्य बृहस्पति एवं सुलोचना बृहस्पति के राग स्वरताल की गहन शास्त्रीय ओर प्रयोगात्क ज्ञान के कारण ही फलित हुआ।

योग्य होने के साथ ही सुलोचना जी ने लेखन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना करके श्रीमती सुलोचना बृहस्पति को देश विदेश के लगभग सभी सम्मानित संगीत समारोहो मे आमन्त्रित किया गया जहॉ उन्होने अपने गायन से लोगो की हार्दिक प्रशंसा प्राप्त की।

आकाशवाणी की अखिल भारतीय संगीत समारोहे के माध्यम से लगभग समूर्ण देश में कार्यक्रम दे चुकी श्रीमती बृहस्पति जी को कार्यक्रम देने हेतु ससम्मान विदेशों के भी यथा रशिया, हंगरी, मगालिया, नेपाल, पश्चिम जर्मनी , यू. के., फ्रांस, हालैण्ड, इटली ओर यूरोपियन देशो मे आमन्त्रित किया उनके गायन की अत्यधिक सराहना भी की गई।

आकाशवाणी और दूरदर्शन की नियमित कलाकार श्रीमती बृहस्पति पिछले कुछ वर्षो से पूर्व और पश्चिम के सगीत को मिश्रत कर (फ्यूजन) नये संगीत को रचना में व्यक्त हैं प्रसिद्ध फेन्च ग्रुफ एन्सेम्बल ग्रौडीवा के साथ मिलकर श्रीमती सुलोचना बृहस्पति ने पवित्र ईस्टर सप्ताह में गाए जाने वाले गीतों को राग दरबारी के सम्मिलित किया और इस कार्यक्रम का काम्पॅक्ट डिस्क French External Affairs Ministry (AFAA) द्वारा निकाले गए है। उसके अतिरिक्त उनका यह संगीत 3 सी. डी. में भी उपलब्ध है।

सुलोचना जी ने 1993 में India International Masic Festival] जो की संगीत नाटक अकादमी और Indian Council for cultural Relations के द्वारा सहप्रायोजित किया गया था मे भी अपनी कला का सफल प्रदर्शन कर चुकी है।

सुलोचना जी अपनी सतत् संगीत साधना के लिये समय समय पर अनेक अवार्ड और सम्मानो द्वारा सम्मानित की जाती रही है। जिनमे से प्रमुख है।– अखिल भारतीय सगीत प्रतियोगिता 1955 मे प्रथम स्थाना प्राप्त कर राष्ट्रपति के द्वारा स्वर्ण पदक, अवार्ड, मरफी मेट्रो अवार्ड मुम्बई आदि।

आज श्रीमती सुलोचना बृहस्पति जी ना केवल एकमात्र महिला कलाकार जो कि रामपुर – सदारग परम्परा का प्रतिनिधत्व कर रही है के रूप आदरणीय है अपितु देश के प्रतिष्ठित सगीतज्ञो में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली कलाकार के रूप में सम्मानित हैं।

विभिन्न माध्यमों द्वारा संगीत को समृद्धशाली बनाने में श्रीमती सुलोचना बृहस्पति जी के अमूल्य योगदानो के लिये समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

डॉ0 प्रेमलता शर्मा

आप उत्तर भारतीय संगीत पद्धति सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनेक विशिष्टताओं के कारण लोकप्रिय हो रही है । इस संगीत पद्धति को जन–जन के बीच प्रचारित करने में अनेक संगीतज्ञों का वर्षों से कला प्रदर्शन के माध्यम से, प्रदर्शन–व्याख्यान द्वारा, इस पद्धति से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डालती पुस्तकों के लेखन आदि के द्वारा सतत् प्रयत्नरत है । हिन्दुस्तानी सगीत को लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने के लिये ऐसे दृढ–सकल्पी सगीतज्ञों मे डॉ0 प्रेमलता शर्मा का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है जिन्होंने कला–प्रदर्शन के साथ ही अपनी कुशाग्र एवं तीक्ष्ण बुद्धि के द्वारा लेखन के माध्यम से भी उत्तर भारतीय सगीत के विकास में अपनी अहम् भूमिका निभायी है ।

डॉ0 प्रेमलता शर्मा, प्रोफेसर व अध्यक्षा, संगीत शास्त्र विभाग एवं संकाय प्रमुख, संगीत एवं ललित कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के पद से अपनी बहुमूल्य सेवायें सगीत जगत को समर्पित करने के बाद वर्तमान समय मे इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में 'उप–कुलपति' के महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत है । उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की भूतपूर्व अध्यक्षा डॉ0 प्रेमलता शर्मा ने संगीत के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं की कार्यसमितियों से सम्बद्ध अनेक ध्रुपद मेलों तथा सांगीतिक विचार–गोष्ठियो का आयोजन किया है तथा साथ ही देश–विदेश में आयाजित विभिन्न अवसरो पर अनेक सांगीतिक विषयों पर अपना तथ्य परख तथा ज्ञानवर्धक व्याख्यान एवं अनेक शोध–पत्र प्रस्तुत करके संगीत जिज्ञासुओं की जिज्ञासा को शान्त किया है । पाठ–संशोधन व अनुवाद के क्षेत्र में भी डॉ0 प्रेमलता शर्मा जी ने अपनी अनेक भाषाओ के ज्ञान का लाभ संगीत जगत को प्रदान करके महत्वपूर्ण संगीत सेवायें अर्पित की हैं । इतना ही नहीं नाट्य शास्त्र के आधार पर अनेक सस्कृत नाटकों के प्रस्तुतिकरण में भी सक्रिय योगदान दिया है । अपनी अनुसाधनी प्रवृत्ति के अनुरूप डॉ0 शर्मा वर्तमान समय मे 'नाट्य शास्त्र के समीक्षात्मक संस्करण' के कार्य मे संलग्न हैं ।

संगीत के क्षेत्र में अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के माध्यम से डॉ0 प्रेमलता शर्मा जो अमूल्य योगदान प्रस्तुत कर रही है उसके लिये संगीत का भविष्य सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

डॉ0 मधुबाला सक्सेना

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सगीत एव नृत्य विभाग की अध्यक्षा डॉ0 मधुबाला सक्सेना ने अपनी विलक्षण सागीतिक समझ, सुनियोजित प्रशासनिक कार्य-प्रणाली एवं कला प्रतिभा के माध्यम से उत्तर भारतीय सगीत के उत्कर्ष में अहम् भूमिका निभाते हुए सतत् कार्यशील हैं । सगीत विषय से 'सगीत अलकार' एव 'स्नातकोत्तर' की परीक्षायें उत्तीर्ण करने के पश्चात् डॉ0 सक्सेना ने सगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करके 'पी0एच0डी0' की डिग्री भी प्राप्त की है ।

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक, 'भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर' की लेखिका डॉ0 मधुबाला सक्सेना ने इस पुस्तक में भारत पर समय-समय पर होने वाले विदेशी आक्रमणो के कारण, विदेशी संस्कृतियों के प्रभाव से संगीत तथा उसके शैक्षणिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पडा, यह उसके हित में रहा या अहित में अर्थात् इन राजनैतिक परिस्थितियों से हमारे संगीत को किस प्रकार और कितनी क्षति पहुंची तथा इस बदलते परिवेश मे संगीत शिक्षा किस प्रकार हुई ? संगीत की शैक्षणिक व्यवस्था में क्या परिवर्तन हुये तथा उन परिवर्तनों के फलस्वरूप सगीत के आन्तरिक स्वरूप को क्या दिशा मिली, इन सभी प्रश्नों के साथ ही तब से लेकर आज तक की बदलती राजनैतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में हमारे देश मे संगीत शिक्षण की विधियां किस प्रकार बदलीं और वर्तमान समय मे विद्यालयी एव विश्वविद्यालयी सगीत शिक्षा का स्तर, उसकी उपादेयता एवं वांछित परिवर्तन आदि महत्वपूर्ण मुद्दो पर सविस्तार तथा सुनियोजित प्रकाश डाला है और अपने विचार प्रकट किये हैं । वास्तव में यह पुस्तक वर्तमान समय की संगीत शिक्षण प्रणाली की सुविधाओं एव कठिनाइयों पर प्रकाश डालते हुए उनमें क्या सुधार किये जायं कि वह अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो, इस महत्वपूर्ण तथ्य पर अत्यन्त उपयोगी संग्रह है क्योंकि वर्तमान संगीत शिक्षण प्रणाली पर भी संगीत का भविष्य निर्भर करता है ।

पुस्तक–लेखन के अतिरिक्त डॉ0 सक्सेना के विभिन्न सागीतिक विषयों पर प्रकाश डालते हुए अनेक लेख पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर प्रकाशित होते रहते हैं 'जनरल ऑफ संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली', 'जनरल ऑफ मद्रास म्यूजिक अकादमी, मद्रास' तथा 'जनरल ऑफ कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र' आदि पत्रिकाओं में अनेक सांगीतिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं ।

बहुआयामी माध्यमों से उत्तर भारतीय संगीत को विकसित करने में योगदान प्रदान करते हुए डॉ0 मधु बाला सक्सेना वर्तमान समय में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संगीत एवं नृत्य विभाग की अध्यक्षा पद से संगीत जगत को अपनी बहुमूल्य सेवायें प्रेषित कर रही हैं ।

डॉ0 स्वतन्त्रबाला शर्मा

शास्त्र लेखन के क्षेत्र मे इलाहाबाद की डॉ0 स्वतन्त्रबाला शर्मा का नाम अग्रणी है । इन्होने अपनी खोजी प्रवृत्ति एव तीक्ष्ण सांगीतिक समझ का उत्कृष्ट परिचय देते हुए हिन्दुस्तानी एवं पाश्चात्य संगीत के क्षेत्र में न केवल अनेक पुस्तकें लिखी है अपितु समय–समय पर देश भर में आयोजित होने वाले सागीतिक परिचर्चाओं में भी महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रभावी तथा युक्तिपरक वार्तायें प्रस्तुत की है । विलक्षण बुद्धि की धनी डॉ0 शर्मा वर्तमान समय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग की अध्यक्षा पद पर कार्यरत हैं । इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गायन विषय में स्नातकोत्तर की परीक्षा सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की तदोपरान्त 'पाश्चात्य सगीत एवं भारतीय संगीत : एक तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध करके डी0लिट0 के उपाधि ग्रहण की तथा सन् 1980 से लेकर अब तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग में लेक्चरर पद से क्रमश· प्रोन्नति होती हुई वर्तमान समय मे विभाग की अध्यक्षा पद से अपनी बहुमूल्य संगीत सेवाओं द्वारा संगीत जगत को निरन्तर समृद्ध करने में अपना योगदान प्रदान कर रही हैं ।

श्रीमती शर्मा ने विशेष रूप से लेखन के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी पुस्तके प्रस्तुत की हैं ––

1 भारतीय संगीत . एक वैज्ञानिक विश्लेषण,

2. भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण,

3. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति एव भारतीय संगीत,

4. कम्परेटिव स्टडी ऑफ द इवोल्यूशन ऑफ इण्डियन एण्ड वेस्टर्न म्यूजिक,

5. फन्डामेन्टल्स ऑफ इण्डियन म्यूजिक,

6. ऐन एप्रोच टू इण्डियन म्यूजिक,

प्रस्तुत की हैं जो देश के अनेक विश्वविद्यालयो व पाश्चात्य देशों में भी मान्य हैं ।

इस प्रकार संगीत के महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालती हुई श्रीमती शर्मा जी की उपरोक्त पुस्तकें देश–विदेश के संगीत जिज्ञासुओं को सागीतिक ज्ञान प्रदान कर रही हैं और उत्तर भारतीय संगीत का भरपूर प्रचार–प्रसार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । पुस्तक लेखन के अतिरिक्त सगीत से सम्बन्धित अनेक गूढ एवं महत्वपूर्ण विषयो का खुलासा करते हुए इनके अनेक लेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं मे समय–समय पर प्रकाशित होते रहते हैं ।

संगीत के शास्त्रीय पक्ष में सक्रिय रूप से योगदान प्रदान करते हुए श्रीमती शर्मा अपनी गायन कला साधना द्वारा भी उत्तर भारतीय सगीत की विभिन्न गायन शैलियों के प्रचार–प्रसार मे योगदान प्रदान कर रही है । पिछले लगभग 21 वर्षों से आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के माध्यम से अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के अतिरिक्त भी देश के अनेक महत्वपूर्ण सागीतिक आयोजनों मे अपनी कला–साधना का सुन्दर नमूना प्रस्तुत करके श्रोताओ की हार्दिक प्रशंसा प्राप्त की है, जिनमे से प्रमुख हैं –– महाराष्ट मंडल सागर द्वारा आयोजित शास्त्रीय संगीत संध्या, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, लखनऊ द्वारा आयोजित व्याख्यान – प्रदर्शन, 'संकल्प' द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ही उसके राष्ट्रीय अधिवेशन में, पं0 बडे रामदास स्मारक समिति, वाराणसी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय संगीत समारोह, बैसाख उत्सव, शरद मिहिर, त्रिवेणी महोत्सव, प्रयाग संगीत समिति में आयोजित 'गुलाबबाडी' तथा 'चैती समारोह', कजरी उत्सव, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद द्वारा आयोजित 'चलो मन गंगा–जमुना तीर', आकाशवाणी द्वारा आयोजित अनेक संगीत सम्मेलन जैसे – चित्रकूट, ओवरा, इफको, इलाहाबाद आदि में गायन तथा गजल समारोह, मेरठ आदि । इनके अतिरिक्त गगा महोत्सव–वाराणसी, उत्तर प्रदेश पर्व, वृन्दावन शरदोत्सव – वृन्दावन, रामायण मेला – अयोध्या, नेहरू शताब्दी समारोह – लखनऊ, अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन आदि अनेक शासकीय स्तर पर भी आयोजित कार्यक्रमों में अपनी गायन प्रतिभा द्वारा श्रोताओं से सराहना प्राप्त की है ।

उत्तर भारतीय संगीत को समर्पित श्रीमती स्वतन्त्र शर्मा लेखन एव गायन के अतिरिक्त भी अन्य अनेक माध्यमों से इस पद्धति के प्रचार–प्रसार तथा विकास मे सतत् जुटी हुई हैं । वह अनेक सस्थाओं की सक्रिय सदस्या के रूप मे यथा विश्वविद्यालय केन्द्रीय सांस्कृतिक समिति की सदस्या, महिला सलाहकार बोर्ड, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सास्कृतिक इन्चार्ज, इण्डियन म्यूजिक कांग्रेस, बडे रामदास स्मारक समिति की उपाध्यक्ष, म्यूजिक फोरम इलाहाबाद की अध्यक्ष, 'सकल्प' इलाहाबाद की प्रकाशन मंत्री, त्रिवेंणी महोत्सव समिति की सांस्कृतिक मंत्री, केन्द्रीय सास्कृतिक समिति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक व साहित्य मंत्री पद से निरन्तर अपनी बहुमूल्य संवायें संगीत जगत को प्रेषित कर रही है । अनेक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदो पर कार्यरत रहते हुए यथा सांस्कृतिक कार्य अनुभाग, उत्तर प्रदेश सरकार में दो वर्ष तक सहायक निदेशक 'संगीत' के पद पर राष्ट्रीय स्तर के संगीत, नृत्य व नाटक के कार्यक्रम आयोजित किये, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र – भारत सरकार में लगभग चार वर्षों तक कार्यक्रम अधिकारी व प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य करते हुए राष्ट्रीय स्तर के संगीत, नृत्य व नाटक के कार्यक्रम आयोजित करने के साथ–साथ भारत सरकार की अन्य योजनाओं जैसे – लेक्चर कम डिमॉन्सट्रेशन, अनुदान सम्बन्धी कार्य तथा सर्वे आदि अनेक उत्तरदायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह, सांस्कृतिक कार्य अनुभाग – उत्तर प्रदेश सरकार में कार्यरत रहते हुए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, ललित कला अकादमी, भारतेन्दु नाटक अकादमी जैसी महत्वपूर्ण सांगीतिक संस्थाओ के प्रशासनिक कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्वहन किया है ।

देश के विभिन्न शहरों में समय–समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न सगीत कार्यशालायें तथा सेमिनारों में ऑब्जर्वर, रिसोर्स परसन, संयोजक, मंच–संचालक होने के साथ ही अपने लेख भी पढे हैं जैसे – मुम्बई में सगीत रिसर्च अकादमी एवं एन0सी0पी0ए0 के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, सागर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में आयोजित त्रिदिवसीय सेमिनार, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय एवं सांस्कृतिक कार्य अनुभाग, उ0प्र0 सरकार के संयुक्त

तत्वावधान मे आयोजित सात दिवसीय सगीत कार्यशाला, त्रिवेणी महोत्सव, जिला प्रशासन, इलाहाबाद द्वारा आयोजित सेमिनार, प0 बडे रामदास स्मारक समिति, वाराणसी द्वारा आयोजित सेमिनार, अलाउद्दीन संगीत अकादमी द्वारा आयोजित 'सगीत की दूरवर्ती शिक्षा' विषय पर आयोजित सेमिनार इत्यादि । श्रीमती स्वतन्त्र शर्मा स्वयं भी अनेक सास्कृतिक कार्यक्रमो, सागीतिक सेमिनार, कार्यशालाओं आदि का विभिन्न स्तरों पर आयोजन करती रही है जिससे संगीत जगत से जुडे लोग निरन्तर लाभान्वित और उत्साहित होते रहे हैं ।

प्रखर बुद्धि एवं सागीतिक गुणों की धनी डॉ0 स्वतन्त्र शर्मा के मार्गदर्शन में अनेक सगीत शोधरत विद्यार्थी अपना-अपना शोध कार्य पूर्ण कर चुके है तथा वर्तमान समय में भी अनेक विद्यार्थी शोधरत हैं । श्री शर्मा युवा संगीत साधिकाओं को सदैव प्रोत्साहित करती रहती हैं । बहुआयामी सांगीतिक सेवाओं हेतु इन्हें समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है – जिला प्रशासन, मेरठ द्वारा वर्ष 1997, विकास प्राधिकरण, जिला प्रशासन, इलाहाबाद, मदन मोहन मालवीय सोसाइटी, इलाहाबाद, महाराष्ट्र मंडल सागर (म0प्र0), समन्वय, इलाहाबाद द्वारा 'चेतना श्री' तथा भारतीय साहित्य सुधा सस्थान द्वारा मानस उपाधि आदि ।

श्रीमती शर्मा के सहयोगी तथा अपनत्व भरे स्वभाव से अनेक संगीत प्रेमी हमेशा लाभान्वित होते रहते हैं और इस प्रकार यह उत्तर भारतीय संगीत के विकास, प्रचार तथा प्रसार में बहु आयामी रूप से निरन्तर महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है ।

डॉ0 वीणा विश्वरूप

गायन के साथ ही साथ अपने लेखन के माध्यम से भी संगीत जगत को समृद्धशाली बनाने में योगदान देने वाली महिला संगीतज्ञों मे डॉ0 वीणा विश्वरूप का आदरणीय स्थान है । आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की नियमित, उच्च श्रेणी की कलाकार डॉ0 विश्वरूप ने संगीत विषय मे महत्वपूर्ण शोध प्रस्तुत करके डॉक्टर ऑफ म्यूजिक की उपाधि धारण की है । इन्होंने संगीत जगत ने अपनी स्वरचित बंदिशों का एक संग्रह, 'नाद–वन्दना–1' प्रस्तुत कर सगीत को समृद्ध करने मे अपना बहुमूल्य योगदान दिया है । इन्होंने अपनी इस पुस्तक मे उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित एवं लोकप्रिय रांगों में अनेक सुन्दर बंदिशो को प्रस्तुत किया है जो वास्तव में कलाकारो के कोष मे बहुमूल्य रत्नों के समान सिद्ध होगी ।

लेखनी के माध्यम से अपना योगदान देने के अतिरिक्त सुमधुर गायन के द्वारा भी उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के प्रचार–प्रसार में निरन्तर योगदान दे रही हैं । इन्होंने गायन की शिक्षा सुश्री मीरा राव, डॉ0 ए0सी0 चौबे, डॉ0 एम0आर0 गौतम, श्रीमती बागेश्वरी देवी, एव प0 श्री अभय नारायण मल्लिक जैसे उच्चकोटि के सगीतज्ञो से प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में पं0 बबन राव हलदडकर जी के कुशल मार्ग निर्देशन में संगीत साधनारत हैं । सम्प्रति इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ के गायन विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापिका के पद से अपनी कला एवं सागीतिक ज्ञान संगीत जगत की युवा पीढी को हस्तान्तरित करते हुए, सगीत के सुदृढ भविष्य की नींव बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान कर रही है ।

डॉ0 सुनन्दा पाठक

कुशाग्र बुद्धिमति एव प्रतिभासम्पन्न डॉ0 सुनन्दा पाठक की संगीत के प्रति तीव्र अभिरुचि को देखते हुए, अत्यन्त बाल्यावस्था से ही उनकी सगीत शिक्षा प्रारम्भ करा दी गई । मात्र चौदह वर्ष की आयु में 'संगीत विशारद' की परीक्षा उत्तीण करने वाली इन संगीतज्ञ ने सन् 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय से बी0ए0 ऑनर्स तथा सन् 1975 में एम0ए0 की परिक्षायें प्रथम स्थान मे उत्तीर्ण कर, स्वर्ण पदक ग्रहण किया । संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सीनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त करते हुए संगी विषय से पी0एच0डी0 की उपाधिक भी ग्रहण की । इनके शोध–प्रबन्ध की परीक्षकों ने मुक्त कंठ से सराहना की ।

डॉ0 सुनन्दा पाठक के विभिन्न सागीतिक विषयो पर प्रकाश डालते हुये अनेक लेख पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित होते रहते है 'हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एव विकास', डॉ0 सुनन्दा पाठक द्वारा लिखित यह ग्रन्थ उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में राग की उत्पत्ति एव उसके क्रमशः विकास पर विस्तृत तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारियॉ प्रदाने करता है । राग ही वह केन्द्र है जिसके आधार पर संगीत के समस्त तत्वों का विकास होता है । प्रस्तुत ग्रन्थ हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में शताब्दियों से प्रचलित 'राग' के विषय में मूल रूप से किया हुआ सर्वांगीण अध्ययन है । राग की उत्पत्ति तथा ऐतिहासिक विकास के सम्बन्ध में प्रचलित मान्यताओं एवं भ्रान्तियो का समाधान करते हुए प्रामाणिक मत प्रस्तुत करने का सुसबद्ध प्रयत्न लेखिका ने इसमे किया है । जो इस क्षेत्र में प्रथम प्रयास है । राग से सम्बन्धित सभी तत्वों, नाद, श्रुति, सुर, अलंकार, स्थाय, गमक, ग्राम, मूर्च्छना, जाति आदि का पूर्ण रूप से किया हुआ मौलिक अध्ययन है । राग का प्राचीन रूप, राग गायन विधि, राग गायन में विभिन्न गायनशैलियो जैसे ध्रुपद, ख्याल आदि का आगमन तथा राग से सम्बन्धित अन्य सभी विषयों के लिए वैदिक काल से आधुनिक काल तक प्राप्त संस्कृत ग्रन्थों का लेखिका द्वारा मूल रूप से अध यन किया गया है तथा तर्कपूर्ण विवेचना करते हुए निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचा

गया है । इस गूढ़ कार्य के लिए डॉ0 सुनन्दा ने कई दुर्लभ ग्रन्थ तथा पांडुलिपियों का अध्ययन किया है । वस्तुतः रागविषयक यह पुस्तक सगीत जगत के लिए वरदान स्वरूप है ।

संगीत शास्त्र के प्रभुत्व के साथ–साथ डॉ0 सुनन्दा पाठक संगीत के प्रायोगिक प्रदर्शन के क्षेत्र में भी समान निपुण हैं । आकाशवाणी दिल्ली की शास्त्रीय संगीत की नियमित कलाकार होने के साथ ही समय–समय पर आयोजित होने वाली विभिन्न संगीत सभाओं मे अपने कला का सफल प्रस्तुतिकरण करती हैं । इनके कार्यक्रम की टाइम्स ऑफ इण्डिया, नव भारत टाइम्स, नागपुर टाइम्स आदि प्रमुख अखबारो के संगीत समीक्षकों ने भूरि–भूरि प्रशसा लिखी है । शुद्ध शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त संगीत के उपशास्त्रीय रूप, मराठी नाट्यसगीत, अभंग, भक्ति गीत, भाव गीत एवं भजन प्रस्तुत करने में भी कुशल हैं ।

सम्प्रति डॉ0 सुनन्दा पाठक दिल्ली विश्वविद्यालय के माता सुन्दरी कालेज में संगीत विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका के पद से अपनी सेवायें संगीत जगत को अर्पित कर रही हैं ।

अध्याय – षष्टम्

महिला कलाकारों का संगीत संघर्ष एवं समस्याएँ

महिला कलाकारों का संगीत संघर्ष एवं समस्याएँ

हमारा इतिहास सुसंस्कृत महिलाओं की कलाकृतियो से परिपूर्ण है । क्षेत्र चाहे वीरता का हो या कला का, महिलाओं ने उसमें प्रशंसनीय योगदान दिया है । कला–पुत्रियो मे जीवन के संकटों को झेलने की अदम्य शक्ति होती है । अत्याचारो और मजबूरियों से दबी हुयी महिला जीवन मे यदि कुछ हासिल कर लेती है, तो वह उसके लिए सचमुच ही एक महान उपलब्धि होती है । वैदिक काल मे अवश्य ही नारी को सम्मानित स्थान प्राप्त था और उसकी शिक्षा–दिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था थी किन्तु उसके बाद से आज तक नारी के लिए संगीत सीखना एक दुष्कर तपस्या ही सिद्ध होती रही है चाहे वह गुलाम भारत की महिला हो या स्वतन्त्र भारत की । समस्याओ के रूप मे कुछ परिवर्तन अवश्य आता रहा है किन्तु वे समाप्त नहीं होती । यूँ तो सगीत–साधना स्वत. ही एक कठिन साध ाना है जिसे करना सभी के लिए सम्भव नही है । कहा ही गया है कि, 'सौ बात बने है तो एक बने', अर्थात् ईश्वर प्रदत्त गुण, सीखने की लालसा, लगन, सुयोग्य गुरू का वरदहस्त, समुचित वातावरण, पारिवारिक सहयोग आदि सैकडों तत्वो के सहयोग से एक कलाकार बन सकता है उस पर भी यदि साधक 'नारी' है तो समस्याओं की एक लम्बी सूची और भी जुड जाती है । गुलाम भारत मे जहॉ पर्दा प्रथा होने तथा सगीत मे विलासता और श्रृंगारिता का समावेश होने से उसे सभ्य समाज मे 'तुच्छ' समझे जाने के कारण महिलाएँ संगीत शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थी वही आधुनिक समाज में भी संस्थागत अथवा विद्यालयीन शिक्षण–विधि से संगीत का प्रचार तो खूब हुआ और यह जन–सामान्य को सीखने हेतु सुलभ भी हो गया किन्तु इस सगीत का स्तर वह नहीं जो एक कलाकार को जन्म दे सके । कलाकार बनने के लिए आज भी गुरू–शिष्य परम्परा कायम है और इस परम्परा में सगीत सीखने के लिए अन्तहीन समस्याएँ हैं ।

संगीत के क्षेत्र में नारियों का यथोचित योगदान रहा है, तथापि इनमें सामान्य श्रेणी की महिलाओं की संख्या कम ही रही हैं । संगीत के क्षेत्र में अधिकांशत. उन्हीं महिलाओं का योगदान रहा है जिन्हें संगीत विरासत में प्राप्त हुआ है और उन्हे यह विद्या हासिल करने के लिए किसी अस्वाभाविक कठिनाई का सामना नहीं करना पडा । संगीत

एक श्रव्य कला एव गुरूमुखी विद्या है । इसके लिए गुरू–शिष्य का व्यक्तिगत सम्बन्ध व कदम–कदम पर गुरू का मार्गदर्शन अनिवार्य है । प्रतिदिन घंटो गुरू की देख–रेख मे अभ्यास, कुशल व्यवहार व गुरू के प्रति असीम श्रद्धा भाव रखकर पायी जाने वाली यह कला विद्यालयी शिक्षा में चालीस या पचास मिनट की कक्षा मे सामूहिक रूप से प्राप्त करना असम्भव है । संगीत की सही शिक्षा के लिए जब तक गुरू की शरण में बैठकर 'गुर' न सीखा जाये, तब इनके गहराइयो मे उतर पाना मुमकिन नही । लेकिन क्या आज के युग में सगीत सीखने की इच्छुक सामान्य श्रेणी की महिलाओ के लिए ऐसा कर पाना सहज–सम्भव है ? संगीत के मर्म तक पहुॅचने के लिए अथवा गुरू की अपार कृपा का पात्र बनने के लिए महिला शिक्षार्थियो को जिन अनगिनत समस्याओ का सामना करना पडता वह पुरूष साधको को नही । आज के सामाजिक ढॉचे में जहॉ प्रतिदिन हत्यायें, बलात्कार व बम विस्फोट के समाचार, समाचार पत्रों के अनवरत् शीर्षक बने हुए हैं, वहॉ कोई माता–पिता अपनी बेटियों को घन्टों घर से बाहर रहकर संगीत शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नही दे सकते । सम्भवतः कुछ एक महिलाओं को छोड़कर, जिनके घरो में ही संगीत सीखने की व्यवस्था होती है या हो सकती है, सामान्य परिवार की महिलाऍ संगीत सीखने की तीव्र इच्छा होते हुए भी इस विधा से वंचित रह जाती है । कारण है आज की सामाजिक परिस्थियों मे यह सम्भव नहीं हो सकता ।

सगीत की शिक्षा के लिए किसी अच्छे व उदार चित्त गुरू का मिलना भाग्य से ही होता है और विशेषकर किसी महिला को उदार चित्त गुरू का आशीर्वाद प्राप्त होना तो पूर्व जन्म के अच्छे कर्मो की सूरत में ही संभव है । गुरू का कुशल अध्यापन, प्रोत्साहन व अथाह प्रेम सदैव शिष्य का पथ प्रदर्शक रहता है व शिष्य भी अपने कुशल व्यवहार, अनवरत् साधना व गुरू के प्रति आसीम श्रद्धा भाव से ही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं । परन्तु आज जन–सामान्य में बढ़ती हुई तंग दिली, संकीर्ण दृष्टिकोण व अविश्वसनीयता की भॉति ही कलाकार भी अपनी वह छवि कायम नहीं रख पा रहा है जिसके लिए वह पूज्य माना जाता है । आज दुःख के साथ यह कहना पडता है कि अब कलाकारों का वह आदरणीय तथा अद्वितीय स्थान धुॅधला पड़ चुका है जिसके चलते महिला साधिकाओं को संगीत शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है ।

महिला साधिकाओं की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए मेरा उद्देश्य किसी

भी सच्चे गुरू का अपमान करना कदापि नहीं हैं । मन में किसी भी प्रकार की विपरीत भावनाओ के रहते हुए किसी कला का विकास सम्भव नही हो सकता । सगीत कला के जन–सामान्य और विशेषकर महिलाओं मे प्रचार–प्रसार हेतु ऐसी तुच्छ भावनाओ से गुरूजनो को ऊपर उठना होगा तथा उन्हें उदार चित्त होकर आधुनिक युग मे प्राप्त सुविधाओ का सद्उपयोग करके इस दिव्य कला को प्रगतिशील बनाना होगा ।

सगीत साधना के मार्ग में उपरोक्त मुख्य समस्या के अतिरिक्त भी अनेक बाधाएँ आती है । नारी के जीवन की सबसे बडी विडम्बना यह है कि उसके जीवन का आधा हिस्सा एक परिवार में और आधा दूसरे परिवार में बीतता है । अर्थात् जन्म से युवा अवस्था तक वह पितृ कुल में पलती है और विवाह के पश्चात् शेष जीवन पति गृह में व्यतीत करती है । पिता के घर में लडकी को सदैव इस प्रकार शिक्षा दी जाती है कि पति गृह मे उसे सामंजस्य बिठाने में तकलीफ न हो अतः यदि उसे संगीत शिक्षा दी भी जाती है तो मंच–प्रदर्शन का समय आने पर उसे यह कहकर रोक दिया जाता है कि शायद ससुराल वाले इसे पसद न करें कि उनकी बहू मंच पर भीड के सम्मुख गाती–बजाती है । संगीत शिक्षा भी बहुधा यही सोचकर दिलायी जाती हैं कि लडकी को गाना आता है, यह गुण बताने से वर पक्ष पर अच्छा प्रभाव पडेगा । यदि कहीं पितृ गृह में लडकी को संगीत क्षेत्र में प्रोत्साहन मिला भी तो विवाह के पश्चात उसका सगीत पूर्णतः ससुराल पक्ष की इच्छा पर निर्भर हो जाता है । परिवार की सभी जिम्मेदारी को निभाते हुए भी महिला का 'कलाकार रूप' परिवार वालों को यदि नापसन्द है तो वह नित नये विवादो को ही जन्म देता है जिससे थक हार कर अततः नारी संगीत की दुनिया से मुँह मोड लेती है ।

आज के प्रगतिशील समाज में नारी के दायित्व और भी अधिक बढ़ गये हैं । पहले जहाँ महिलाएँ घर के अन्दर की ही जिम्मेदारियाँ निभाती थीं वहीं आज के भौतिकतावादी युग में महिला धनार्जन के क्षेत्र में भी पुरूषो को बराबर सहयोग देती है । गृहस्थी की पूर्ण ज़िम्मेदारी, कार्य क्षेत्र में आफिस या सम्बन्धित क्षेत्र की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी के साथ संगीत की कठिन साधना वास्तव में दुष्कर कार्य है । चौवीसों घण्टे की व्यस्त दिनचर्या में स्त्री कब संगींत सीखने के लिए समय निकाले, यह भी मुश्किल समस्या है । उसके बाद भी सामाजिक बन्धन कि, देर रात तक बाहर नहीं रहना, आदि तो हैं हीं । महिला यदि

किसी संस्था मं सगीत सीख रहीं है तो फिर भी उसका समय निर्धारित है कि अमुक समय से इतने समय तक कक्षा चलेगी किन्तु यदि वह व्यक्तिगत रूप से किसी गुरू से शिक्षा प्राप्त कर रही है तो उसे गुरू के समय के अनुरूप ही खुद का सामजस्य बिठाना पडता है । विद्यालयी शिक्षा में चालीस–पचास मिनट की सामूहिक कक्षा में संगीत का वास्तविक ज्ञान कितना होता है और क्या महिला उतने ज्ञान से संतुष्ट है, यह भी विचारणीय तथ्य है ।

अनगिनत, अन्तहीन समस्याओं को झेलते हुए, अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए अनेक महिलाओं ने संगीत जगत में अभूतपूर्व ख्याति एव प्रतिष्ठा अर्जित की है । जीवन के तमाम संघर्षो के अनुरूप 'मीराबाई' के सागीतिक योगदान को भला कौन भूल सकता है ? प्रसिद्ध ठुमरी गायिका स्व0 रसूलनबाई बीस वर्ष की अवस्था में विवाहित हो गयीं और विवाह के अवसर पर उन्हें यह शपथ लेनी पड़ी थी कि वे अपनी किसी भी पुत्री को गायन, वादन या नृत्य की शिक्षा नहीं देगी और स्वयं पति व्रत धर्म का पूर्ण पालन करेंगी किन्तु विवाह के पश्चात् भी सगीत मे उनकी रूचि कम नहीं हुयी बल्कि उत्तरोत्तर बढती गयी । उन्होने कितनी ही रातें रियाज मं गुजार दी । बिना खाये–पिये घण्टो साधना के बल पर ही ठुमरी गायन में सिद्धि प्राप्त की । सघर्षो में भी शिष्टता नहीं छोडी । सगीत कला उनके जीवन का प्रधान अग बनी रही । सादा भेष–भूषा में सामान्य जीवन यापन करते हुए प्रसिद्ध गायिका 'पद्मावती गोखले' ने जहॉ एक ओर ख्याल गायन की मौलिकता के लिए संघर्षो की शर्त स्वीकार की वहीं दूसरी ओर श्रीमती मालविका कानन एवं श्रीमती लक्ष्मीशंकर ने गृहस्थ जीवन की शर्तो का अक्षरशः पालन करते हुए शास्त्रीय संगीत को समृद्धि प्रदान की । क्या कोई बेगम अख्तर के त्याग और तपस्या को भूल सकता है, जिन्होनें जीवन की सारी पीड़ाओं को सहते हुए गजल गायन को एक नयी जिन्दगी दी । अपने प्रारम्भिव जीवन में भीषण गरीबी की मार को सहते हुए, एक बडे परिवार का आर्थिक बोझ ढोते हुए भी संगीत में अपार आस्था एवं साहज के बल पर तथा अपनी संगीत साधना में विश्वास के बल पर सुप्रसिद्ध पार्श्व गायिका लता मंगेशकर संगीत जगत में विश्व–विख्यात हो गयी । जीवन में अभाव ग्रस्त रहते हुए भी संगीत की चोटी पर पहुँचने की ऐसी मिसाल शायद दूसरी मिले । खोजने पर ऐसी कितनी ही मिसालें मिलेगीं जिनसे हमारी संगीत–पीढियॉ युगों–युगों तक प्रभावित होती रहेंगी । आज भी अनेक महिला साधिकाऍ अपने–अपने जीवन की तमाम समस्याओं का नित्य सामना करते हुए भी सघन साधनारत हैं । वास्तव

में वे सभी महिला सगीतज्ञ धन्यवाद की पात्र हैं जो अपने जीवन की समस्याओं को झेलते हुए भी संगीत को समृद्धशाली बनाने मे पूर्ण आस्था एवं विश्वास से जुटी हैं । यह सभी महिलाकार युगों–युगों तक सगीत साधको की आदर्श रहेंगी ।

निष्कर्ष एवं समालोचना

निष्कर्ष एवं समालोचना

आधुनिक युग मे हिन्दुस्तानी सगीत का क्षेत्र उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है । पिछली कई शताब्दियो से हिन्दुस्तानी संगीत का विकास तथा पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार किया है और इस सगीत के प्रशंसको की संख्या करोडों मे पहुँच चुकी है । इन सबका श्रेय निश्चित रूप से उन कलाकारों को जाता है जिन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन सगीत को समर्पित करके अपनी असाधारण साधना और प्रतिभा के बल पर उत्तर भारतीय संगीत को पूरे विश्व में सम्मानित तथा लोकप्रिय बनाया है । इसी सन्दर्भ में यह तथ्य भी ध्रुव सत्य है कि उन श्रद्धेय कलाकारों में महिला कलाकारों का बडा वर्ग सम्मिलित है ।

इन महिला कलाकारो ने अपने – अपने निजी जीवन में तमाम समस्याओं तथा संगीत साधना में आने वाली बाधाओं का साहस पूर्वक सामना करते हुए उत्तर भारतीय संगीत को समृद्धिशील बनाने में तथा उसे जनप्रिय बनाने मे अपनी अत्यन्त अहम् भूमिका निभायी है । यही नहीं मुगल शासन काल मे एक समय ऐसा भी आया था जब हमारे सगीत में श्रंगारिकता और विलासता का इतना प्रचुन समावेश हो गया था कि उसकी पवित्रता लगभग खो चुकी थी । ऐसे सगीत को सभ्य समाज में स्त्रियो क लिए तो क्या पुरूषों के लिए भी वर्जित मान लिया गया था । सगीत पतनोन्मुखी हो चुका था । सगीत के उस सक्रमण काल में गाने-नाचने वाली वह महिला कलाकार थीं, जिन्हें समाज अवश्य ही हेय दृष्टि से देखता था किन्तु वर्षों तक संगीत को उन्हीं ने संजोया और आने वाली पीढी को सौंपा । सगीत जगत महिला वर्ग के इतने बडे योगदान से कभी भी उऋण नहीं हो सकता ।

अपने इस शोध प्रबंध में मैंने हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में उसके प्रारम्भ से लेकर आज तक के महिला संगीतकारों के योगदानों की चर्चा की है । यह सत्य है कि प्राचीनकाल में हमारे देश में स्त्रियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था

किन्तु धीरे–धीरे विदेशी आक्रमणों, उनके शासन तथा समाज में फैलती अनेक कुरीतियों के कारण उनकी स्थिति बद से बदतर होती गयी । समाज ने उसके ऊपर इतने बन्धन लगा दिये कि नारी के विषय में 'अबला तेरी यही कहानी', जैसी कविताएँ लिखी जाने लगीं । जहाँ वह अपने मौलिक अधिकारों का हनन भी सहती रही वहीं जीवन की उन तमाम समस्याओं को, जिनसे पुरूष सदैव अछूते ही रहे, झेलते हुए, ईश्वर प्रदत्त मधुर कण्ठ का सदुपयोग करते हुए संगीत साधना करती रही और संगीत जगत को समृद्धिशाली बनाने में सदैव अपना योगदान देती रही ।

इस शोध प्रबन्ध में मीराबाई से लेकर वर्तमान नवोदित गायिकाओं तक सांगीतिक जीवन का उल्लेख किया है । संगीत जगत में तो अनगिनत गायिकाएँ हैं जिन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत को विकसित करने में अपना–अपना अमूल्य योगदान दिया हे किन्तु उन सभी के विषय में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम न हो सकी तथापि अपनी क्षमता के अनुरूप मैंने जितना भी संभव हो सका उतनी गायिकाओं का विवरण उल्लिखित किया है । साधिकाओं में चाहे वह सरस्वती देवी हों, पन्नाबाई, राजेश्वरी देवी, असगरीबाई, रसूलनबाई हों या गिरिजा देवी, सविता देवी, किशोरी अमोनकर, सुमति मुटाटकर,हो या फिर अश्विनी भिड़े, शुभा मुद्‌गल, शान्ति शर्मा या मंजरी असनारे हों, सभी के जीवन पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि उन्होनें अपने–अपने जीवन में संगीत साधना के लिए किन–किन परिस्थितियों तथा समस्याओं का सामना किया । अपने जीवन की व्यक्तिगत अनेक दुरूह परिस्थितियों को सहते हुए भी साधना से मुँह नहीं मोडा और साधना भी कोई सहज नहीं रही । हिन्दुस्तानी संगीत की समस्त गायन शैली चाहे वह ध्रुवपद–धमार जैसी क्लिष्ट, दमदार तथा श्रमसाध्य गायन शैली हो या ख्याल शैली और या फिर नाजुक, लोचदार ठुमरी गायन शैली हो और या क्लिष्ट तानों से भरी अत्यधिक तैयारी वाली गायन शैली टप्पा ही क्यों न हों, में गायिकाओं ने अपनी प्रतिभा तथा साधना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया हैं । उन सगीतज्ञों का विवरण एवं उनके द्वारा लिखित सगीत ग्रन्थों और पुस्तकों का सक्षिप्त ब्यौरा भी मैंने दिया है जिन्होनें अपनी प्रखर बुद्धि तथा गहरी सांगीतिक

समझा के द्वारा संगीत जगत को अपने ग्रन्थ के रूप में स्थायी सौगात दी है, जो आने वाली पीढी का पथ प्रदर्शन करेंगे ।

'महिला कलाकारों की संगीत संघर्ष एवं समस्याएँ', अध्ययन के अर्न्तगत मैंने स्त्री संगीतज्ञ के संगीत साधना में आने वाली समस्याओं का विवरण प्रस्तुत किया है । नारी की अनेक ऐसी समस्याएँ हैं, जो सिर्फ इसलिए हैं कि वह नारी है । अपनी 'नारी समस्याओं' को झेलने के साथ–साथ स्त्री उन बाधाओं का सामना भी करती है जिसका सामना पुरूष साधक करते हैं अतः नारी तो दोहरी समस्याओं में जकड़ी रहती है । ऐसे में उसका सांगीतिक योगदान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है । सम्भव है कि अपनी अनगिनत समस्याओं को सहते रहने के कारण नारी कण्ठ में दर्द का वह रूप प्रखर हो उठता है जो उसके गायन को कहीं अधिक मर्मस्पर्शी बनाता है ।

अपने शोध विषय के चयन तथा लेखन में मेरा उत्तर भारतीय संगीत में महिला कलाकारों के योगदानों को उजागर करने का ही उद्देश्य निहित रहा है । मैंने उन अनेक महान महिला कलाकारों के जीवन का उल्लेख किया है जिनके जीवन की कहानी वर्तमान संगीत साधिकाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर उन्हें साधना हेतु उत्साहित करती हैं । यह मेरा स्वयं का अनुभव रहा है कि आज के युग में संगीत से आकर्षित होकर कई लडकियाँ इस क्षेत्र में पदार्पण तो अवश्य करती हैं किन्तु थोडे ही समय बाद कठिन साधना से घबराकर या साधना मार्ग में आने वाली समस्याओं से डर कर संगीत से मुँह मोड लेती हैं । मैंने अपने शोध प्रबन्ध में उन अनेक महिला कलाकारों का विस्तृत विवरण देने की चेष्टा की जिन्होंने अपने–अपने जीवन में ऐसी न जाने कितनी ही समस्याओं का साहस तथा धैर्य से सामना करते हुए उच्चस्तरीय गायिका बनी हैं ।

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुझे इस बात की,बहुत कमी महसूस हुई है कि कोई भी पुस्तक या ग्रन्थ महिला सगीतज्ञों के योगदानों को समाज के

सम्मुख रखने के उद्देश्य से प्रकाशित नहीं किया गया है । मेरी हार्दिक इच्छा है कि सभी महिला सगीतज्ञ अपने पूर्ण परिचय के साथ सगीत प्रमियों के बीच जानी जाये । मैं चाहती हूँ कि मेरा यह शोध प्रबन्ध भविष्य में पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो जिससे उसे पढकर युवा सगीत साधिकाओं में सगीत के क्षेत्र में कुछ कर गुज़रने का जोश उत्पन्न हो तथा समाज उन महान महिला संगीतज्ञों के अमूल्य योगदानों को समझे । अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मेरा यह शोध प्रबन्ध, एक प्रयास है ।